अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।

कहया मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यो।।

कलस हिन्दुस्तानी २१/१६

अर्थात् मैं अपने परमधाम के किसी भी साथ को अकेला नहीं छोडूंगा। सबको मैं अपनी मेहर के नीचे रखूंगा। जिस साथ को मेरी पहचान हो जाएगी, वह मुझसे कभी अलग नहीं होगा। जो मैंने वाणी में जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुलासा कर दिया। अब सुन्दरसाथ उसके विरूद्ध नहीं चलेगा और मैं भी सुन्दरसाथ जो कुछ चाहेगा, उसको पूरा करूंगा। आज लोग वाणी का मंथन नहीं करते, क्योंकि आज दिन तक (३०० वर्षों से) रूमालों में लपेटकर हमें उस प्राणनाथ जी के स्वरूप से जुदा कर अछूता बनाया गया और सूतक का डर दिखाने से सुन्दर साथ इतने भटक गए कि फिर त्रैगुण फांस, कर्मकाण्ड, सांसारिक देवी–देवताओं का पूजन और श्री प्राणनाथ जी की वाणी से विमुख होकर चलने को ही उन्होंने अपना धर्म बना लिया। ऐसे गुरूओं को मानना या झुकना अपने–अपने सोचने की बात है।

साथ में ऊपर से और डराया गया कि पहले वाणी की तालीम लो। इस खुदाई इल्म की तालीम तो खुदा जिसके तन में बैठकर दें, उसी को प्राप्त होती हैं।

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।

ना सीखे सिखाएं ना सोहबतें, हक मेहेरें पावत।।

सिनगार ४/१२

स्वयं श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि इस कुलजम स्वरूप की वाणी के गुझ भेद श्री राजजी महाराज की मेहर जिस पर हो उसको ही मालूम होते हैं। यह सीखने से, तालीम लेने या गुरूओं की सेवा करने से ये प्राप्त नहीं होती।

महामत कहें ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाएं आप खसम।।

सागर प्र० १३, चौ० ५३

आप श्री महामति जी कहते हैं कि परमधाम की निज बुद्धि का ज्ञान परमधाम की ऐसी कुंजी है, धनी जिसे मोमिनों के दिल में बैठकर स्वयं पढ़ा

Nijanand App

रहे है, क्योंकि इस ज्ञान को आज दिन तक न किसी ने समझा है और न जाना है। धनी की इस मेहर को तुम देखो।

अब सवाल यह होता है कि श्रीराज जी हमारे दिल में कैसे बैठें? तो यह साधारण सी बात है कि जब हम किसी को जान लेते हैं, पहचान लेते हैं, घनिष्ठ सम्बन्ध कर लेते हैं तो वह हमारे दिल से कभी भी निकल नहीं सकता। उस पारब्रह्म श्री राजजी को अपने हृदय में बिठाने का सुगम रास्ता श्यामा महारानी ने तारतम के अन्दर स्पष्ट बता दिया है, जिसे हम केवल पढ़ते रहते हैं, परन्तु करते नहीं। आप ही सोचिए कि यदि किसी कागज पर हम लिख कर केवल कहते रहे कि मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मै तुमसे प्रेम करती हूं तो क्या वह हमारे दिल में आ जाएगा? आप कहोगे कि नहीं। तब क्या करना है?

''ए सत वाणी मथ के, लेऊं जो इनको सार।''

इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।।

पर हम तो केवल माला के मनके पर या नहाते समय ही पढ़ते है। कभी अपने दिल और आत्मा से नहीं पूछा कि क्या कभी वाणी खोल कर मंथन किया? जब तक मंथन नहीं करोगे, तब तक उस प्राणनाथ की पहचान नहीं होगी, और जब तक यह पहचान नहीं होगी कि वे मेरे धनी है और मैं उनकी अंगना हूं तब तक हमारे दिल में विरह की तड़प नहीं उठेगी। और जब विरह की तड़प आपके दिल में उठेगी, तब श्री प्राणनाथ तुरन्त आपके दिल में आकर विराजमान हो जाएंगे क्योंकि उन्होंने खुद कहा है कि–

मैं लिख्या है तुमको, जो एक करो मोहे साद।

तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।।

सिनगार २६/२३

जो रूहें तड़प तड़प कर याद करती हैं, पहचान कर अपने सम्बन्ध से पुकारती है तो धनी उन से कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

रेहे ना सकों मैं रूहों बिना, रूहें रहे ना सकें मुझ बिन।

जब पेहेचान होवे वाको, तब सहे ना बिछोहा खिन।।

खिलवत १५/५

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझसे दूर।

Nijanand App

परदा तूं ही करत है, अंतर न आड़े नूर।।

किरंतन १३२/५

ए मेरी आत्मा! तुम मुझे एक मनुष्य तन में बैठा देख कर यह समझती हो कि मैं मर चुका हूं। तुम मेरे लिए व्रत और उपवास करती फिरती हो। तुमने ही मुझसे परदा कर रखा है। मैं तो तुमसे एक पल के लिए भी जुदा नहीं हो सकता। स्वामी जी वाणी में कहते हैं–

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए।

पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए।।

खिलवत १६/३२

ए मेरी आत्माओं! हे मेरी रूहों! ए मेरे सुन्दर साथ जी! भला आप ही सोचो कि क्या कोई भी कार्य ऐसा है, जो पारब्रह्म अपने हुक्म से नहीं कर सकते, पर एक बात ऐसी मूल सम्बन्ध परमधाम से है कि वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द प्राणनाथ अपनी आत्माओं से कभी भी जुदा नहीं हो सकते। उनकी ताकत से बाहर है।

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि पारब्रह्म हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और इसाई सभी का है। उनके ज्ञान का सन्देश सभी भाषाओं में व्यक्त किया जा सकता है, किन्तु वह शब्दों से भी परे है। वह किसी विशेष जाति, सम्प्रदाय और भाषा से बन्धे हुए नहीं है।

अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द।

सब्दातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद।।

किरंतन प्र० १०७, चौ० ७

अक्षर और अक्षरातीत भी यहां के शब्दों में ही कहा जाता है, ऐसे शब्दातीत पारब्रह्म को भला यह हद की दुनियां कैसे पा सकती है?

श्री मुख वाणी के अनुसार आत्मा के अनादि, अखंड, मूलपति को ही "प्राणनाथ" कहते है इसी प्रकार "श्री राज" शब्द का अर्थ होता है–चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख (सिरदार) होना, राजा इत्यादि। इन लक्षणों के आधार पर पारब्रह्म को श्री राज जी कहते है। यद्यपि "राज" शब्द संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थों में है, किन्तु पारब्रह्म के नाम के रूप में केवल श्री मुखवाणी और बीतक साहिब में ही है। श्री मुख वाणी और बीतक साहिब के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मग्रन्थों में इस शब्द का प्रयोग पारब्रह्म से अलग दूसरे

Nijanand App

नामों और अर्थों में किया गया है। जब श्री इन्द्रावती जी के तन से वाणी अवतरित होने लगी, तो वाणी के अंदर धाम धनी ने स्वयं अपने मुखारविन्द से खुद को "श्री राज" कहा, इसलिए इस नाम पर संशय करने का प्रश्न ही नहीं होता। जब श्री राज जी ब्रज और रास की लीला में आए, तब उनका नाम श्री कृष्ण पड़ा। जब श्याम जी के मन्दिर में उन्होंने अपने आवेश स्वरूप से प्रगट होकर श्री देवचन्द्र जी को अपनी पहचान दी तब कहा कि–

"निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अछरातीत"।

श्री देवचन्द्र जी से अपना नाम "श्री कृष्ण" कहने का मुख्य कारण यह था कि श्री कृष्ण नाम से ही श्री राजजी ने ब्रज और रास में लीला की थी और उस समय तक के हिन्दू धर्म शास्त्रों (भागवत, पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र आदि) में श्री कृष्ण नाम से ही पारब्रह्म की पहचान थी। श्री देवचन्द्र जी भी इसी नाम के आधार पर अखंड गोलोक का ध्यान किया करते थे। बाल मुकुन्द और बांके बिहारी अखंड तो हैं, किन्तु अनादि नहीं है क्योंकि अनादि पदार्थ की कभी भी उत्पति नहीं होती है। बाल मुकुन्द और बांके बिहारी के तन पहले योगमाया में नहीं थे इसलिए अपनी पहचान कराते हुए श्री राजजी ने कहा कि इस योगमाया के ब्रह्माण्ड से परे अक्षर ब्रह्म है और उससे भी परे मैं अक्षरातीत हूं। यह तारतम है, जो हद से लेकर परमधाम की पहचान कराता है, किन्तु–

तारतम का जो तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार।।

क० हि० प्र० २३ चौ. ७२

खिलवत, परिकरमा, सागर और सिनगार यह चारों किताबें "तारतम का तारतम" है। जिसको धाम धनी ने श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विरामजान हो कर स्वयं कहा है। इन चारों किताबों में धनी ने परमधाम की वाहेदत, खिलवत, शोभा और श्रृंगार का खुलासा किया है, इसलिए ये चारों किताबें तारतम का भी तारतम कहलाती हैं। इन चारों किताबों में कहीं भी "श्री कृष्ण" शब्द नहीं है। कुलजम स्वरूप और बीतक साहिब में एक भी ऐसी चौपाई नहीं है, जिसमें यह लिखा हो कि मूल मिलावे में सिंहासन पर बैठे हुए श्री कृष्ण जी अपनी रूहों को यह माया का खेल दिखा रहे है, जबकि "श्री प्राणनाथ" और "श्री राज जी" का हर जगह वर्णन है।

Nijanand App

सुंदरबाई कहे अछरातीत से, खेल में आया साथ।

दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ।।

किरंतन प्र० ६४ चौ० ६

इस चौपाई की तरह कहीं भी श्री कृष्ण को खेल दिखाने वाला नहीं लिखा है। प्राणनाथ कोई व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि मूल मिलावे में विराजमान साक्षात् धाम धनी श्री राज जी ही श्री प्राणनाथ है। यद्यपि प्रकाश गुजराती प्रकरण ३३ चौपाई २३ में–

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सार तणों तारतम। कहा गया है, किन्तु इसका भाव यह है कि तारतम ज्ञान से योगमाया में स्थित श्री कृष्ण तथा उस परमधाम और श्रीराजजी के जाहिरी नाम अक्षरातीत श्री कृष्ण की हकीकत का पता चला, जो बिना तारतम के आज तक सम्भव नहीं हो सका था। प्रकाश हिन्दुस्तानी में इसी के समान अर्थ वाली चौपाई है–

अछरपार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र।

प्रकास हि० प्र० ३५ चौ० २७

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।

मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आंए ब्रह्म आतम सत।।

किरंतन प्र० ७६ चौ० १

अर्थात् अक्षर से परे अक्षरातीत के धाम की सभी लीलाओं का जाहिर होना ही जागनी का सार है।

आज दिन तक दुनियां जिस नाम के इन्तजार में थी कि उसके मिलने से अखण्ड मुक्ति मिलेगीं। वह मुक्ति देने वाली ब्रह्मसृष्टियां और भवसागर से जीवों को पार उतारने वाला पारब्रह्म का जाहिरी नाम (निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत) आ गया है, जिससे सारे ब्रह्माण्ड को ब्रह्मसृष्टि मुक्ति देगी।

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनों पे तो असल नाम।

दिल भी हकें अर्स कहया, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।

सिनगार २१/८४

दुनियां तो पारब्रह्म के लौकिक नाम "श्री कृष्ण" (अनादि अक्षरातीत) सुनने से आवागमन के चक्कर से छूट कर अखण्ड हो जायेगी परन्तु रूहों के पास

Nijanand App

परमधाम वाला असल नाम "श्री राज श्यामा जी" है। इन्हीं मोमिनों के दिल को राज जी का अर्श कहा है, जिसकी गवाही कुरान देता है।

अपना धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निजधाम। *प्रगटवाणी*

श्री प्राणनाथ जी के मुखारविन्द से आवेश द्वारा जो वाणी अवतरित होती थी, उसे लिखने का कार्य श्री उत्तम दास, श्री केशवदास आदि सुन्दर साथ किया करते थे। श्री मुकुन्ददास जी लिखने वालों में दरोगा थे। पन्ना जी में श्री प्राणनाथ जी के आगमन के समय तक की सभी किताबों (रास से किरंतन) में प्रत्येक किताब के प्रारम्भ में तारतम की पहली चौपाई–

निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अछरातीत।

सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

लिखी है। यह चौपाई श्री देवचन्द्र जी के तन से अवतरित हुई थी। जब पन्ना जी में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में लीला होने लगी, तो मुकुंददास जी को यह स्पष्ट विश्वास हो गया कि इस तन के अन्दर साक्षात् अक्षरातीत अपनी पांचो शक्तियों के साथ लीला कर रहे हैं। तब उनकी सहमति से खिलवत, परिकरमा, सागर और सिनगार आदि सभी किताबों के प्रारम्भ में "निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत" की जगह "निजनाम श्री जी साहेब जी, अनादि अछरातीत" लिखा जाने लगा। "स्वरूप साहब पधरावनी" नामक हस्तलिखित ग्रन्थ में यह सारा वृतान्त लिखा हुआ है। जो श्री छत्रसाल जी के समय में लिखा गया था और जो अभी भी श्री निजानन्द सम्प्रदाय की मुख्य पुरियों में उपलब्ध है।

श्री जी कोई व्यक्ति विशेष नहीं हैं, बल्कि धाम धनी श्री सजजी को ही 'श्री जी' कहा गया है।

लई तारतम अजवालूं सार, वली श्री जी आव्या आवार।

जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे।।

प्रकास गुजराती प्र० ११, चौ० ६

अब फिर से धाम धनी (श्री जी) तारतम वाणी का ज्ञान लेकर आ गए हैं। धनी इतना भी सहन नहीं कर सकते कि किसी की कोई भी चाहना बाकी रह जाए। "वली श्री जी आव्या आ वार" से यह स्पष्ट है कि जो धामधनी श्री देवचन्द्र जी के तन में बैठकर परमधाम की चर्चा सुनाते थे, वे ही उस तन को छोड़कर

Nijanand App

श्री मेहेराज जी के तन में आ गए हैं। इसी भावार्थ की चौपाई प्रकास हिन्दुस्तानी में भी है–

ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार।
जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे।।

प्रकास हिन्दुस्तानी प्र० ११ चौ. ६

श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए।
थोडे दिन मां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए।

किरंतन प्र. १२४, चौ० ११

जसिया (एक सखी का नाम) मस्ती में भर कर उमंग से गाकर कहती है कि श्री जी (श्री राज जी, श्री प्राणनाथ जी) के चरणों की कृपा से थोड़े ही दिनों में इस तारतम वाणी का चौदह लोकों में फैलाव हो जायेगा।

इस पूरे प्रकरण में धाम धनी को वाला जी, श्री राज जी, श्री जी आदि नामों से कहा गया है। श्री का अर्थ शोभा युक्त भी होता है।

हब्से के प्रसंग के बाद श्री मेहराज जी के तन एवं श्री इन्द्रावती जी की आत्मा को श्री प्राणनाथ, श्री राजजी, श्री जी या जियावर धाम धनी कहलाने की शोभा मिली। उनके स्वरूप की वास्तविक पहचान कर लेने वाले किसी भी सुन्दर साथ ने उन्हें श्री मेहराज नहीं कहा। इस समीक्षा के आधार पर यदि यह कहा जाय कि "निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अक्षरातीत" और "निजनाम श्री प्राणनाथ जी, अनादि अक्षरातीत" के भावार्थ में कोई अन्तर नहीं है तो कोई अनुचित नहीं होगा, किन्तु किसी भी चौपाई के मूल रूप में परिवर्तन करना भी उचित नहीं है। बीतक साहब के अनेक प्रसंगों में श्री प्राणनाथ जी को श्री जी साहिब जी कहा गया है।

अपने साथ के लोग जो, ताके चित्त भए सनमुख।
दीदार श्री जी साहिब जी के, बड़ो जो पायो सुख।।

बीतक साहब ४६/३०

मिलाप श्री देवचन्द्र जी का, सोहबत श्री जी साहिब।
सम्वत सोलह सै सतासिय में, सो सत्रह सौ बारोत्तर लों अब।।

बीतक साहब १३/४७

दोनों स्वरूपों के मिलाप की यह चौपाई होने के कारण आदर के लिए यहां श्री मेहराज जी को ही श्री जी साहिब लिखा है। प्रगटन की चौपाई में जिस

Nijanand App

प्रकार "प्रगटे धनी श्री धाम" और तहां श्री राज प्रगटन" लिखा है, उसी प्रकार बीतक साहब १३/४७ में भी श्री जी साहिब लिखा है अन्यथा इस चौपाई से पहले और हब्से तक केवल श्री मेहेराज जी के ही नाम का प्रयोग हुआ है।

श्री कृष्ण जी और श्री प्राणनाथ जी की लीलाओं का अन्तर

१. श्री कृष्ण नाम गर्गाचार्य द्वारा रखा गया है भा० १०/८/१३। यद्यपि माहेश्वर तन्त्र और पुराण संहिता आदि ग्रन्थों में अक्षरातीत श्री कृष्ण के नाम से पारब्रह्म का वर्णन है, किन्तु इन ग्रन्थों का लिपिबद्ध रचना, काल महाभारत के बाद ही है। माहेश्वरतन्त्र अ० १० में १३ वें श्लोक तक और अ० ११ से अ० १३ के श्लोक १४ तक ब्रज लीला का वर्णन है तथा २६ वें अध्याय के ३७–४२ श्लोकों तक में बौद्ध धर्म का वर्णन है। महाभारत के लगभग दो हजार वर्ष बाद बौद्ध धर्म चला, जिससे महाभारत के पश्चात् ही माहेश्वर तन्त्र की रचना होनी स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है। इसी प्रकार पुराण संहिता में प्रथम अध्याय श्लोक १–११ श्लोक तक में विभिन्न पुराणों के श्लोकों की संख्या बताई गई है, जिससे स्पष्ट रूप से महाभारत के पश्चात् पुराण संहिता का भी रचना काल सिद्ध होता है।

१. श्री मुखवाणी में धाम धनी ने स्वयं अपने मुख से अपने को "प्राणनाथ" **के रूप में जाहिर किया। तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ। माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम।।**

प्र० हि० प्रगट वाणी चौ० ८२

अक्षरातीत धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने अपने श्री मुख से गांग जी भाई से कहा कि इस समय के संसार में खेल देखने के लिए आत्माएं आई हुई है। जिनको ढूंढ़ कर अपने साथ परमधाम ले जाने के लिए मैं स्वयं आया हूं।

लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।।

कि० प्र० ५२ चौ० २६

श्री राजजी ने अपने दोनों लौकिक नाम श्री कृष्ण और श्री देवचन्द्र को मिटाकर अपने पूर्ण स्वरूप प्राणनाथ के रूप में जाहिर हुए तथा अपने निज बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की वाहेदत, खिलवत, हकीकत एवं मारफत के ज्ञान की शोभा का रस सब को दिया।

सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक।।

Nijanand App

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि धाम धनी ने मुझे अपना सही नाम "प्राणनाथ" दिया तथा अपने नाम और पद (पारब्रह्म) की मोहोर भी दे दी इस दुनियां में पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द के रूप में मुझे जाहिर कर दिया।

दुनी नाम सुनत नरक छुटत, इनों पे तो असल नाम।

दिल भी हकें अर्स कहया, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।

सिनगार २१/८४

दुनियां पारब्रह्म के जाहेरी लौकिक नाम "श्री कृष्ण अनादि अक्षरातीत" के सहारे इस भवसागर के नरकों से पार हो जायेगी (**निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दूनी राह देखत**) किन्तु ब्रह्मसृष्टियों के पास धनी का असल नाम श्री श्यामा श्याम (श्री प्राणनाथ) हैं। इनके ही दिल को धनी ने अपना अर्श कहा है और कुरान से इसकी साक्षी भी दिला दी है।

अनेक धर्म ग्रन्थों में पारब्रह्म को "प्राणनाथ" कहा गया है। प्राणनाथ किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है बल्कि आत्मा का अनादि, अखण्ड, मूलपति ही प्राणनाथ है। श्री कृष्ण एक लौकिक तन का नाम है। पारब्रह्म अक्षरातीत श्री इन्द्रावती जी के जिस

Nijanand App

तन में बैठे। उस तन का लौकिक नाम मेहेराज ठाकुर है "प्राणनाथ" नहीं। **नाम तत्व कहयूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखण्ड लीला रास।।**

किरंतन प्र० ६४ चौ० ७

योगमाया के उस अखण्ड तत्व का नाम श्री कृष्ण है जो अभी भी अखण्ड रास की लीला कर रहे है।

योगमाया भी शब्दातीत है किन्तु अक्षरातीत ने ब्रज में जो नाम धारण किया था उसी नाम से अखण्ड रास के भी रूप को श्री कृष्ण नाम से माना जाता है।

२. श्री मुखवाणी और बीतक साहिब की किसी भी चौपाई में यह नहीं लिखा है कि मूल मिलावे में सिंहासन पर श्री कृष्ण जी बैठे हैं।

२. श्री मुख वाणी में मूल मिलावे में सिंहासन पर विराजमान होकर अपनी रूहों को, जो माया का खेल दिखा रहे हैं, उस मूल स्वरूप को ही प्राणनाथ कहा गया है।

"कहे सुन्दरबाई अक्षरातीत से, खेल में आया साथ।

दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ।।

किरंतन प्र० १४, चौ० ६

सुन्दरबाई (श्यामा जी) कहती हैं कि अक्षरातीत के परमधाम से सुन्दर साथ माया का खेल देखने यहां आया हुआ है। धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ही ब्रज एवं रास दोनों सपनों के एवं इस तीसरे जागनी ब्रह्माण्ड के खेल को

Nijanand App

३. श्री कृष्ण के स्वरूप में अक्षर ब्रह्म की आत्मा तथा धनी का जोश था। उस स्वरूप की लीला में अक्षर ब्रह्म की आत्मा स्वयं को तथा परमधाम के मूल वचनों को भी भूल गई।

''तब धाम धनिएं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।

मुल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपन की बुध।।''

प्रकास हि० प्रगटवाणी चौ० ३३

परमधाम में स्थित धाम धनी ने विचार किया कि श्री कृष्ण जी के तन में स्थित अक्षर ब्रह्म की आत्मा तथा आत्माएं खेल में मग्न हो गए है। यह दोनों ही सपने की बुद्धि के खेल में इतने भूल गए कि इन्हें परमधाम में किए हुए मूल वचनों की भी सुध नहीं है।

श्री कृष्ण के स्वरूप में अक्षर ब्रह्म की आत्मा रास में इतनी मग्न हो गई कि उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं रहा कि मैं कहां हूं, परम धाम में या योमगमाया में?

''फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।

जब जोस लियो खेंच कर, तब चित्त चौंक भई अछर।।''

प्रकास हि० प्रगटवाणी चौ ४१

फिर मूल स्वरूप श्रीराज जी ने देखा कि अक्षर ब्रह्म और सखियां दोनों दिखा रहे है।

३. श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में पांचो शक्तियां (धनी जी का जोश, श्यामा जी, अक्षर ब्रह्म, हुक्म का स्वरूप तथा असराफील) जागृत अवस्था में है। इन्हें परमधाम की वाहेदत, खिलवत, इश्क रब्द तथा पच्चीस पक्षों के जर्रे–जर्रे का स्पष्ट ज्ञान है। श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आने वाले माया के संसारी जीवों को भी यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है। श्री प्राणनाथ जी के चरणों की कृपा से ही अक्षर ब्रह्म को असराफील की शक्ति से परमधाम की उस वाहेदत, खिलवत और पच्चीस पक्षों का ज्ञान है जो श्री कृष्ण के स्वरूप में रहने पर साक्षात अक्षर ब्रह्म को भी नहीं थी।

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोंचे तित।

मेरे हिरदे चरन धनी के, इनें ए फल पाया इत।।

प्रकास हि० २०/१५

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि मेरे हृदय में धाम धनी श्री प्राणनाथ जी के चरण कमल हैं, जिनकी कृपा से अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि को परमधाम की उस लीला का ज्ञान है जो विष्णु भगवान और आदि नारायण को भी नहीं है।

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई

Nijanand App

ही खेल में मग्न हो गए हैं। जब उन्होंने अपना जोश खींचा तो अक्षर ब्रह्म चौक उठे कि मैं कौन हूं? यह वन कैसा है तथा यह सखियां कौन है ?

यहां यह स्पष्ट है कि जिस स्वरूप ने श्री कृष्ण के तन से अपना जोश खींचा, वही पूर्णब्रह्म है ना कि श्री कृष्ण का वह तन और अक्षर की आत्मा।

४. श्री कृष्ण के स्वरूप में अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ मात्र धनी का आवेश था और बेहोशी में सखियों ने उनके साथ लीला की।

सो सूरत धनी को ले आवेस, नन्द घर कियो प्रवेस।।

प्र० हि० प्रगट वाणी

अक्षर ब्रह्म की आत्मा ने परमधाम की प्रेमलीला देखने की इच्छा से धनी का आवेश लेकर नन्द के घर श्री कृष्ण जी के तन में प्रवेश किया।

५. श्री कृष्ण जी के अंदर बैठे स्वरूप (अक्षर की आत्मा और राजजी के जोश द्वारा) केवल ब्रज गोकुल एवं मथुरा मंडल ही अखंड हुआ।

अछर।

तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० १०३

श्री प्राणनाथ जी के चरणों की संगति करने के कारण अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि अधिक महिमा वाली हो गई अर्थात् उसे परमधाम की उस वाहेदत, खिलवत का ज्ञान हो गया जो इससे पहले कभी भी नहीं था।

४. श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में हमारे सुभान श्री श्यामा जी विराजमान हैं, जो सुन्दर साथ के लिए ही आई हैं। धनी के दिए हुए तारतम ज्ञान से जागृत होने के कारण अब कोई भी सुन्दर साथ अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ विलास करने की भूल नहीं कर सकता है।

सुन्दर बाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।

भेजें धनीएं आवेस देय के, अब न्यारे न होंए एक खिन जी।।

प्र० हि० प्र० २ चौ० २

श्यामा जी को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में धनी ने अपना आवेश देकर भेजा है और वह हम से एक पल के लिए भी अब जुदा नहीं हो सकती है।

५. श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप के द्वारा इस ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण चौदह लोकों को ही मुक्ति मिलनी है, जो अब

Nijanand App

पहले दृष्टें हमारे जो आइया, तेते मिने उजास।

हम खेलें तिन उजास में, और लोक सब को नास।।

क० हि० प्र० २३, चौ० ७६

जिस तरह से ब्रज में हमारी लीला (गोकुल, ब्रज, और मथुरा में) हुई, जो योगमाया में अखंड हो गई और शेष सारे ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया। गीता में श्री कृष्ण कहते हैं

"मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म हो चुके हैं, जिनको मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।" जो स्वयं जन्मता है और मरता है, वह दूसरे को क्या अखंड करेगा?

६. ब्रज लीला में श्री कृष्ण के रूप में पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप की पहचान किसी को भी नहीं हो सकी। क्योंकि उस समय किसी के भी पास जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं था। गोपियों के अलावा यदि किसी ने भी उनकी कुछ पहचान की तो केवल गोलोकी श्री कृष्ण के ही रूप में। अक्षर से भी परे अक्षरातीत पूर्णब्रह्म अपनी आत्माओं के तक न तो कभी हुई थी और न कभी होगी।

अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर। बीसा सौं बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर।।

सनंध प्र० ४२ चौ० २४

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अक्षर ब्रह्म के दोनों फरिश्ते जबराईल और असराफील तारतम वाणी के अखंड रस में सराबोर हो जायेंगे। यह सारा चर अचर ब्रह्माण्ड (बीसा सौ वर्षो) बाद योगमाया में अखंड हो जायेगा।

तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करे अखंड।

किरंतन प्र० ६६ चौ० १६

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी की ही यह अपार महिमा और साहेबी है, जो इस खेल में आने के कारण वे ब्रह्माण्ड को ही अखंड करेंगे।

६. छठवें दिन की इस लीला के बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में चौदह तबकों को यह पता चल जाएगा कि अक्षरातीत पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी हमारी नश्वर दुनियां में आए थे। उनका दीदार भी योगमाया के अन्दर सारी दुनियां कर लेगी और महाप्रलय के बाद श्री प्राणनाथ जी योगमाया में जाहेर भी हो जाएंगे।

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले

Nijanand App

साथ आए हुए हैं, यह भेद किसी ने भी नहीं जाना। केवल शिव आदि अक्षर ब्रह्म की वासनाओं को ही इस भेद का पता चला और इसी कारण वे दर्शन करने के लिए आए।

ब्रह्मसृष्ट हुती वृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला पर न था आखिरी इलम पूरन।।

सिनगार प्र० १ चौ० ४७

ब्रह्मसृष्टियों को ब्रज में धनी से प्रेम तो था, किन्तु मूल सम्बन्ध और मूल घर का पता नहीं था। रास में सम्बन्ध का पता तो था किन्तु अपने मूल घर परमधाम का ज्ञान नहीं था। इस लक्ष्य को श्यामा जी लेकर आईं अर्थात् उनके तारतम ज्ञान से निसबत और निजघर का ज्ञान तो हो गया, लेकिन पूर्ण ज्ञान न होने से जागनी की लीला उस तन से न हो सकी।

निज घर। वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर।।
जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार।
दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० ७८ ७६

हम योगमाया में जाहेर होकर एक साथ ही परमधाम जायेंगे और यह सारा चर अचर ब्रह्माण्ड योगमाया में अक्षर की नजरों के सामने अखण्ड हो जाएगा। जब हम योगमाया में जाहेर हो जायेंगे तो तब संसार को हमारी और धाम धनी श्री प्राणनाथ जी के आगमन की सुध होगी और तब उनका दर्शन करने के लिए सारी दुनियां दौड़ेगी।

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुःख।
ऐसे मौले मेहबूब सों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।

सनंध प्र० २६ चौ० ८

इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जिन लोगों ने उस अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी को नहीं पहचाना वे योगमाया में होने वाली न्याय की लीला में अपने सामने विराजमान सब के परमात्मा श्री प्राणनाथ जी को देख कर वे दुःख से पश्चाताप करेंगे कि ऐसे प्यारे परमात्मा श्री प्राणनाथ जी को हम ने क्यों नहीं पहचाना?

Nijanand App

७. कंस ने जब अक्रूर को कृष्ण और नंद जी को बुलाने भेजा, तो श्री कृष्ण जी गोपियों से चार दिन बाद मथुरा से लौट आने का वायदा कर गए। मथुरा से गोकुल लगभग आठ किलोमीटर दूर है। गोपियां उनके विरह में तड़पती रहीं लेकिन वह कभी भी उनसे मिलने के लिए नहीं गए।

८. श्री कृष्ण जी ने महाभारत के युद्ध और प्रभाष क्षेत्र में करोड़ों मानवों का संहार करवाया। कुरूक्षेत्र के युद्ध में भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य भी नहीं बच सके। गीता में श्री कृष्ण जी स्वयं कहते हैं–

"परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम"

अर्थात् साधुजनों की रक्षा और दुष्टों के विनाश तथा धर्म की स्थापना

७. अक्षरातीत श्री प्राणनाथ एक पल के चौथाई हिस्से के बराबर भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं रह सकते।

मैं तो कहूं जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथ की जुदागी न सहो।

मैं तो कहूं जो मेरी ओछी मत, तुम हमको कई सुख चाहत।।

प्र० हि० प्र० २४ चौ० १६

श्री इन्द्रावती जी कहती है– हे धामधनी! (श्री प्राणनाथ) यह बात तो मैं तब कहूं, जब आप मुझसे जुदा हों। आप तो एक पल के चौथाई हिस्से की जुदायगी भी हम सखियों से सहन नहीं कर पाते। यह तो मैंने कम बुद्धि के कारण कहा है। आप तो हमें बेशुमार सुख देना चाहते है।

८. कोई दुष्ट हो या सज्जन पारब्रह्म सब का है। धाम धनी श्री प्राणनाथ सभी प्राणियों के लिए कृपा के अथाह सागर हैं। वह कहते हैं–

करनी करम कछू न रहया, धनी बड़े कृपाल।

सो बुध जी ऐं मारया, जो त्रैलोकी का काल।

खुलासा प्र० १३ चौ० ११३

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी बड़े कृपालु हैं। बिना तपस्या और कठोर साधना के ही सब को (दुष्टों और

Nijanand App

के लिए मैं युग युग में अवतरित होता हूं।

६. गीता के १५ वें अध्याय श्लोक १७ में श्री कृष्ण जी कहते हैं कि उत्तम पुरूष ही अक्षरातीत परमात्मा है, किन्तु वे ही श्री कृष्ण महाभारत के युद्ध के पश्चात जब अर्जुन ने अक्षरातीत का ज्ञान समझाने को कहा तो श्री कृष्ण जी म० भा० अश्वमेध पर्व (अनुगीता पर्व) अ० १६ श्लोक ६–१३ में कहते हैं "हे अर्जुन! उस समय मैनें तुम्हें अत्यन्त गोपनीय ज्ञान का श्रवण कराया था। सभी लोकों के शाश्वत धर्म का मैंने तुम्हें ज्ञान दिया था किन्तु अपनी नासमझी के कारण तुमने उस उपदेश को जो याद नहीं रखा, यह बहुत बुरा है। उन बातों का अब पूरा साधुजनों को भी) मुक्ति प्रदान करेंगे। बुद्ध जी ने तीनों लोकों (मृत्यु लोक, स्वर्ग लोक और बैकुण्ठ) को काल से छुड़ाया अर्थात् वे चौदह लोकों के इस सारे ब्रह्माण्ड को ही अखंड कर देंगे।

वेदों कहया आवसी, बुध इश्वरों का ईस।

मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।।

खुलासा प्र० १२ चौ० ३१

हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों में कहा गया है कि सब ईश्वरों के मालिक जागृत बुद्धि के अवतार श्री प्राणनाथ जी आयेंगे और कलियुग की राक्षसी बुद्धि को समाप्त करके सब को बहिश्तों में अखंड करेंगे।

६. श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में पारब्रह्म की पांचों शक्तियां (जोश, श्यामा जी, अक्षर ब्रह्म, हुक्म का स्वरूप और असराफील) विराजमान है जिसके कारण उस अखंड, अद्वैत, परमधाम का स्वरूप और लीला सहित सारा ज्ञान "श्री कुलजम स्वरूप साहिब" के रूप में उतरा। जिसके द्वारा किसी भी तरह का संशय नहीं रह जाता। गीता ने तो अक्षरातीत के बारे में केवल संकेत दिया, स्पष्ट वर्णन नहीं किया। उस ज्ञान को भी दुबारा सुनाने में श्री कृष्ण जी ने अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी।

Nijanand App

पूरा स्मरण होना सम्भव नहीं जान पड़ता है। अर्जुन! निश्चय ही तुम बड़े श्रद्धाहीन हो, तुम्हारी बुद्धि बहुत मन्द जान पड़ती है। अब मैं उस उपदेश को ज्यों का त्यों नहीं कह सकता। वह धर्म ब्रह्म पद का ज्ञान कराने के लिए पर्याप्त था। वह सारा ज्ञान उसी रूप में फिर दोहरा देना अब मेरे वश की बात नहीं है।

श्री कुलजम स्वरूप के द्वारा पूर्ण ब्रह्म की शोभा, श्रृंगार तथा परमधाम के उन २५ पक्षों का ज्ञान संसारी जीवों को भी हो जाता है, जहां गीता तो क्या संसार के किसी भी धर्मग्रन्थ का ज्ञान स्पष्ट रूप से नहीं पहुंचता।

''दई तुमको मैं कुलजम, इनको किया गरक।
पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक।।''

बीतक साहब प्र० ५४, चौ० ८७

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मैंने तुमको जो यह ''श्री कुलजम स्वरूप'' की वाणी दी है। उससे माया (शैतान) की सारी शक्ति डूब जाएगी अर्थात् नष्ट हो जाएगी। तुम मेरी कुलजम स्वरूप की वाणी पढ़कर मथन करोगे, तो तुम्हारे सारे संशय दूर हो जाएंगे।

मुहम्मद साहब की हकीकत– श्रीकृष्ण और मुहम्मद साहब के जीवन में अनेक समानताएं देखने को मिलती हैं। गायें चराना, जेल में जन्म होना तथा माता पिता से दूर नन्द जी के घर पालन पोषण होने की अनेक बातें मुहम्मद –साहब के भी जीवन में मिलती है। गुरूग्रन्थ साहब में कहा गया है कि–

पारजातु गोपी लै आइया, बिंद्रावन महि रंगु कीआ।।
कलि महि बेदु अथरवणु हुआ, नाम खुदाई अलहु भइया।।
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे, तुरक पठाणी अमलु कीआ।।

गुरू ग्रन्थ साहब पृ० ४७०

अर्थात् ब्रज एवं रास में जो श्रीकृष्ण (अक्षर की आत्मा एवं धनी का जोश) थे, वे ही अरब में हुक्म के स्वरूप मुहम्मद साहब के रूप में आये।

Nijanand App

श्री कृष्णजीएं बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।

सोई सरुप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम।।

खुलासा प्र० १३ चौ० ७५

श्री कृष्ण जी ने ब्रज और रास में आत्माओं की इच्छा पूरी की। वे ही श्रीकृष्ण जी बरारब (अरब) में आकर रसूल मुहम्मद कहलाये और वे ही पारब्रह्म का फुरमान (कुरान) लेकर आये।

तहां रास लीला करके, आए बरारब स्याम।

त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम।।

बी० सा० ७१/८४

योगमाया में रास लीला करके श्रीकृष्ण जी का वह स्वरूप इस तीसरे ब्रह्माण्ड में अरब में आया और वहां ६३ वर्ष तक रहकर पुनः मोमिनो के साथ कयामत के समय आने का वायदा किया।

'मुहम्मद' किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। मुहम्मद शब्द का अर्थ होता है, महिमा से परे। श्री कृष्ण के स्वरूप (अक्षर की आत्मा तथा धनी के जोश) ने अरब में जिस तन के अन्दर प्रवेश किया, उसका नाम मुस्तफा बेग था जो अरब के कुरेश घराने (ब्राह्मण परिवार) के पंडित अब्दुला के पुत्र थे। ४० वर्ष की उम्र होने के पश्चात जब उन्हें मेयराज (खुदा का दर्शन) हुआ तथा कुरान की आयतें उतरने लगी तब उन्हें मुहम्मद (महिमा से परे) कहा जाने लगा।

मुस्तफा बेग जी बचपन से ही अनपढ़ थे। एक दिन जब वे गुफा में बैठे थे कि अचानक जबराईल फरिश्ते ने प्रगट होकर कहा– इक्रा (पढ़ो) उत्तर में उन्होंने कहा कि मैं तो अनपढ़ हूँ। पुनः जबराईल ने उन्हें पकड़ कर भींचा (आलिंगन किया) और कहा पढ़ो। दुबारा वैसा ही उत्तर मिलने पर तीसरी बार उसने जोर से भींचा और फिर छोड़कर कहा, 'हक्रा बिस्मि राब्बि कल्लजी खलक अर्थात् पढ़ उस खुदा के नाम से, जिसने कायनात (सृष्टि) को पैदा किया, जिसने इन्सान को पैदा किया। पढ़! तेरा रबः बड़ा करीम है।

अब उनके तन से जबराईल फरिश्ते के माध्यम से आयतें उतरने लगी और उन्हें खुदा का दर्शन भी हुआ, जिसका वर्णन कुराना सिपारा १६ सूरा १७ आयत १ में किया गया है। अब वे मुस्तफा बेग न होकर हजरत मुहम्मद सल्लिलाहु

Nijanand App

कहे जाने लगे, जिनकी महिमा को शब्दों में नहीं कहा जा सकता। इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में यह पहला अवसर था, जब किसी ने परमधाम के मूल मिलावे में जाकर पूर्णब्रह्म अल्लाहतआला से ६० हजार हरफ सुनें। वस्तुतः वह इस दुनिया के थे ही नहीं। धाम के धनी अपनी आत्माओं को परमधाम की गवाहियां देने के लिये स्वयं हुक्म का स्वरूप धारण किये थे।

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावे भूल।।

सनंध प्र० २० चौ० ६

धाम धनी श्री राजजी कहते हैं कि हुक्म का स्वरूप बनकर अरब में रसूल के रूप में मैं ही आया था। हे परमधाम की रूहों! तुम इस बात से सावधान रहना कि जाति एवं भाषा के झगड़ों में पड़कर मुझे भूल मत जाना।

तौरेत, इंजील, जंबूर जिनको ईसा, मूसा और दाऊद लाए थे उनमें परमधाम का कोई भी ज्ञान नहीं था, अतः अपनी आत्माओं के लिए वे अरब में मुहम्मद साहब के रूप में प्रगट हुए।

रसूल आया हुकमे, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन।।

सनंध प्र० ३६ चौ० ६२

रसूल साहब श्री राजजी का हुक्म (कुरान) लेकर संसार में आये तो उनका नाम गैन (६) पड़ा और वे ही रसूल साहब जब श्रीराज जी का हुक्म बजाकर वापस गये तो फिर ऐन के ऐन (६) हो गये अर्थात् स्वतः श्रीराज जी के स्वरूप में हो गये।

जिस समय अरब में मुहम्मद साहब आये, उस समय वहां चारों ओर हैवानियत ही फैली हुई थी। उन्होंने कुरान का ज्ञान देकर वहां के लोगों को बशर बनाने योग्य मानवता का पाठ पढ़ाया, अतः उन्हें खुदा (मुहम्मद) की बशरी सूरत कहते हैं–

जिस प्रकार 'प्राणनाथ' किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, बल्कि पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द ही प्राणनाथ हैं, उसी प्रकार 'मुहम्मद' भी किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। श्री मुखवाणी में एक ही मुहम्मद शब्द के कई अर्थ हैं। श्यामा जी को भी मुहम्मद कहा गया है। मुहम्मद एवं सुभान शब्द श्री राज जी एवं श्यामा

Nijanand App

जी दोनों के लिये प्रयोग किये जाते हैं। बसरी सूरत रसूल मुहम्मद साहब है। मलकी सूरत श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) को मुहम्मद गिरो कहा गया है तथा हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी को मुहम्मद नूर (आखिरी मुहम्मद) कहा गया है।

श्री ठकुरानी जी रूह अल्ला, महम्मद श्रीकृष्ण जी स्याम।

खुलासा प्र० १२ चौ० ५३

श्री ठकुरानी जी (श्यामा जी) को अरबी भाषा में रूह अल्लाह कहते है। और श्री कृष्ण जी ही मुहम्मद के स्वरूप है।

आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर।

तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवें क्योंकर।।

सनंध प्र० २४ चौ० ११

इस चौदह लोकों को दुनिया (देवी–देवता, आदि नारायन इत्यादि) को अखंड परमधाम की हकीकत का पता नहीं है तो उनके वास्ते डाकिया (कासिद, संदेशवाहक) बनकर रसूल मुहम्मद साहब परमधाम से क्यों आयेंगे?

रसूल मुहम्मद साहब के अन्दर विराजमान अक्षर ब्रह्म की आत्मा मूल मिलावे में जाकर श्रीराज जी से ६० हजार हरफ भी बाते कर लीं तथा कुरान में उसका कुछ वर्णन भी कर दिया किन्तु ब्रज एवं रास में श्रीकृष्ण के रूप में वहीं अक्षर ब्रह्म की आत्मा खुद को तथा परमधाम को बिल्कुल ही भूल गयी थी। देखिए, प्रकाश हिन्दुस्तानी की प्रगट वाणी–

तब धाम धनिएं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेले नर नार।

मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेले सुपने की बुध।।

रसूल मुहम्मद साहब के स्वरूप में परमधाम का ज्ञान होने के कारण (मुस्तफा बेग के जीव) तथा उनकी उम्मत को सबलिक में तीसरे नम्बर की बहिश्त मिली, जबकि श्रीकृष्ण जी के रास एवं ब्रज की बहिश्त चौथे एवं पांचवें नम्बर की है।

भाषायी एवं जातिगत भेदभाव के कारण 'मुहम्मद साहब' के प्रति संकुचित एवं नफ़रत की भावना रखना हमारे ईमान से गिरने का प्रमाण है। इस सम्बन्ध में तो यही कहना पड़ता है कि–

आज सांच केहेना, सोतो काहू ना रूचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत।

सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत।।

Nijanand App

स्वामी जी कहते हैं कि आज के समय में यदि सत्य कह दिया जाय तो किसी को भी अच्छा नहीं लगता है। तो भी मैं कुछ सत्य का प्रकाश कर रहा हूँ। सत्य के साथी (ब्रह्म सृष्टि एवं ईश्वरी) को सत्य के बाण चुभ जायेंगे अर्थात् वे इसे पूरी तरह से ग्रहण कर लेंगे, किन्तु दुष्ट बुद्धि वालों को इससे दुःख होगा।

सत्य की राह पर हादी के कदमों कदम चलने वाली परमधाम की आत्माओं को मुहम्मद साहब से कभी भी नफरत नहीं होगी।

राह चलाई बसरिएं फुरमाने, दई कुंजी मलकी हकीकत।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत।।

खुलासा प्र० २ चौ० ६

खुदा की बसरी सूरत रसूल साहब ने शरीयत का ज्ञान देकर एवं एक खुदा का पूजक बनाकर दीन का रास्ता चलाया। धाम धनी ने दूसरी मलकी सूरत (श्री श्यामा जी) को तारतम की कुंजी दी। हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी ने खुदा की सूरत का बयान किया और मारफत (विज्ञान का रास्ता) का ज्ञान जाहिर किया।

महंमद कहे मैं हुकमे, सब रूहें थी मुझ मांहि।
मै चल्या अर्स मेयराज को, पर पहुँच सक्या नाहिं।।

सनंध ४१/६३

मलकी सूरत श्री श्यामा जी कहते है कि सभी रूहें मेरे अन्दर थी और मैं परमधाम के दर्शन करना चाहता था, किन्तु धनी का हुक्म नहीं होने के कारण मैं परमधाम का दर्शन नहीं कर सका।

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार।।

मा० सा० प्र० १२ चौ० ३५

जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी को जिस रूप में पहचाना, उनको श्री प्राणनाथ जी उसी रूप में मिले। इस तरह सबको अपने–अपने यकीन के अनुसार बदला मिला, अब चाहे जीतो या हारो, यह तुम्हारे हाथ में हैं।

जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लो सुध ना जमाने।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।

Nijanand App

मा० सा० प्र० १२ चौ० ५०

जब तक दुनियां वाले आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं कर लेते, तब तक उनको ज़माने की तथा कयामत की सुध नहीं हो सकती है। अब तक उन्हें अखण्ड घर परमधाम तथा इस झूठे मिटने वाले संसार की हकीकत का पता नहीं है। उनको यह भी पता नहीं है कि हमारा लाभ किसमें है तथा हानि किसमें है?

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।

छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।।

किरंतन प्र० ११८ चौ० १६

इस आखिरी मुहम्मद सल्लिलाहु श्री प्राणनाथ जी के धर्म श्री निजानन्द सम्प्रदाय में जो ईमान लायेगा उस पर मैं छत्रसाल अपने तन, मन एवं धन से कुर्बान हूं।

परमधाम में विराजमान श्यामा जी को भी 'मुहम्मद' कहा गया है।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान।

सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।

सनंध प्र० २३ चौ० १३

यह चौदह लोकों का खेल श्री श्यामा जी (मुहम्मद) के वास्ते बना है। वह श्यामा जी अपनी रूहों के वास्ते खेल में आयी हुई हैं। इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना।

आंखा खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना।।

मा० सा० प्र० १७ चौ० ५३

श्री श्यामा जी एवं रूहों को यह झूठा खेल दिखाकर श्री प्राणनाथ जी इसे नष्ट कर देंगे। ठीक उसी तरह कि जैसे नींद से जागने पर सपना टूट जाता है।

महंमद नूर हक का, यों गिरों महंमद का नूर।

जिन किया दावा इनका, सो रहे दूर से दूर।।

मा० सा० प्र० ३ चौ० ११६

Nijanand App

श्री श्यामा जी श्री राज जी के नूरी अंग है और रूहें श्यामाजी के नूरी अंग है। झूठी दुनिया वालों ने जो इनका दावा ले रखा है, वे सच्चाई से बहुत दूर रहते हैं।

जो श्री मुखवाणी को पूज्य मानते हैं तथा श्री राज श्यामा जी को अपना धाम धनी मानते हैं, उन्हें इस समीक्षा को पढ़कर 'मुहम्मद' शब्द के प्रति अपनी संकुचित भावना को छोड़ देना चाहिए।

संवत् १७१२ में श्री राजजी श्यामा जी युगल स्वरूप ने श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़कर श्री इन्द्रावती जी की आत्मा मेहेराज ठाकुर के तन में प्रवेश किया। तब सांसारिक रीति से बिहारी जी को गादी पर बिठा दिया गया। जागृत बुद्धि का ज्ञान न होने से बिहारी जी सुन्दर साथ को वाणी चर्चा नहीं सुना सकते थे, तब मेहेराज ठाकुर सुन्दर साथ को एकान्त में वाणी चर्चा सुनाते थे, क्योंकि श्री राज श्यामा जी उनके हृदय में अपने आवेश स्वरूप से विराजमान हो चुके थे, लेकिन जाहिर नहीं हुए थे। तब आवेश द्वारा जो वाणी उतरी, वह मेहेराज ठाकुर के नाम से अवतरित हुई। जिसमें एक किरंतन–

"पर न आवे तोले एक ने, मुख श्री कृष्ण कहंत।" भी है क्योंकि उस समय अभी वाणी नहीं उतरी थी। इसलिए सब मानवों को दुनिया के कर्मकाण्ड से छुड़ाकर, भव से पार उतारने का काम केवल "श्री कृष्ण" का नाम ही कर सकता था।

"पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, कितवा किव करंत।।"

किरंतन १२७/१

यह रास्ता श्री कृष्ण के नाम से भव से पार होने का सिद्ध हो गया है कि उत्तम पुरुष अक्षरातीत के बिना कोई भी नहीं कर सकता। यह सभी ग्रन्थों में प्रमाण लिखा है कि यदि कोई मानव इस धरती पर अनेकों प्रकार के धर्मों को धारण करे और तीर्थों में जाकर रहा करे, सभी साधनाओं की सिद्धि प्राप्त कर ले, पंडितों के मुख से वेदों की चर्चा सुन ले, सब तरह से धर्म के सभी नियमों का पालन कर ले, जीव–जन्तुओं पर दया करते हुए उनको आटा दाना खिला ले, भले ही तरह–तरह के व्रत और जप भी कर ले, सती, शीलवन्ती बन ले, साधु–सन्तों के भगवे वस्त्र और माला आदि का भेष धारण कर ले, ज्ञानी

Nijanand App

बनकर लोगों का उपदेशक बन जाए, तपस्या करके देह का दमन कर ले और तपस्या के द्वारा सब अंगों से कष्ट सह ले, परन्तु इन सब साधनाओं का फल मिलता है, जिससे दूसरा जन्म लेना पड़ता है और यदि इन सबको छोड़कर श्रीकृष्ण अक्षरातीत का नाम ले ले तो जीव भवसागर से पार हो जाएगा। परन्तु यदि कोई करोड़ों नरमेध (मृतक का दाह संस्कार) यज्ञ भी कर ले और अनगिनत अश्वमेध यज्ञ कर ले, तो भी ये जितने यज्ञ हैं, इनका फल भोगने के लिए आवागमन के चक्कर में ही रहना पड़ता है और यदि श्री कृष्ण अनादि अक्षरातीत को पतिव्रता साधन से उस प्राणों के नाथ को अपने हृदय में बिठा लें, तो प्राणी चौदह भवन से पार होकर योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड हो जाता है और वह धन्य धन्य हो जाएगा केवल एक बार श्री कृष्ण अनादि अक्षरातीत का स्मरण करने से।

हे सुन्दर साथ जी। अब आप विचार करके देखिए कि जिनका नाम श्रीकृष्ण अनादि अक्षरातीत था, वही प्राणनाथ हम सबको लेने के लिए आए हैं और जो परमधाम के अंगना भाव को छोड़कर सांसारिक भक्तों की तरह का मार्ग अपनाते हैं, उनका यह मार्ग योगमाया में ले जाने वाला है, परमधाम में नहीं।

अब श्री प्राणनाथ जी की वाणी से जब उजाला हो गया कि कृष्ण तो केवल योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही अखंड है, परमधाम में तो कोई कृष्ण है ही नहीं तो फिर हमारा कृष्ण से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। हब्से में जाने के बाद (श्री राजजी के दर्शन के बाद) श्री इन्द्रावती जी को सब कुछ पता चल गया कि हमारे धनी तो श्री प्राणनाथ हैं, कृष्ण नाम तो ब्रज–रास वाले तन का है, जिससे हमारा सम्बन्ध नहीं है।

सुन्दर नाथ जी! इसी तरह से महाभारत शान्ति पर्व ४७/६२ में श्लोक एकोऽपि कृष्णस्य – – – है। जिसमें बड़े बड़े विद्वान जिनको वाणी के एक भी शब्द की सुध नहीं है, इस श्लोक का प्रयोग करते हैं, जिस पर विचार कर लिखा जा रहा है।

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो, दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म, कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवायः।।

महाभारत युद्ध के पश्चात पांडव जीत गए तब अपने दादा श्री भीष्म पितामह के चरणों में प्रणाम करने गए तो उनको कई दिनों से दुःखी देख कर पूछा कि इसका क्या कारण है? इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका कारण

Nijanand App

१६ कला सम्पूर्ण श्री कृष्ण विष्णु भगवान ही जानते हैं, पर इनको पहचानना हर एक के वश का कार्य नहीं है। जिनको तुम केवल देवकी नन्दन समझ बैठे हो यदि इनको पहचान कर प्रणाम, कर लो तो, महाप्रलय होने तक जन्म मरण से छूट कर बैकुण्ठ में मुक्ति प्राप्त कर लोगे और यदि वैसे ही कोई मानव दस अश्वमेध यज्ञ करता है तो उसका फल भोगने के लिए जन्म लेना पड़ता है और जो इस नारायण भगवान श्री कृष्ण को प्रणाम कर लेता है वह महाप्रलय तक आवागमन के चक्कर से छूटकर बैकुण्ठ को प्राप्त कर लेता है।

सुन्दर साथ जी। अब आप ही विचारिए कि हमको कितनी सजावट भरी चर्चाएं सुनाकर बैकुण्ठ के कृष्ण से बांधा जाता है। पारब्रह्म नाम और तत्व से परे है। ब्रज में से पहले तक किसी भी ग्रन्थ में उनका नाम नहीं है क्योंकि वह कभी भी मिथ्या जगत में आए ही नहीं थे। जब आत्माओं के लिए आना पड़ा तथा तन धारण करना पड़ा, तब उस तन का नाम श्री कृष्ण रखा गया। आज दुनिया कृष्ण नाम में ही उलझी पड़ी है, जिसका नाम श्री कृष्ण है, उसे ही अक्षरातीत कहती फिरती है।

"कृष्ण कृष्ण सब कोई कहे, पर भेद न चीन्हें कोय।
नाम एक विध होत है, लीला त्रैविध होय।।"

बैकुण्ठ के विष्णु भगवान को भी कृष्ण कहते हैं, गोलोक वाले को भी कृष्ण कहते हैं तो फिर क्या दुनिया में जितने कृष्ण हैं वे सब पूर्ण ब्रह्म हैं? इन भ्रन्तियों से निकालने के लिए श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि ब्रज–रास में हमने जो तन धारण किया था, उसका नाम कृष्ण था, हकीकत में मैं प्राणनाथ हूँ इसलिए हम सुन्दर साथ हर रोज कहते हैं कि **"श्री प्राणनाथ निज मूल पति।"**

इसलिए अब हमारा "एकोऽपि कृष्णस्य" वाले महाभारत के इस श्लोक से न तो कोई सम्बन्ध था, न है और न होगा।

यह आठवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

नवीं तरंग

जीव - आत्मा का भेद

आज तक इस ब्रह्माण्ड में असंख्यों ऋषि–मुनि, ज्ञानी, तीर्थंकर और पैगम्बर हो चुके हैं, किन्तु किसी ने भी जीव और आत्मा में भेद स्पष्ट नहीं किया। जब जागृत बुद्धि का ज्ञान अवतरित हुआ, तभी जीव और आत्मा तथा माया और ब्रह्म के स्वरूप की स्पष्ट पहचान हुई। सपने की बुद्धि होने के कारण तीनों पुरूषों (क्षर, अक्षर, अक्षरातीत) तीनों धामों (बैकुण्ठ, अक्षरधाम, परमधाम) की हकीकत अब तक नहीं मालूम हो सकी थी। सच्चिदानन्द पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी जब इस नश्वर दुनियां में आए, तभी उनके तारतम ज्ञान से जीव और आत्मा तथा माया और ब्रह्म की स्पष्ट हकीकत संसार को मालूम हुई। इसके पहले अधिकतर "जीवात्मा" कह कर ही हर कोई आत्म तत्व की व्याख्या कर देता था। कुरान में पांच तरह की पैदाइश का वर्णन होते हुए भी बिना तारतम ज्ञान के जीव और आत्मा के भेद को कोई भी अब तक नहीं बता सका। अरबी भाषा में जीव और आत्मा दोनों के लिए अलग अलग शब्द का प्रयोग होता है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, गीता आदि के द्वारा जीव और आत्मा के भेद को नहीं समझा जा सकता। केवल एक माहेश्वर तन्त्र के द्वारा जीव और आत्मा के भेद को संकेत रूप से कहा गया है, किन्तु स्पष्ट भेद तो एक मात्र पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी के द्वारा दिया है। माहेश्वर तंत्र अध्याय २० श्लोक ४४, ४५, ४६ में कहा गया है कि– श्रुति के कथनानुसार नारायण ही जीवों के साक्षात् पारब्रह्म हैं और

तेषां नारायणः साक्षात्परब्रह्म श्रुतीरणात्।

ब्रह्माभासमया जीवाः क्षुद्रोपाधिगुणाश्रिताः।।

अस्वतन्त्राः पराधीना नित्या इत्यपि चक्षते।

अव्याहतं च नित्यत्वं भ्रान्तिमूलमपि प्रिये।।

निद्रोपलब्ध भावानां निद्रा तावत्स्थितिः स्थिरा।

इति यत् शास्त्रहृदयमज्ञात्वा विवदान्ति ये।।

मा० त० २०/४४, ४५, ४६

Nijanand App

जीव उनके आभास रूप हैं। माया में नारायण के अंश की उपाधि ही जीव है। जीव स्वतन्त्र नहीं हैं, बल्कि पराधीन होते हैं, उनका मूल नारायण है, सपने के समय जो कुछ भी दिखाई देता है, उसका अस्तित्व तभी तक है, जब तक नींद है।

सपना तभी तक है, जब तक नींद है, अर्थात् नींद के बाद ही सपना आता है। आदि नारायण का स्वरूप नींद में ही उत्पन्न हुआ और उसके सपने में सारा ब्रह्माण्ड और जीव बने, इसलिए इन जीवों और इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व भी तभी तक रहेगा, जब तक आदि नारायण का सपना रहेगा। अपने मूलस्वरूप का बोध होते ही आदि नारायण की नींद (अज्ञानता) टूटने से उसका सपना भी टूट जायेगा और उसी पल महाप्रलय हो जायेगा, जिसमें जीव अपने मूल कारण (नारायण) में लय हो जायेंगे।

आत्मा का स्वरूप हद बेहद से परे परमधाम में है। आत्माएं पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं। माहेश्वर तन्त्र में अक्षरातीत स्वयं अपने मुख से कहते हैं—पानी की लहरों की तरह और आग की चिनगारियों की तरह यह सखियां तुमसे (श्री श्यामा जी से) भिन्न नहीं है। यह सब सखियां तुम्हारा ही रूप है, इसलिए सभी प्रियतमा (माशूक) हैं। उनमें जो हमारा प्रेम है, वह अनेक प्रकार का होते हुए भी तुम्हारे (श्यामा जी) में ही परिपूर्ण होता है।

माहेश्वर तन्त्र ४१/१२, १३, १४

माहेश्वर तन्त्र के इन कथनों से यह स्पष्ट है कि आत्माएं उस पारब्रह्म के साक्षात तन हैं (स्वरूप हैं) उनके आनन्द का स्वरूप श्री श्यामा जी हैं और श्यामा जी के अंग आत्माएं है। अक्षरातीत पूर्णब्रह्म का इश्क और आनन्द ही सखियों

नोचितस्ते प्रिये साध्विं मानो मयि निरागसि।
त्वदात्मक त्वात्सख्यो मे सर्वाः प्रियतमा अपि।।
लहर्य्यः सलिलस्येव यथाग्नेविस्फुलिङ्गकाः।
पृथक न सन्ति ते तद्वत्सख्यो भिन्ना न ते क्वचित्।।
तासु सर्वासु यत्प्रेम मदीयं परिवर्तते।
अनेकधापि विलसत् तवय्येव पर्यवस्यति।।

मा० त० ४१/१२, १३, १४

Nijanand App

और श्यामा जी के रूप में है।

इस प्रकार जहां आत्माएं अखंड, अनादि, पारब्रह्म का साक्षात स्वरूप हैं, उसके विपरीत जीव की उत्पत्ति आदि नारायण (मोह तत्व) से हुई है। आदि नारायण का सपना टूटते ही सभी जीव उस में लय हो जाते हैं और जीव निराकार से परे नहीं जा पाता।

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नए वस्त्र धारण कर लेता है, उसी प्रकार जीव भी पुराने शरीर को त्याग कर नये शरीर धारण कर लेता है। गीता (२/२२)

इस प्रकार जीव कर्मो के बन्धन से मुक्त न होने के कारण विभिन्न योनियों में भटकता रहता है। अक्षरातीत पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने जीव और आत्मा का भेद स्पष्ट रूप से बताया है, जिसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

भी वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात।

जीव का अंग सुपन का, वासना अंग साख्यात्।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० ६१

सूर्य और रात में जितना अन्तर है, उतना ही अन्तर आत्मा और जीव में है। जीव की उत्पत्ति सपने से हुई है, जबकि आत्मा साक्षात् पारब्रह्म का अनादि अखण्ड अंग है।

भी बेवरा वासना जीव का, याके जुदे जुदे हैं ठाम।

जीव का घर हैं नींद में, वासना घर श्री धाम।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० ६२

जीव और आत्मा में यह भी अन्तर है कि इनके मूल घर अलग–अलग हैं। जीव का घर नींद (मोह तत्व, निराकार) में और आत्मा का मूल घर अखण्ड परमधाम है।

जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुंन।

वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन।।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि, संयाति नवानि देही।।

गीता (२/२२)

Nijanand App

कलस हि० प्र० २४ चौ० २१

जीव की उत्पत्ति सपने से होती है, इसलिए वे निराकार–शून्य को पार नहीं कर पाते है। केवल आत्मा ही निराकार को पार करके अक्षर धाम से भी परे परमधाम पहुंचती हैं।

ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत।

झूठा जीव नींद ना उलंघें, नींद उलंघे वासना सत।।

कलस हि० प्र० २४ चौ २२

इस प्रकार जीव और आत्मा में यह भेद है। झूठा जीव मोह तत्व निराकार को पार नहीं कर पाता है। नींद (निराकार, शून्य) को केवल अखण्ड और सत् आत्मा ही पार करती है और अपने निज घर पहुंचती है।

देखो सुपन में कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात।

जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात।।

कलस हि० प्र० २४ चौ० २५

एक व्यक्ति जब सपना देखता है, तो सपने में कई तन बन जाते हैं और जब उन में से ही एक तलवार निकाल कर मारना शुरू कर देता है और एक को मार देता है, तो घबराहट तो होती है लेकिन सपना नहीं टूटता, परन्तु जब वही व्यक्ति सपना देखने वाले को मारने के लिए दौड़ता है तो घबराहट से उसकी नींद टूट जाती है। उसी प्रकार से इस ब्रह्माण्ड के सारे जीव सपने के हैं, उनका कोई मूल नहीं है। परमधाम की आत्माएं भी इस सपने के खेल को यहां पर तन धारण करके देख रही हैं। जब इस ब्रह्माण्ड का महाप्रलय होगा तो आत्माएं अपने मूल तन परआतम में जो श्री प्राणनाथ जी के चरणों में बैठी है, उठ जायेंगी, जबकि जीव का कोई मूल तन नहीं है। इस प्रकार जीव और आत्मा में यही अन्तर है।

वासना उतपन अंग थें, जीव नींद की उपवत।

कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत।।

कलस हि० प्र० २४ चौ० २६

आत्मा की उत्पत्ति उनके मूल परआतम के तन से है और जीव की उत्पत्ति नींद (मोह तत्व, निराकार) से है। इस प्रकार अखण्ड आत्मा अपने मूल घर

Nijanand App

नींद (मोह तत्व, निराकार) से है। इस प्रकार अखण्ड आत्मा अपने मूल घर परमधाम को नहीं छोड़ सकती और जीव निराकार को नहीं छोड़ सकता।

कर्मो के फल को भोगता हुआ जीव अनेक योनियों में भटकता रहता है। वह कर्मो के बन्धन को कभी भी तोड़ नहीं पाता। इसके विपरीत आत्मा पारब्रह्म अक्षरातीत के अंग होने के कारण कभी भी कर्म के बन्धन में नहीं पड़ती है।

मोटो अवतार श्री परसराम जी, तेना हजी लगे बंध न छूटे।

कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रूटे।

किरंतन प्र० १२६ चौ० ८४

परशुराम जी का अवतार बड़ा कहा जाता है, उनके भी आज तक कर्मो के बन्धन नहीं छूटे। वह आज तक तप में बहुत कष्ट कर रहे हैं, फिर भी उनसे कर्मो के बन्धन की रस्सियां नहीं टूटती।

आ ब्रह्माण्ड विखे कोई एम मा केहेसो, जे अमने सूं करे बंध।

ब्रह्माण्ड धणी पोंते आप बंधावी, देखाडे छे सनंध।।

किरंतन प्र० १२६ चौ० ८७

इस संसार में किसी भी जीव को ऐसा नहीं कहना चाहिए कि कर्मो के बन्धन मेरा क्या कर लेंगे? जब इस ब्रह्माण्ड के मालिक त्रिदेवा भी कहते हैं कि हम खुद कर्मो के बन्धन में बन्धे हैं और त्रिदेवा ही जीवों को कर्मो के बन्धन में उनके कर्मो के अनुसार डालते हैं।

जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी।

जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी।।

प्रकास हि० प्र० ३० चौ.४८

जो कोई माया का जीव होता है, वह बैकुण्ठ पाने की राह पर चलता है और जो निराकार से परे का होता है ,वह हमारी राह (इश्क–बन्दगी) को लेकर चलता है।

कहे महंमद अर्सरुहें, तुम मछली हौज कौसर।

जो जीव दूनी मुरदार के, सो रहे ना तिन बिगर।।

सिनगार प्र० २३ चौ० ४७

Nijanand App

श्री प्राणनाथ जी अपनी रूहों से कहते हैं कि तुम परमधाम के हौज कोसर में रहने वाली मछली हो। जिस प्रकार इस दुनियां के मुरदार जीव दुनियां के बिना नहीं रह सकते, वैसे ही तुम्हें भी परमधाम के बिना नहीं रहना चाहिए।

आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल।

दुनिया बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल।।

सिनगार प्र० २३ चौ० ६३

संसार के जीव शरीर को ही संवारने में ही लगे रहते हैं वे आत्माओं (मोमिनों) की रंहनी में नहीं आ सकते। दुनियां निराकार की ही पूजा करती है और मोमिन अक्षरातीत की इश्क बंदगी में मग्न रहते हैं।

दुनी दिल मजाजी कहया, मोमिन हकीकी दिल।

बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्से रहें हिल मिल।।

सिनगार प्र० २३ चौ० ७७

दुनियां के जीवों के दिल को झूठा कहा है और आत्माओं के दिल को सच्चा। मोमिन परमधाम में श्री राज जी से हिले मिले है, एक तन है। जब दुनियां के जीवों को परमधाम की खबर भी नहीं है, तो उसे कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर।

हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर।।

सिनगार प्र० २३ चौ० ११४

इस संसार के सभी जीव सपने के हैं जो आत्माओं की बराबरी करते हैं। जीव सच के तेज को सहन ही नहीं कर सकता। सच को देख कर जो समाप्त हो जाए, तो उसे दूसरा कैसे कहा जा सकता है?

हक देखे जों खड़ा रहे, तो दूजा कहया जाए।

दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए।।

सिनगार–प्र० २३ चौ० ११५

सत् (पारब्रह्म) के सामने जो खड़ा रह सके, वही दूसरा कहला सकता है इसलिए इस संसार के जीव जो सपने के है, उन्हें दूसरा कहा नहीं जा सकता? क्योंकि ये तो आदि नारायण की नींद के खत्म होते ही समाप्त हो जायेंगे।

Nijanand App

मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।

तो अर्स कहया दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत।।

सिनगार प्र० २३ चौ० ११५

आत्माएं परमधाम से उतर कर खेल में आई हैं। उनके दिल में पूर्ण ब्रह्म श्री राजजी ही अपना अर्श कर विराजमान हैं। उन्होंने ही हकीकत और मारफत के भेद खोले हैं। इसलिए रूहों के दिल को अर्श कहा जाता है।

इस दुनियां के जीवों के दिल पर शैतान अबलीस की बादशाही है और इनकी उत्पत्ति भी निराकार से ही है। इनकी कहनी, करनी और रहनी सब माया की है और ये जीव निराकार को ही परमात्मा मान कर पूजा करते है।

यह नवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

दसवीं तरंग

श्री प्राणनाथ जी की महिमा

अद्वितीय पारब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) ने ही ब्रज और रास में श्री कृष्ण नाम से आकर लीला की और इस जागनी के ब्रह्माण्ड में अपने असली "प्राणनाथ" के स्वरूप से इस दुनियां में जाहिर हो गए। उन्होंने अपने साथ परमधाम की उस वाहेदत और खिलवत को भी वाणी के द्वारा जाहिर कर दिया है, जो आज दिन तक कभी भी नहीं हुई थी। कुरान के इस कथन के अनुसार कि "खुदा की सूरत का बयान करने वाला खुद खुदा ही होगा" को उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया। वे हिन्दुओं के लिए श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार हैं तो मुसलमानों के लिए आखरुल जमां इमाम मेंहदी, ईसाइयों के लिए Supreme Truth God और यहूदियों के लिए आखिरी मूसा भी हैं। उनकी महिमा का वर्णन इस दुनियां के क्षर शब्दों से सम्भव नहीं है, क्योंकि वह स्वयं शब्दातीत हैं, और वहां तक इस संसार के शब्द जा ही नहीं सकते।

बेहद को सब्द ना पोहोंचही, तो क्यों पोहोंचे दरबार।

लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार।

क० हि० प्र० २४ चौ० ४१

इस दुनियां के क्षर शब्द, जब योगमाया तक ही नहीं जा सकते तो परमधाम तक कैसे जा सकेंगे? अखंड रास के वर्णन में शुकदेव जी के द्वारा एक अक्षर भी नहीं बोला जा सका। उन्होंने प्रतिबिम्ब की लीला का ही वर्णन किया, तो फिर उसके भी परे अक्षर धाम और परमधाम का वर्णन करना कैसे सम्भव है?

धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं।

धनी के गुन को नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार।।

प्र० हि० प्र० ११ चौ० ७

श्री इन्द्रावती जी कहती है– उस धाम धनी श्री प्राणनाथ जी की मेहरबानियों को मैं कहां तक कहूं। मैं तो ना समझ हूं, इसलिए मैं ज्यादा कुछ नहीं जानती। धनी के गुण तो बेशुमार हैं, जिनकी कोई गिनती ही नहीं कर सकता।

Nijanand App

मैं केते नजरों देखे सही, पर गुन मुख से न सके कही।

ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेरें गिनी न जाएं।।

प्र० हि० प्र० ११ चौ० ८

मैंने अपनी नजरों से कई गुण देखें तो है, परन्तु वे मुख से कहे नहीं जाते। धरती के कण गिने नहीं जा सकते और न ही सागर की लहरें गिनी जा सकती हैं।

मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।

जदिप याको निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।।

प्रकाश हि० प्र० ११ चौ० ६

बादलों की वर्षा की बूंदें गिनी नहीं जा सकती। वनस्पतियों की संख्या भी गिनी नहीं जा सकती। यदि इनको गिन भी लिया जाए तो भी धाम धनी श्री प्राणनाथ जी के गुणों को गिनना कभी भी सम्भव नहीं है।

परमधाम में जो युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी हैं, वे ही श्री इन्द्रावती जी की आत्मा (श्री मेहराज जी के तन) में विराजमान होकर श्री प्राणनाथ जी के रूप में जांहिर हुए। इस जागनी के ब्रह्माण्ड में वे ही साक्षात पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री राजजी महाराज हैं।

श्री प्राणनाथ जी ही जागनी करते हैं – मूल मिलावे में एक श्री राजजी महाराज ही जागृत हैं, बाकी सत स्वरूप अक्षर ब्रह्म के ऊपर फरामोशी है, और आनन्द अंग श्यामा जी और सखियों की सुरता को नश्वर जगत में जीवों के तन में बैठा रखा है। अब उन आत्माओं को खेल के अन्दर ही उस अखण्ड परमधाम का पूर्णज्ञान देने के लिए स्वयं उन्होंने जागृत बुद्धि से जगाने के लिए इस कलियुग के ब्रह्माण्ड में संसार के ग्रन्थों के प्रमाण के हिसाब से आए और श्री देवचन्द जी को दर्शन दे कर स्पष्ट बता दिया कि परमधाम में सब की पर आतम पर फरामोशी है, इसलिए यहां पर सब फरामोशी में है, तो जो स्वयं सो रहा है, वह किसी को कैसे जगा सकता है? जागने वाला ही सब को जगा सकता है, इसलिए श्री देवचन्द्र जी के तन में केवल तारतम ला कर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत और अखण्ड ब्रज और अखण्ड वृन्दावन के रास के भेद खोले। उसके बाद दूसरे श्री इन्द्रावती जी के तन में बैठ कर स्पष्ट कर दिया कि मैं श्री इन्द्रावती जी के तन में साक्षात् बैठा हूं, ताकि किसी को भी कोई संशय न रह जाए, क्योंकि

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी के तन में उनको किसी ने पहचाना ही नहीं था। जब तक उनका कार्य पूरा नहीं हो जाएगा, तब तक न जाने कितने तनों में बैठकर जिस आत्मा से जितना काम लेना होगा, शोभा उसके तन को देकर कार्य स्वयं करेंगे और अपने सब कार्य (जो ग्रन्थों में कह रखे हैं) पूरे करने के बाद ब्रह्मसृष्टियों को साथ लेकर परमधाम जायेंगे।

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।

जो अंग सौपें इंद्रावती को, ताए प्रेमे खेलाऊं रंग।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० ६६

मैं श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विराजमान हूं। उनका तन मेरा ही तन है। जो भी श्री इन्द्रावती जी पर अपना तन मन अर्पण करेगा, उसे मैं प्रेम के रंग में खेलाऊंगा (सुख दूंगा)।

सुख देऊं सुख लेऊं, सुख में जगाऊं साथ।

इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० ६८

मैं सब तरह से सुन्दर साथ को सुख देता हूं, और लेता भी हूं। सुख में रखकर सुन्दर साथ को जगाता हूं। श्री इन्द्रावती जी को तो मैंने अपने नाम और श्रृंगार की शोभा बख्शी है। श्री मेहेराज जी का तन प्राणनाथ नहीं है, बल्कि उनके तन के अन्दर विराजमान श्री राज जी का स्वरूप ही प्राणनाथ है। उस तन के अन्तर्ध्यान हो जाने के बाद व्रत रखने की परम्परा शुरू हो गई, किन्तु धाम धनी श्री प्राणनाथ जी स्वयं कहते हैं–

मैं तुमारे कारने, जाए न सक्या पार इंड।

तुमको वतन पोंहोचाए के, कायम करूं ब्रह्माण्ड।।

तुम्हारे जागृत न हो सकने के कारण ही मैं तुम्हें छोड़ कर इस ब्रह्माण्ड से परे परमधाम नहीं जा सका। तुमको अपने निज घर पहुंचाने के बाद मैं इस ब्रह्माण्ड को भी अखंड कर दूंगा। अपनी आत्माओं को जगाने के लिए धाम धनी इस छठे दिन की लीला मोमिनों के अन्दर बैठकर कर रहे हैं।

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।

दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।।

Nijanand App

अब श्री राज जी ने हुक्म अपने हाथ में ले कर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं और मोमिनों के दिल में अर्श बना कर बैठ गए हैं, और जिस आत्मा के तन को शोभा देनी है, उस तन में बैठकर स्वयं जागनी का कार्य अपने हुक्म से कराते हैं। जब तक सभी आत्माएं जागृत नहीं हो जाती, तब तक वह किसी भी तन में बैठकर अपने हुक्म से जागनी करते रहेंगे।

मेरी फेरी लगी रहेगी, जब तक आतम नहीं जगेगी।

अपने स्वरूप की पहचान के सम्बन्ध में धाम धनी श्री प्राणनाथ जी कहते है–

जिन देख्या मेरे वजूद को, सो रहया बीच नासूत।
जिन जान्या मेरी आतम को, सो पोहोंच्या बीच लाहूत।।

अर्थात् जिसने केवल मेरे शरीर को ही देखा, वह इस नश्वर जगत में ही फंसा रहता है, लेकिन जिसने मेरे तन को न देख कर मेरे स्वरूप की पहचान कर ली, वह परमधाम पहुंच जायेगा।

श्री प्राणनाथ जी ने दज्जाल की शक्ति को समाप्त कर दिया है– दज्जाल की शक्ति बेशुमार है। काम, क्रोध, भ्रम, चतुराई, झूठ, रूप, रस आदि इसके हथियार हैं, इसके प्रभाव से बड़े बड़े ज्ञानी और ऋषि भी नहीं बच पाते हैं और ईमान से गिर जाते हैं। श्री प्राणनाथ जी के इस दुनियां में आने से उनकी मेहर से दज्जाल की शक्ति समाप्त हो गई है। जिन्होंने अपने को श्री प्राणनाथ जी के चरणो में समर्पित कर दिया, उनका यह दज्जाल बाल भी बांका नहीं कर सकता।

ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरबल।
सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल।।

सनंध प्र० ३१ चौ० ४०

दज्जाल ने सारी दुनियां को जीत कर उसे निर्बल, बेईमान बना दिया था अर्थात् किसी को भी सच्चे ईमान पर खड़ा नहीं रहने देता था। श्री प्राणनाथ जी ने सबको तारतम ज्ञान की शक्ति दे कर दज्जाल से छुड़ाया और बहिश्तों का अखण्ड सुख दिया।

Nijanand App

श्री प्राणनाथ जी ने ही सभी धर्म ग्रन्थों का गुझ रहस्य खोला है–

यद्यपि सभी धर्म ग्रन्थों में पारब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला सम्बन्धी सांकेतिक ज्ञान तो अवश्य है, किन्तु बिना तारतम ज्ञान के निराकार के परे की हकीकत आज तक कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं समझ सका था।

श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान परा शक्ति से धर्मग्रन्थों के सारे रहस्य खोल दिए, जिससे सबको बेहद और परमधाम की साक्षी मिल गई और उनके संशय भी दूर हो गए।

दुनिया चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब।।

खिलवत प्रकरण ११ चौ० ७३

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में धर्मग्रन्थों के छिपे हुए रहस्यों को आज तक किसी ने भी नहीं खोला था। उन धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि आखिर के जमाने में पारब्रह्म स्वयं आकर इनके छिपे हुए भेदों को खोलेंगे।

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।
याके मगज माएने हम पास, अन्दर आए खोले प्राणनाथ।।

प्रकास हि० प्र० ३७ चौ० १०२

कुरान और पुराण यह दोनों ही हमारी साक्षी देने वाले ग्रन्थ हैं। इनके गुझ भेद हमारे पास है, क्योंकि अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी हमारे अन्दर बैठ कर इनके गुझ भेदों को खोलते हैं।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेंदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।।

खुलासा प्र० १५ चौ० ४७

कुरान के छिपे हुए भेदों को श्री प्राणनाथ आखरूल जमां इमाम मेहंदी के बिना और कोई भी नहीं खोल सकता था। ऐसा कुरान में स्वयं पारब्रह्म श्री राजजी ने लिखवा दिया है तो फिर और कोई दूसरा कैसे खोल सकता था।

सभी महापुरूषों ने श्री प्राणनाथ जी का जमाना मांगा है--

अनेक ऋषि और भक्तजन इस २८ वें कलियुग में प्रगट होने वाले बुद्ध

Nijanand App

निष्कलंक अवतार पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की प्रतीक्षा कर रहे थे, कि हमें भी उस समय मानव तन धारण करके उनके चरणों में आने का अवसर मिल जाए, जिससे हम अखण्ड मुक्ति प्राप्त कर सकें।

प्रहलाद युधिष्ठिर वसुदेव, बलि रूकमांगद हरिचंद।
सगाल दधीच मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद।।

खुलासा प्र० १५ चौ० ४७

भक्त प्रहलाद, युधिष्ठिर, वसुदेव, राजा बलि, रूक्मागंद, हरिश्चन्द्र, सगाल, दधीचि और मयूर ध्वज आदि सभी कठोर कसनी करके बैकुण्ठ में बैठे हुए इसी दिन की राह देख रहे थे। अब वे भी आवागमन के चक्कर से छूट कर अखण्ड हो जाएंगे।

प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, दधीचि और राजा बलि का प्रसंग सतयुग का है, जबकि श्री कृष्ण द्वापर के अंत में प्रगटे हैं। इन महापुरूषों के द्वारा द्वापर के श्री कृष्ण जी की चाहना ना कर के अठाईसवें कलियुग में तन धारण करने की इच्छा पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की अपार महिमा को प्रदर्शित करती है।

सतवादी नाम केते लेऊं, कई हुए तरन तारन।
सत न छोड़या कई दुख सहे, सो या दिन के कारन।।

किरंतन प्र० ५५ चौ० १६

सत् की राह पर चलने वालों के कितने नाम गिनाये जाए। अनेकों ने इस संसार से निकलने के लिए प्रयास किया है। उन्होंने श्री प्राणनाथ जी के इस जमाने को पाने के लिए बहुत कष्ट सहा और सत्य की राह को इसी दिन के लिए नहीं छोड़ा।

श्री प्राणनाथ जी के चरणों में सभी पैगम्बर आए-

रसूल मुहम्मद साहब के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा पैगम्बर नहीं हुआ है, जिसने निराकार और बेहद से परे परमधाम और खुदा के दर्शन का वर्णन किया हो। साक्षात् पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के इस दुनियां में प्रगट होने पर उन सभी पैगम्बरों ने उनकी कृपा से अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्राप्त किया।

मूसा इबराहीम इस्माईल, जिकरिया एहिया सलेमान।
दाऊंदे मांग्या मेहेंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान।।

सिनगार प्र० १ चौ० ३६

Nijanand App

मूसा, ईब्राहीम, ईस्माईल, जिकरिया, यहिया, सुलेमान तथा दाऊद आदि पैगम्बरों ने भी आखरूल जमां इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी के जमाने में खुदा से मनुष्य तन देने के लिए विनती की है।

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक।

तब बद फैल की दुनिया, ताए लगसी आग दोजक।।

खुलासा प्र० ७ चौ० १२

इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी के साथ सभी पैगम्बर इकट्ठे होंगे और फिर बहुत बड़ा मेला होगा। उस समय संसार के बुरे काम करने वाले जीवों को पश्चाताप (दोजख़) की आग में जलना पड़ेगा।

श्री प्राणनाथ जी की मेहर से सभी निर्मल होंगे-

आज तक दुनियां के भक्तजन विभिन्न भाषाओं में पारब्रह्म के अलग–अलग नामों की कल्पना करके बंदगी द्वारा अपने को निर्मल बनाने का प्रयास करते रहे, लेकिन वे मैं खुदी (गुमान, अहंकार) को छोड़कर पूर्णरूप से निर्मल नहीं हो सके थे। अब श्री प्राणनाथ जी स्वयं प्रगट हो कर सबके विकारों को दूर करके निर्मल कर रहे हैं।

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।

मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

परिकरमा प्र० २ चौ० १२

अब परमधाम से पारब्रह्म श्री राज जी महाराज (श्री प्राणनाथ जी) आए हुए हैं। उन्होंने सारी सृष्टि का संशय मिटा कर निर्मल कर दिया। वे सबके अन्दर के मोह और अहंकार को मिटा कर सभी को बहिश्तों में अखण्ड सुख देंगे।

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहे।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्माण्डों नाहें।।

सनंध प्र० ३० चौ० ४३

आज तक असंख्यों ब्रह्माण्ड हो गए और अभी होंगे भी, लेकिन नूर महंमद आखरूल जमां इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी की महिमा (सिफत) के बराबर वाला कोई दूसरा किसी भी ब्रह्माण्ड में कहीं भी किसी के द्वारा सुना नहीं गया है, अर्थात् श्री प्राणनाथ जी की महिमा के समान महिमा वाला न तो आज तक कोई हुआ

Nijanand App

है और न भविष्य में कभी होगा।

श्री प्राणनाथ जी सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे–

अनादि काल से असंख्यों ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के एक पल से बनते रहे है, और नष्ट होते रहे हैं किन्तु यह पहला अवसर है, जब इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सभी जीव अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेंगे, जिसको आज दिन तक कोई भी प्राप्त नहीं कर सका था। ऐसा इसलिए होगा कि इस जागनी के ब्रह्माण्ड में सारे ब्रह्माण्डों के स्वामी (रब्बिल आलमीन) पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी आए हुए हैं।

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर।।

कलस हि० प्र० १८ चौ० ५

इस खेल का देखना तभी सच होगा, जब इस बार इसे अखण्ड करूं। अब तारतम वाणी के बल से अक्षर के पार अपना घर दिखाकर सारी अज्ञानता दूर करेंगे।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।
इनमें बात है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।।

बड़ा क्या० प्र० ६ चौ० १

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं– हे रूहों! परमधाम से तुम्हारे लिये ही फुरमान (कुरान) को मैं लाया हूं। इसमें मेरी हकीकत और तुम्हारी सारी बातें है।

जो साहेब किन देख्यां नहीं, न कछू सुनिया कान।
सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।।

किरंतन प्र० ६६ चौ० २५

जिस पूर्ण ब्रह्म को आज तक किसी ने भी नहीं देखा और न ही उनके बारे में किसी ने कुछ सुना, न कुछ कहा था, वे ही पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी स्वयं यहां आ कर इस सारी दुनियां को अखण्ड करेंगे।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर।।

Nijanand App

श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को अखण्ड मुक्ति दी और अक्षरब्रह्म और ब्रह्मसृष्टियों को जागृत किया। मोमिनों ने इस संसार को देखा है, इसलिए यहां के चर अचर सभी प्राणियों को मुक्ति का अखण्ड सुख दिया।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।

मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध।।

खुलासा प्र० १३ चौ० ६४

जिस के दिल में जैसा भाव रहा (पहचान हुई) उसको उसी रूप में श्री प्राणनाथ जी मिले। जिसके मन में जैसी भावना थी, वैसा ही स्वरूप धारण कर उसकी सारी मनोकामना पूर्ण की।

श्री प्राणनाथ जी सबका न्याय करेंगे-

छठे दिन की जागनी लीला समाप्त होने के बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय की लीला होगी। जिसमें आठों बहिश्तों सहित सारी दुनियां को पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का दर्शन होगा और चौदह लोकों के जीवों को बहिश्तों में अखंड किया जायेगा।

या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी।

तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी।।

प्र० हि० प्रगट वा. चौ० १०६

तौबा के दरवाजे बंद होने पर अर्थात् जागनी लीला समाप्त होने पर योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय के दिन, जिनकी जैसी करनी होगी, वह सब के आगे आयेगी और भली बुरी के अनुसार वैसा ही फल मिलेगा।

खसम के आगे अब क्यों उठावें सिर।

सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर।।

सनंध प्र. २६ चौ० २६

जागनी लीला में जिन जीवों ने पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं, की वे न्याय के दिन श्री प्राणनाथ जी को सिंहासन पर विराजमान देखकर उनके सामने सिर नहीं उठा पायेंगे, क्योंकि उस समय उनके सारे अंग पश्चाताप से जल रहे होंगे और वे हाय–हाय कर रहें होंगे।

Nijanand App

इन सरुप की इन जुबां, कही न जाए सिफत।

सब्दातीत के पार की, सो कहनी जुबाँ हद इत।।

बीतक साहब प्र० ६२ चौ० ८

बेहद (शब्दातीत) से परे उस परमधाम में विराजमान श्री राजजी के स्वरूप हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी की महिमा को इस झूठी दुनियां में इस जुबान से कदापि कहा नहीं जा सकता है।

वे पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी ही हैं, जो अपनी आत्माओं को जरा भी कष्ट नहीं होने देना चाहते। वे अपनी रूहों से कहते हैं–

अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन।

ऊपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।।

क० हि० प्र० २३ चौ० ४

हे साथ जी! एक फूल की पंखुड़ी से मारने में जितना कष्ट होता है, मैं अब आप को उतना भी कष्ट नहीं होने दूंगा। मैं तुम्हें प्यार भरी ठंडी नजर से देखूंगा। तुम्हारे सभी अंगों में सुख का अनुभव कराऊँगा और बड़े प्यार से बुलाऊँगा।

मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं।

ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं।।

क० हि० प्र० २३ चौ० १८

मैं तुम्हारे मुरझाए हुए मुख को भी नहीं देख सकता। यद्यपि इस संसार के दुःख तुम्हें सुख की लज्जत देंगे, तो भी मैं तुम्हें दुःख नहीं दे सकता।

दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम।

इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम।।

खि० प्र० १० चौ० ४५

हे श्री राजजी! हमारे दोनों तन (आत्मा का संसार में और परआतम का परमधाम में) आपके चरणों में ही है। इसमें अब कोई संशय नहीं है। आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान से यह समझ आ गई है।

Nijanand App

मोमिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान।

इन गुन्हेंगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान।।

खु. प्र. ३ चौ. ७०

कुरान में लिखा है कि मोमिन जो अर्श के मोती हैं, उनके मुंह पर ताला लगा है अर्थात् फरामोशी में बैठे ऐसे गुनहगार मोमिनों (खेल मांगने के कारण) के दिल को श्री राजजी (श्री प्राणनाथ जी) अपना अर्श करके बैठे हैं।

आसिक मेरा नाम, रूह अल्ला आसिक मेरा नाम।

इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।।

खि० प्र० १५ चौ० १

हे श्यामा जी! मेरा नाम आशिक है। मेरा इश्क रूहों से हैं और रूहों के सुख में ही मेरा सुख है।

अब बिछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए।

अब नेक वाओ इन माया की, जानों जिन आवे ताए।।

क० हि० प्र० २३ चौ० १५

अब मैं सुन्दर साथ से एक पल की भी जुदायगी सहन नहीं कर सकता। मैं यही चाहता हूं कि तुम्हें माया में थोड़ा भी दुःख न हो।

प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।

मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।।

क० हि० प्र० २३ चौ० १७

हे सुन्दर साथ जी! तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो और मेरी नूरी अंगना हो। इस खेल को देखकर तुम्हारे मन दुःखी होते हैं। उन सारे दुःखों को अब मैं दूर कर दूंगा।

अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग।

सुख देऊं भली भांत सो, ज्यों होए न बीच में भंग।।

क० हि० प्र० २३ चौ० ३६

इस दुनियां में जब भी तुम्हें दुःख आयेगा, तो वहां पर मैं तुम्हारे दुःख अपने ऊपर ले लूंगा। मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह से सुख से सराबोर रखूंगा, जिससे तुम्हारे सुख में रूकावट न पड़े।

Nijanand App

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल।

ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।

खि० प्र० ११ चौ० ७

तुम सभी रूहें मेरे तन हो और मैं तुम से दिल से कितना इश्क करता हूं, इसका ब्योरा तुम सभी मिल कर भी परमधाम में विचारो, तो भी तुम्हारी समझ में नहीं आ सकता।

दुनी जुदे तुमे तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझसें।

हम तुम होसी भेले जाहेर, अपन वाहेदत हैं अर्स में।।

सिनगार प्र० २६, चौ० ७२

यदि तुम मुझसे अलग होते तो दुनिया तुमको अलग समझती। मैं और तुम एक साथ जाहिर होंगे। परमधाम में अपने निज स्वरूप के समान ही मैं तुम्हारे जीवों को योगमाया में सबका खुदा बनाऊंगा।

मैं तेहेत-कबाए तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन।

तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन।।

सिनगार प्र० २६, चौ० ७३

मैंने तुमको अपने दामन (चरणों तले) के नीचे मूल मिलावे में छिपाकर रखा है, जहां मेरे सिवाय और कोई भी नहीं है। अब अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर होने से सब दुनिया वाले तुमको देखेंगे और तब दुनिया को अखण्ड परमधाम की पहचान होगी।

मैं लिख्या है तुमको, जो एक करो मोहे साद।

तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।।

सिनगार प्र० २६, चौ० २३

मैंने कुरान में लिखा है कि यदि तुम केवल एक मुझे ही (सबको छोड़कर) रिझा लो तो मैं तुम्हारे आगे दस बार जी–जी करके तुम्हें याद करूंगा।

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।

मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।।

सिनगार प्र० २६, चौ० २

Nijanand App

मैं तुम्हारा आशिक हूं। ये इश्क के शब्द मैंने कुरान में लिखे हैं। मैनें तुम्हें अपना माशूक करके लिखा है। इन वचनों पर भी तुमने ध्यान नहीं दिया।

वह अखण्ड, अद्वैत, आत्माओं के मूल पति, पूर्णब्रह्म, सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी अब इस दुनिया में जाहिर हो चुके हैं। उनको न पहचान कर यदि हम माया की फरोमाशी में ही भूले रहे और अपने दिल को अर्श बनाकर आत्मिक सुख नहीं लिए, तो इस ब्रह्माण्ड में हमारा आना ही व्यर्थ है।

यह दसवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

ग्यारहवीं तरंग

श्री कुलजम स्वरूप की महिमा

अनादि काल से अक्षर ब्रह्म की इच्छा से करोड़ों बार यह दुनियां बनी और मिटी, बनती और मिटती भी रहेगी, परन्तु इस ब्रह्माण्ड से पहले और बाद में न तो किसी ब्रह्माण्ड में यह निज बुद्धि का ज्ञान आया और न फिर आयेगा। इसके बिना अक्षर ब्रह्म भी यह नहीं जान सके थे कि अक्षरातीत पूर्णब्रह्म के धाम में कौन सी इश्कमयी लीला होती है और परमधाम की आत्माएं भी परमधाम में रहते हुए अपने धनी श्री श्यामा श्याम की साहेबी और इश्क क्या है? को नहीं जान सकी और ना ही अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण के चारों भाग अव्याकृत, सबलिक, केवल ब्रह्म, और सत्स्वरूप को भी अक्षरातीत की कुछ सुध थी। तो जिन बातों का ज्ञान अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण की शक्तियों को नहीं था तो आदि नारायण और त्रिदेवा को कहां से होता? तो जो ज्ञान यहां के परमात्मा को भी नहीं था तो धर्म ग्रन्थों के आचार्यो, गुरूओं को, पंडितों को और विद्वानों को कहां से पता चलता कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? तभी तो उस सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म को इस मिटने वाली माया के ब्रह्माण्ड में जो असत्य, जड़ और दुःख का रूप है और सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म के गुणों के उल्टा है, अपने अटकल के ज्ञान की चतुराई से कोई कण कण में, कोई निराकार, कोई साकार, कोई पिंड में, कोई ब्रह्माण्ड में, कोई जल में, कोई थल में, कोई कर्म में, कोई काल में उसे व्याप्त बताता रहा, लेकिन फिर भी उन्हें पारब्रह्म के ज्ञान के प्रति सन्तुष्टि नहीं मिली, क्योंकि यह अव्याकृत के, जो योगमाया में अक्षर ब्रह्म के मन के अखंड की शक्ति का स्वरूप है, उसके सपने में ब्रह्माण्ड बनता और मिटता रहता है, इसलिए स्वप्न के अंदर बने हुए आदि नारायण और त्रिदेवा को सपने से परे जागृत अखंड योगमाया के ब्रह्माण्ड का किस तरह से पता चलता, जब योगमाया के ही ब्रह्माण्ड का पता ही नहीं चला, तो अक्षर–अक्षरातीत का ज्ञान कैसे हो जाता? यह यहां के त्रिदेवा और आदि नारायण को पता था और है कि पराशक्ति जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के बिना कोई भी सच्चिदानन्द के स्वरूप

Nijanand App

की पहचान नहीं करवा सकता।

"तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणम्।" गीता में भी श्री कृष्ण ने कह दिया कि पराशक्ति के ज्ञान के बिना उत्तम पुरूष अक्षरातीत को नहीं जाना जा सकता।

भा० १०/८७/१६ में व्यास जी ने कह दिया कि जब तक कलियुग में अक्षरातीत अपनी आत्माओं के साथ नहीं आते और तारतम ज्ञान नहीं लाते तब तक क्षर अक्षर और अक्षरातीत के भेदों का निबेरा कोई भी नहीं कर सकता। पूर्णब्रह्म स्वयं कलियुग में आयेंगे और अपने साथ जागृत बुद्धि का ज्ञान लायेंगे। अथर्ववेद में मुंडकोनिषद् में लिखा है कि परा विद्या के द्वारा ही अक्षर को जाना जा सकता है। कुरान में भी लिखा है कि इलमें लदुन्नी (श्री कुलजम स्वरूप) के आये बिना अर्शे अजीम और अल्लाह ताला के राज़ कोई नहीं बता सकता और बाइबिल में भी ईसा मसीह ने साफ लिखा है कि अल्ला ताला की आवाज अर्थात् वाणी को उनकी आत्मायें ही पहचानेगीं और उनके साथ निज बुद्धि का फरिश्ता असराफील सारा ज्ञान कहेगा।

जब सारी दुनियां को यह पता चल गया कि पराविद्या जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान के बिना पारब्रह्म की पहचान नहीं हो सकती और उनकी पहचान के बिना कोई भी भवसागर से पार नहीं हो सकता तो कईयों ने सात सात कल्पांत तक तपस्याएं भी की, कईयों ने इस वाणी के वास्ते आग पी, कईयों ने देह दमन किया। कईयों ने कष्ट सहे, कई बर्फो में जा कर गले, कइयों ने अनशन (उपवास) का नियम लिया। कई पहाड़ों से गिरे, कईयों ने देह को तिल तिल कटवाया। कईयों ने बड़ी बड़ी साधना भी की और अपने देह को भी जला डाला।

स्वकृतविचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया।
तरतमतश्चकास्स्यनलवत् स्वकृतानुकृतिः।
अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम समं।
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव एकरसम्।।

भा० १०/८७/१६

Nijanand App

किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन।
ब्रह्माण्ड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन।।

प्रकास हि० प्र० ३१ चौ० १०१

अर्थात् किसी ने भी उस जागृत बुद्धि के ज्ञान के सागर में से एक बूंद भी प्राप्त नहीं किया। इतना करने पर भी इस ब्रह्माण्ड के मालिक त्रिदेवा एक शब्द भी नहीं पा सके।

ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और।
आद करके अबलों, किन कहया ना पिया ठौर।।

कलस हि० – प्र० १० चौ० – १०

यह जो जागृत बुद्धि तारतम की वाणी है, यह उस पारब्रह्म के मुखारविन्द की वाणी है न की किसी और के शब्द हैं। आदि से अब तक कोई भी पारब्रह्म के लिए एक शब्द भी नहीं कह सका।

ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए।
जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए।।

कलस हि० – प्र० १० चौ० ११

यह अकथ ज्ञान पारब्रह्म के हुक्म के बिना कोई भी एक शब्द नहीं कह सकता, इसलिए आज दिन तक कोई भी नहीं कह सका। यदि और किसी की कही हुई बात कही जाए तो पारब्रह्म के निजघर की सुध कैसे होती? क्योंकि उस दिव्य ब्रह्मपुर धाम में तो वह पारब्रह्म स्वलीला अद्वैत है। इसलिए सबसे बड़ी पहचान उस पूर्णब्रह्म प्राणनाथ की यही है कि जब वह आयेंगे तो उनके साथ दो फरिश्ते––

जबराईल (पराशक्ति) जागृत बुद्धि का ज्ञान जो क्षर अक्षर और अक्षरातीत के भेद खोलेगा और असराफील जो निज बुद्धि का फरिश्ता है हकीकत, मारफत, खिलवत और वाहेदत के भेद खोलेगा तो समझ लेना कि पारब्रह्म दुनियां में इन शक्तियों के साथ आ चुके हैं और आ कर अपनी जुबान से अपने निजघर के आनन्द की लीला, अपने सत् चिद्घन और आनन्द के स्वरूप की पहचान करा रहे हैं।

Nijanand App

ए नूर बका किने न पाइया, कर कर गए सिफत।

ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत।

खिलवत – प्र० ६ चौ० १०

ब्रह्मा, विष्णु, शिव और अन्य भी महिमा गाते–गाते थक गए, लेकिन वे उस अक्षर ब्रह्म को नहीं जान सके, किन्तु जो परमधाम का ज्ञान (खिलवत, वाहेदत) है, उसकी सुध अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है। (श्री कुलजम स्वरूप साहिब में परमधाम का ज्ञान भरा पड़ा है)।

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें।

और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने मांहे।।

खिलवत प्र० १० चौ० ३३

श्री इन्द्रावती जी कहती है कि अक्षरातीत धाम धनी ने इस सपने के ब्रह्माण्ड में मुझे जो अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया है, वह न तो चौदह लोकों में कहीं है औन न अक्षर धाम में ही है (अर्थात् श्री मुखवाणी कुलजम स्वरूप के ज्ञान के समान न तो आज तक कोई ज्ञान अवतरित हुआ है और न कभी भविष्य में होगा, क्योंकि यह साक्षात् पारब्रह्म अक्षरातीत के मुखारविन्द की वाणी है।)

त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम।

सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम।।

सिनगार प्र० २ चौ० ३५

तीनों लोकों (पृथ्वी, स्वर्ग, बैकुण्ठ) में ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि किसी के भी पास बेशक ज्ञान नहीं था। सब का ज्ञान संशय भरा था। यही धनी का प्यार है कि जिन्होंने हमारे लिए जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया है, जिससे किसी भी तरह का संशय नहीं रहता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बुझ्या जाए।

हक खिलवत बातें गैब की, दे अर्स दिल मोमिन बताए।।

मा० सा० प्र० १६ चौ० ६

Nijanand App

परमधाम की गुझ बातें बिना निज बुद्धि के ज्ञान के समझी नहीं जा सकती। पारब्रह्म अक्षरातीत के खिलवत खाने की गुझ बातें उन मोमिनों को ही पता होती है, जिनके दिल को अर्श बनाकर श्री राजजी बैठे होते है।

सक सुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन।

ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिन।।

मा० सा० प्र० १७ चौ० ३४

पारब्रह्म के ज्ञान (श्री कुलजम स्वरूप के बिना) किसी का भी संशय दूर नहीं हो सकता। इस चौदह लोकों के सभी मनुष्य, देवता, फरिश्ते और जिन्न मिल जायें तो भी संशय रहित ज्ञान न तो प्राप्त कर सकते हैं और न ही उनका संशय दूर हो सकता है।

सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए।

ऐसा इलम लदुन्नी, रूह अल्ला ले आए।।

मा० सा० प्र० १७ चौ० ११७

श्री श्यामा जी ऐसा तारतम ज्ञान ले आई हैं, जिससे रूहों को यह पहचान हो जाती है कि उनके धनी और उनका परमधाम सेहेरग (गले की प्राण नाली) से भी अधिक नजदीक है। श्री कुलजम स्वरूप का यही खुदाई इलम उन्हें परमधाम और हक की पूरी पहचान करा देता है।

ऐसी हजारों चौपाइयां श्री कुलजम स्वरूप में जो श्री प्राणनाथ जी ने अपने मुख से कही है। जिनसे कोई भी भाषा, भेष और जुदा जुदा परमात्मा बना कर बैठने की संकुचित भावना को दूर कर, आत्म तत्व से विशाल हृदय वाला होकर सब मानवों को एक मानने लगता है और इस अखंड वाणी के आने से पहले संसार में हिन्दुओं के अंदर उनके परमात्माओं ने जो ग्रन्थों में उनको ज्ञान दिया तो उनसे यही ज्ञान पता चला कि–

"मानने वाले जो राम के हैं, उनको इसलाम से बू आती है।

मानने वाले जो इसलाम के हैं, उनको भगवान से बू आती है।।"

Nijanand App

कौन चलेगा या खुदा तेरे नक्शे कदम पर।

यहां इन्सान को इन्सान से बू आती है।।

यह सिखाया रामायण और भागवत के छूआछूत के ज्ञान ने और उससे भी ज्यादा विष संस्कृत के ज्ञान ने चढ़ाया, जिसने केवल श्री कृष्ण को ही पूर्णब्रह्म बताया।

और संस्कृत के पढ़ने वालों ने संशय की ही कृति वाली भाषा पढ़ कर अपने जीवन को संशयों में डालकर नष्ट कर दिया है, क्योंकि–

बारे तरफों बोलत, एक अखर एक मात्र।

ऐसे बांध बत्तीस श्लोक में, बड़ा छल किया है सास्त्र।।

कलस हि० प्र० १७, चौ० ८

संस्कृत में एक अक्षर की १२ मात्राओं को मिलाकर १२ प्रकार से बोलते हैं और बत्तीस अक्षर जोड़कर श्लोक बना लेते हैं। इस प्रकार शास्त्रों में छल भरा है।

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बतीस।

छल एते आड़े अर्थ के, और खोज करें जगदीस।।

क० हि० प्र० १७ चौ० ६

एक अक्षर की १२ मात्राएं होती है और एक श्लोक में ३२ अक्षर होते हैं। इस प्रकार ३८४ अर्थ एक ही श्लोक के होते हैं। ऐसे ग्रन्थों की सहायता लेकर परमात्मा की खोज करना व्यर्थ है।

जाको नामै संस्कृत, सोतो संसे ही की कृत।

सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत।।

क० हि० प्र० १७ चौ० ११

संस्कृत भाषा संशय की ही भाषा है, जिसमें एक श्लोक के ३८४ अर्थ होते हैं, तो इस प्रकार एक सत्य अर्थ में दृढ़ता कैसे हो सकती है?

Nijanand App

संशय से भरा हुआ ज्ञान दुःखदायी होता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण अंग्रेजों के जमाने मे सती प्रथा के उस मुकद्दमें से मिलता है, जो लार्ड विलियम बैंटिक, राजा राम मोहन राय और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के द्वारा सती प्रथा के विरोध में किया गया था। सतीप्रथा को समर्थन देने वाले पंडितों ने एक मन्त्र में जालसाजी करके "**अग्रे कृतम**" को **"अग्ने कृतम्"** कर दिया था।

इस जालसाजी को ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने पकड़ा और प्रमाणों सहित जज के सामने पेश किया। जिसके कारण मुकद्दमें में उनकी जीत हुई और देश से सती प्रथा का कलंक हटा। एक बिन्दुमात्र की जाल साजी से जहां आगेवान करने का अर्थ होता है, वहां आग में जलाने का अर्थ किया गया था और निर्दोष विधवाओं को जबरदस्ती आग में जलाया जाता था।

इस प्रकार की संशय पैदा करने वाली भाषा के कारण ही आज तक हिन्दू मानव इन पंडितों के पीछे लग कर अपना सर्वनाश कर बैठे हैं। दोष इन पंडितों को भी नहीं है। इनको त्रेता युग से श्राप मिला हुआ है कि कलियुग में जो नीच से नीच दुष्ट कार्य होगा, वह ब्राह्मणों से होगा। माहेश्वर तन्त्र में भारद्वाज ऋषि का श्राप यही बात सिद्ध करता है। फिर यह ऐसा कार्य क्यों करते है? क्योंकि इस कर्म के बिना इनकी जीविका–पालन का कोई साधन भी तो नहीं है। फिर इस भाषा के ज्ञान से इन सबको खुद ज्ञात हो जाता है कि परमात्मा तो सब का एक है। तो आज अपनी संकीर्णता के कारण यह केवल श्री कृष्ण को ही पूर्णब्रह्म कहते हैं। क्योंकि कृष्ण तो केवल हिन्दुओं के है। श्री कृष्ण को पूर्णब्रह्म न तो कुरान कहता है, ना बाइबिल और न गुरू ग्रन्थ साहिब की वाणी ही कहती है, लेकिन श्री प्राणनाथ जी की पहचान संसार के सभी धर्मग्रन्थों में कही है। जिसके भेद इस संसार की कोई भी भाषा नहीं खोल सकी और उन्होंने सभी ग्रन्थों के छिपे भेद परा विद्या जागृत बुद्धि के ज्ञान से खोल कर सभी ग्रन्थों का एकीकरण कर (एक कर) एक पूर्णब्रह्म की पहचान कराई। यह बल केवल तारतम वाणी में ही है, जिसके बिना सारा संसार आज दिन तक वीरान था, और आपस में भाषा भेद, जाति भेद और इसी प्रकार सब मुल्ला और काजियों का भी यही हाल है। ये लोग पेट के लिए ही शरीयत पाल रहे हैं।

Nijanand App

पढ़े सो भी पेट कारने, और पालने कबीले।

दुनियां को देखावहीं, आगूं चल के ए।।

किरंतन १०८/३६

अलग अलग परमात्मा बना कर मानव आपस में धर्म की आड़ में लड़ रहे थे और धर्म की आड़ में रोजगार का धन्धा बना बैठे थे। इसलिए उस पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने आकर कौन सी भाषा बोली और क्या कहा?

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।

सबको सुगम जान के, कहूंगी हिंदुस्तान।।

सनंध प्र० १ चौ० – १५

इस दुनियां में बेहिसाब बोलियां (भाषाएं) है। लेकिन इनमें हिन्दुस्तानी भाषा को सबसे सरल जान कर इस भाषा में ही अपनी वाणी कहूंगी।

भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल।

भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल।।

सनंध – प्र० ३ चौ० १

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि इस दुनियां की अलग अलग भेष–भाषाओं में नहीं फंसना चाहिए। मूल हकीकत को जाहिर करना है। अब श्री प्राणनाथ जी के हकीकी ज्ञान की ज्योति उदय हो चुकी है। जिससे सब ग्रन्थों के मायने खुल कर एक पारब्रह्म की सच्ची पहचान हो गई।

इसलिए संसार की झूठी भाषाओं और मिथ्या ग्रन्थों के ज्ञान को छोड़कर उस सच्चिदानन्द के स्वरूप की पहचान और हर मानव के लिए एक आत्मीयता का सच्चा भाव जो सिखाए, उस वाणी को ले कर अपनी, समाज की, देश की और सारे विश्व की शान्ति का निर्माण और प्रचार–प्रसार करना ही सच्ची मानवता का रास्ता है, जो हर मानव का कर्तव्य है।

बाइबिल में भी कहा है– यदि हम हिन्दू, मुसलमान या ईसाई है लेकिन आत्मा तो न हिन्दू है, न मुसलमान है, न इसाई है, जिसको श्री प्राणनाथ जी ने कहा है–

Nijanand App

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।

दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।।

सनंध ४०/४२

हिन्दू कहते हैं कि हम उत्तम हैं और मुसलमान कहते हैं कि हम पाक (पवित्र) हैं। इन दोनों का मूल परमात्मा एक ही है। परन्तु यहां शारीरिक कर्मकाण्ड से जुदा–जुदा होकर मरने पर भी एक अग्नि में जला कर राख कर देते हैं और एक मिट्टी में दबा कर खाक कर देते हैं। दोनों ही हकीकत से गुमराह है। श्री प्राणनाथ जी इस वाणी में कहते हैं–

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।

सबमें उमत और दुनिया, सोई खुदा सोई ब्रह्म।।

खुलासा १२/३८

सब ने उस परमात्मा के अलग अलग नाम रख लिए और अलग अलग रस्में (रीति रिवाज़) चला लिए। दुनियां की सभी जातियों का परमात्मा एक ही है, उसी को कोई खुदा कहता है और कोई पारब्रह्म कहता है।

करना सारा एक रस, हिन्दू मुसलमान।

धोखा सबका भान के, सबका कहूंगी ग्यान।।

सनंध प्रकरण ३ चौ० ३

मुझे हिन्दू मुसलमान सब को एक रस करना है। इसलिए सब का धोखा हटाने के लिए परमधाम का ऐसा ज्ञान कहूँगी, जिससे सब ग्रन्थ एक रस हो जायेंगे।

अब यह पढ़ कर संशय भी आता है कि इतना बड़ा कार्य तो दुनियां में हो ही नहीं सकता। ऐसा सोचना तो सपने की बुद्धि से ही सम्भव है। उस पारब्रह्म

If you are Hindu, Muslim, Christian or something as by body not by soul.

Nijanand App

के सत् अंग के एक पलक की शक्ति का अनुमान लगायें तो यह संशय मिट जायेंगे कि वह अक्षर ब्रह्म एक पल में करोड़ों ब्रह्मांड बना कर मिटा देते हैं तो वह पूर्ण ब्रह्म असम्भव को भी सम्भव कर देंगे।

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन।

तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन।।

सनंध २२/५०

उस पार ब्रह्म की इतनी बड़ी शक्ति है कि यदि उसकी एक किरण निकल गई, तो उनकी वाणी से सारे संशय मिट कर एक पल में सारी दुनियां एक रस हो जायेगी और सारे मानव एक पारब्रह्म के गुण गायेंगे।

यह ग्यारहवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

बारहवीं तरंग

श्री पद्मावती पुरी धाम की महिमा

आज सारे विश्व में पुण्य और पवित्र धर्मस्थल भारत है और इसमें अनेक तीर्थ और धर्मस्थान हरिद्वार, काशी, प्रयागराज, मथुरा, अवन्तिकापुरी (उज्जैन), शारदामठ, कांचीपुरी, रामेश्वरम्, श्रीनाथ धाम, पुष्कर, अजमेर, बद्रीनाथ, पारसनाथ, रंगनाथ इत्यादि हजारों स्थान हैं, लेकिन कहीं से भी ८४ लाख योनियों में भटकने के बाद जीव को मनुष्य तन मिलने पर उस पूर्णब्रह्म उत्तम पुरूष के ज्ञान को सुन कर समझ कर भवसागर से पार होने का ज्ञान ऊपर दिये हुए किसी भी स्थान से नहीं मिलता था। धन्य धन्य भरतखण्ड और धन्य धन्य यह कलियुग, जिसमें पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी का आना लिखा था। हिन्दुओं की जितनी पुरियां थी, उन सबमें से उत्तम होने का सौभाग्य नवा नगर नौतनपुरी (जामनगर) को मिला। जहां परमधाम से पारब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्यामा महारानी उमरकोट से श्री देवचन्द्र नाम के तन को धारण कर २६ वर्ष तक कई घोर कष्ट उठाकर उस पारब्रह्म की खोज में ढूंढ़ते ढूंढ़ते सम्वत् १६६४ में नवतनपुरी पधारीं। चौदह वर्ष वल्लभाचार्य मत के धर्माचार्य कान्ह जी भट्ट से श्रीमद्भागवत को सुना, समझा और मनन करके रहनी में लाए, परन्तु केवल योगमाया में नित्य वृन्दावन में राधा कृष्ण है, यहां तक पहुंचे। उसके आगे का ज्ञान था ही नहीं, केवल कलियुग में जब पूर्णब्रह्म अपने आवेश स्वरूप से श्री देवचन्द्र जी को श्याम जी के मन्दिर में जागृत बुद्धि पराविद्या तारतम के ज्ञान से क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के भेद समझा कर संवत् १६७८ में जागृत बुद्धि लेकर उनके हृदय में विराजमान हुए, तब वहां माया और ब्रह्म, क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के भेद और नित्य वृन्दावन कहां है? और उसकी लीला, क्या है? यह सारी हकीकत खुल गई। इसलिए हिन्दुओं की उस समय की सब पुरियों में से उत्तम और धन्य धन्य नौतनपुरी कहलाई, जहां पारब्रह्म स्वयं उतरे और वाणी का अवतरण वहां शुरू हुआ।

श्री देवचन्द्र जी के तन में लीला करने के बाद अपनी आवेश शक्ति के साथ श्री मेहेराज ठाकुर के तन, श्री इन्द्रावती जी की आत्मा में सम्वत् १७१२ में विराजमान हुए और कुरान के कथनानुसार सम्वत् १७१२ में श्री देवचन्द्र जी

Nijanand App

की जाहिरी गादी पर उनके नसली पुत्र बिहारी जी को बिठाया गया। जिनकी ईर्ष्या के द्वारा सम्वत् १७१५ में मेहेराज ठाकुर को हब्सा जेल में जाना पड़ा। वहां उस तन में बैठी इन्द्रावती जी की तड़पती आतम को साक्षात् युगल स्वरूप ने कहा कि विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक का जाहिर होना, आखरूल जमां ईमाम मेहंदी के स्वरूप में कयामत के सातों निशानों का जाहिर करना तथा दिव्य ब्रह्मपुर की हकीकत, मारफत, खिलवत, वाहेदत का ज्ञान उतरना, यह सब तुम्हारे तन में विराजमान होने के बाद होगा। फिर वहाँ कुलजम स्वरूप की वाणी का अवतरण शुरू हुआ। जिससे वहाँ रास, प्रकास, खटरूती उतरी। जिस वाणी को लेकर मेहराज अब हादी, मेहंदी, इमाम और प्राणनाथ जी के रूप में उस बिहारी जी महाराज के पास गये, जो श्री देवचन्द्र जी की गादी पर बैठकर यह समझ बैठे थे कि अब मैं ही अक्षरातीत हूँ। अपने झूठे अहंकार के कारण उस इल्मे इलाही जागृत बुद्धि के द्वारा उतरी, तीन किताबों को पढ़कर गुजराती भाषा में होने के कारण समझ गए कि यदि ये वाणी सुन्दर साथ में जाहिर हो गई तो कोई भी मेरी पूजा नहीं करेगा। इस स्वार्थ के कारण बिहारी जी ने वहाँ वाणी का पसारा नहीं होने दिया। तब वहां से अपनी आत्माओं को जगाने के लिए पूर्ण ब्रह्म अपनी सब शक्तियों को लेकर व मेहराज ठाकुर के तन को लेकर वहां से निकले। दीपबन्दर, ठट्ठानगर, मस्कत बन्दर, अवासी, नलिए होते हुए सूरत पहुंचे। तब तक इस वाणी के अनुयायी सुन्दर साथ यही समझते रहे कि गादीपति बिहारी जी ही पूर्णब्रह्म हैं, परन्तु इस अंधकार और झूठे गुमान कि गादी पर जो बैठा था, वह केवल दिखावा मात्र था। जिसको श्री प्राणनाथ जी ने जब अपने स्वरूप की पहचान बड़े–बड़े भीम भट्ट, गोविन्द व्यास जी, जो वल्लभाचार्य मत के अनुयायी थे, और अन्य वेदान्ताचार्यों को कराई तो उन्होंने स्वामी जी के मुखारविन्द से चर्चा सुनकर उनको पारब्रह्म के स्वरूप में पहचाना और सुन्दरसाथ को इस बात की पहचान भी हो गई कि नवतनपुरी की गादी केवल एक रूई की मात्र गादी है, जहाँ से श्री देवचन्द्र जी के बाद न कोई गादी है और न तारतम का प्रचार हुआ। सबने स्वामी जी की वाणी से समझ लिया कि पूर्णब्रह्म युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी का ठिकाना मोमिनों का दिल है, जो श्री इन्द्रावती जी के

केन पद्मावती नद्योरन्तिके विन्ध्य पर्वते।

इन्दिरा नाम सा देवी भविष्यति कलौयुगे। सुन्दरी तन्त्र

Nijanand App

दिल में, साक्षात् प्राणनाथ जी के रूप में विराजमान हैं, ऐसा मानकर सब सुन्दर साथ ने उनको पहचाना तथा चरणों में समर्पित हुए और वहां सूरत में उनको (प्राणनाथ जी को) गादी पर बिठाया गया।

जिसका प्रमाण नवरंग स्वामी जी कृत बीतक चौ० ११ से १७ में स्पष्ट कहा है।

"थाप्यो प्रथम निजानन्द थानों, पुरी सूरत इत मानों।

साखा निजानन्द मत जेही, थापी प्रथम नाद इत तेही।।"

इसका प्रमाण आज भी बलसाड मन्दिर में लिखित रखा हुआ है, फिर वहां से आगरा, मथुरा, दिल्ली, हरिद्वार में सम्वत् १७३५ में कुम्भ के मेले में सबने "श्री निजानन्द सम्प्रदाय" के ज्ञान से उनको श्री विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार मानकर उनकी ध्वजा को लहराया और कुरान के फरदा रोज के ग्यारहवीं सदी के अनुसार औरंगजेब के काजियों ने सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया कि आखरूल जमां ईमाम मेहंदी आए हैं, परन्तु उन्होंने जाहिर नहीं किया। तब वहां से अपनी ब्रह्मसृष्टियों को जगाते हुए उदयपुर, मन्दसौर, उज्जैन, औरंगाबाद, आकोट, रामनगर, गढ़ा (जबलपुर) से अगरिया होते हुए पन्ना मध्य प्रदेश सम्वत् १७४० में पहुंचे। जहां छत्रसाल जी चौपड़े की हवेली में अपनी रानियों के साथ रहते थे। इस पवित्र स्थान पर पूर्णब्रह्म अक्षरातीत कलियुग में आएंगे, इसका प्रमाण पहले से शास्त्रों में लिखवा दिया था और परमधाम से उतरने से पहले इसी स्थान को अपना धाम बनाना निश्चित कर लिया था, इसलिए जब अगरिए से होकर पन्ना पहुँचे तो सब से कह दिया कि अब आगे नहीं जाना है। यहीं पर जागनी का झंडा गाड़ना है। यही पर ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि की ३६००० आत्माओं का मेला होगा। यह स्थान हिन्दुओं के लिए मुक्ति धाम और मुसलमानों के लिए दरगाहे मुकद्दस होगा।

सुन्दरी तन्त्र में शंकर जी ने कहा है कि केन और किलकिला (पद्मावती) नदी के निकट विन्ध्याचल पर्वत की धरती पर पद्मावतीपुरी में इन्द्रावती नाम की आत्मा कलियुग में होगी। जिसके अंदर बैठकर साक्षात् अक्षरातीत लीला करेंगे।

चले अगरिए से, परना पहुँचे आए।

डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित ल्याए।।

Nijanand App

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस आए।

तिन में सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।

बी० सा० प्र० ६० चौ ११, १२

आज भी उस पूज्य स्थान पर बैठकर छत्रसाल जी को तारतम ज्ञान से चर्चा सुनाकर अपनी पहचान कराई, और पांचवे दिन की लीला बुद्ध निष्कलंक अवतार का जाहिर होना, कुरान के अनुसार ग्याहरवीं सदी में आखरूल जमां इमाम मेहंदी का जाहिर होकर कयामत के सातों निशान जाहिर करने का काम और परमधाम की आत्माओं के लिए उनको निजघर का सुख देने वाले मारफत के ज्ञान द्वारा खिलवत, सागर, सिनगार और परिकरमा के पचीस पक्षों की चितवनी देकर उस तन को पूरा किया। तन पूरा कर अपनी पांचों शक्तियों सहित गुम्मट जी में विराजमान होकर अक्षरातीत की राजधानी स्थापित की और भारत के हर प्रान्त में फैली हुई आत्माओं को जगाने के लिए किसी न किसी आत्मा में अपनी शक्ति भेज कर जागनी करने लगे। पर जाहिरी जीव सृष्टि जो तारतम ले चुकी थी, उन्होंने यही समझा कि प्राणनाथ दुनियां से जा चुके हैं। इसलिए वे एक इन्सान के तन छोड़ने पर जैसे दुनियावी लोग रोते हैं, वे भी रोये और उस दिन की याद में मरण व्रत में उपवास करते हैं परन्तु उनके दो महान कार्य–

१) **''हम आए हैं इतने काम, ब्रह्म सृष्ट लेने घर धाम।''**

प्र० हि० प्रगटवाणी चौ० ८३

२) **तो ''क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड।''**

किरंतन ६६/१६

जब तक यह कार्य पूरे नहीं हो जाते तब तक वे पन्ना पदमावती पुरी धाम में ही बैठकर सब प्रान्तों में बैठी आत्माओं को जगाने के लिए किसी न किसी आत्मा में अपनी शक्ति बैठा कर स्वयं कार्य कर रहे हैं। जिस प्रकार भारत सरकार प्रान्तों की सरकार को सहायता भेजती है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि केन्द्र दिल्ली से उठ गया है। यदि केन्द्र प्रान्तों को कुछ न दे तो राज्यों की सत्ता ही खत्म हो जाये। इसी तरह से यदि प्राणनाथ जी अपनी राजधानी पदमावती पुरी पन्ना से जिस जगह से वे जागनी कर रहे हैं, अपनी शफकत, बरकत, इलम, जोश, इश्क और मेहर नहीं देंगे, तो जागनी का कार्य हो ही नहीं सकता। यदि आज इस बात को कोई कह देता है कि श्री प्राणनाथ जी ने अमुक तन में बैठ

Nijanand App

कर कार्य किया, तो वे लोग, जो केवल नाम के ही प्राणनाथ जी के अनुयायी हैं, परन्तु कभी भी उनकी कुलजम स्वरूप की वाणी का मंथन कर लेते, तो उनकी भ्रांन्ति मिट जाती कि प्राणनाथ जी किसी मानव तन का नाम नहीं है। वह तो साक्षात् पारब्रह्म हैं। कोई व्यक्ति प्राणनाथ नहीं बन सकता। प्राणनाथ जी का पन्ना जी में साक्षात् विराजमान होना आज भी जाहिर है।

मस्तान कवि अरब के रहने वाले मुसलमान थे। ग्यारहवीं सदी के लिखे भेद को समझ कर कि अल्लाह ताला हिन्दुस्तान (पन्ना) में आ गए हैं, वह आए और दर्शन करके बोले–

पन्ना तो परमधाम देख, करके प्रणाम देख।

आशिकों आराम देख, कहत है मस्तान।।

जासों लागी इश्क तान, रूह देखी है दीदार।

श्री प्राणनाथ जी साक्षात् पन्ना में विराजे हैं।।

यह है प्रमाण, जो वाणी और बीतक साहिब में लिखा है। परमधाम की आत्माएं चारों वर्णों में उतरीं हैं। इसलिए वे आत्माएं जो मुसलमान तनों में हैं या थी या हिन्दू तन के किसी भी वर्ण में है। कुलजम स्वरूप की वाणी से श्री प्राणनाथ जी की पहचान करके गा रही है–

श्री प्राणनाथ मन भाये आलि मोहे प्राणनाथ मन भाये।

विंध्याचल पर्वत के ऊपर, सुन्दर धाम सुहाए।।

गुंमट बंगला बन्यो है धनी को, हीरन तखत धराए।

रतन जड़ित पद्मावती सोहे, देव सकल ललचाए।।

विख की नदियां अमृत कीन्हो, सुख सबन पोहोंचाए।

भजन किरंतन होत रात दिन, सुनत मोक्ष फल पाए।।

श्री ठकुराणी जी साथ सकल मिल, जागनी रास खेलाए।

श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन, अमर सखी चंवर ढोलाए।।

श्री मुख वाणी में श्री पद्मावती पुरी धाम की महिमा इस प्रकार कही गई है–

Nijanand App

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस।

छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथी के नरेस।।

किरंतन प्र० ५५ चौ० १२

जगह जगह पर ज्ञान देने के लिए श्री प्राणनाथ जी के नाम के मन्दिरों की स्थापना हुई। ३६ हजार के मेले का स्थान "पद्मावती पुरी धाम" को बनाया। यहां पर पृथ्वी के राजा और राणा, त्रिदेवा और देवी देवता आ कर प्रेम से नमन करते हैं।

बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट बरती है आन।

मुकट मनी ढोलें चंवर, नवखंड धुरे हैं निसान।।

किरंतन प्र० ५५ चौ० १३

पद्मावती पुरी धाम में श्री प्राणनाथ जी सिंहासन पर विराजमान हुए। उनके सिर पर छत्र शोभायमान है। चौदह लोकों के वैराट में उनका हुक्म चल रहा है। राजा महाराजा इनको चंवर ढुलाते है और नवों खण्डों में जाहिर होने की नौबत बज रही है।

इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनों इत आए।

औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतुब मिले सब धाए।।

मारफत सागर – प्र० १३ चौ० २४

इस तरह से मारफत के ज्ञान का नूरी झण्डा हादी श्री प्राणनाथ जी और मोमिनों ने आ कर पन्ना जी में खड़ा किया। अब सब औलिए, अंबिए, गोस और कुतुब (तिर्थकर, अवतार) दौड़ दौड़ कर झण्डे के नीचे आ रहे है।

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी मांहे।

पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।।

छोटा कयामत नामा प्र० १ चौ० ८७

यदि कोई आत्मा इस संसार में जागृत होकर अपना तन पहले छोड़ देती है, तो वह आत्मा अपने जीव को लेकर श्री प्राणनाथ जी के चरणों में पन्ना जी पहुंच जाती है, क्योंकि श्री प्राणनाथ जी के चरण ही उसका असल ठिकाना है। पांच तत्व का झूठा शरीर पांच तत्व में मिलकर खत्म हो जाता है।

Nijanand App

श्री गुम्मट जी के ऊपर विराजमान पंजा पांचों शक्तियों का प्रतीक है, अर्थात् धनी का जोश, श्यामा जी, अक्षरब्रह्म, हुक्म का स्वरूप और असराफील ये पांचों शक्तियां श्री गुम्मट जी में विराजमान है। शिया मत के अनुयायी अभी भी मुहर्रम के त्योहार में बारहवें इमाम मेहंदी के घोड़े पर पंजे का निशान रखते हैं, इसका प्रमाण हिन्दू ग्रन्थों में भी है। श्री प्राणनाथ जी की हर ध्वजा पर यही निशान होता है, जिससे स्पष्ट ज्ञान होता है कि पारब्रह्म की पांचों शक्तियों के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी पन्ना जी में विराजमान हैं।

अब ऐसे पूज्य स्थान की तुलना जहां केवल प्राणनाथ जी का "कुलजम स्वरूप साहिब" सिंहासन पर विराजमान है, जो धनी श्री देवचन्द्र जी की प्रगट की हुई और जाहिर की हुई निजानन्द सम्प्रदाय को न मानकर मात्र एक वृक्ष को ही अक्षरातीत का अंश मानकर उस वृक्ष को भोग लगाते हैं, आरती करते हैं और शयन कराते हैं, जबकि भागवत जैसे ग्रन्थ में १०/८४/१३ में बहुत बुरी तरह से खण्डन किया है। परन्तु भागवत के ज्ञाता संस्कृत के शास्त्री सत्य को जाहिर न करके असत्य जड़ वस्तुओं का प्रचार कर रहे हैं जिससे उन्हें झूठे मान, सम्मान और धन की प्राप्ति होती है। ऐसे स्थानों की तुलना करने वाले कृपया जागृत बुद्धि के कुलजम स्वरूप की वाणी से पद्मावती पुरी की महिमा समझकर, आकर अपना शीश झुकाएं और अपना संसारी अहंकार छोड़कर अपना जीवन सफल करें।

यह बारहवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

तेरहवीं तरंग

श्री निजानन्द सम्प्रदाय की महिमा

संवत् १७३५ में हरिद्वार में कुम्भ के मेले के अवसर पर श्री प्राणनाथ जी का अन्य सभी हिन्दू सम्प्रदायों के आचार्यो के साथ शास्त्रार्थ हुआ। सबने श्री प्राणनाथ जी से उनकी पद्धति पूछी और पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो कर उन्हें विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में माना और उनके नाम का झण्डा फहराकर शाका भी चलाई। श्री प्राणनाथ जी ने जो निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति बताई, वह इस प्रकार है।

सतगुरू ब्रह्मानंद हैं, सूत्र है अक्षर रूप।
सिखा सदा तिनसे परे, चेतन चिद जो अनूप।।

सेवन है पूरूषोत्तम, गोत्र चिदानन्द जान।
परम किशोरी इस्ट है, पतिव्रता साधन मान।।

श्री जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम सोय।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोए।।

अठोतर सौ पख साखा सही, साला है गौलोक।
सतगुर चरण को क्षेत्र है, जहां जाए सब सोक।।

सुख विलास माहें नित वृन्दावन, ऋिषि महाविष्णु है जोए।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए।।

सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्ध जाग्रत को ज्ञान।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान।।

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।
निजानन्द है सम्प्रदा, ए उत्तर प्रस्न प्रकास।।

श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, जिन प्रगट करी सम्प्रदा ऐह।
तिनथें हम यह लखी है, द्वार पावें अब तेह।।

Nijanand App

श्री निजानन्द सम्प्रदाय की यह पद्धति माहेश्वर तन्त्र में जैसी की तैसी लिखी है, जिसका हिन्दी में भावार्थ इस प्रकार है–

शिवजी कहते हैं कि हे सुन्दरी (पार्वती)! ब्रह्मानंद रस और शुद्ध ब्रह्म ज्ञान

ब्रह्मानन्दरसाज्ञानां ब्रह्मज्ञानवतां सतां।
पद्धतिं ब्रह्मसृष्टीनां वदयामि श्रृणु सुन्दरि।।

गोत्रमुक्तं चिदानन्दं ब्रह्मानन्दो हि सदगुरुः।
शिखा ज्ञानमयी प्रोक्ता सूत्रमक्षररुपकम्।।

किशोरी परमेष्टा च सेवनं पौरुषोत्तमम्।
पातिव्रत्यमनन्यत्वं साधनं समुदाहृतम्।।

वृन्दावनं नित्यमुक्तं विलास सुख सञ्ज्ञकम्।
जाप्यं च युगलं नाम तारतम्यो मनुः स्मृतः।।

ब्रह्म विद्या देवी देवो ब्रह्म सनातनम्।
शाला गोलोक इत्युक्तो द्वारमूर्ध्वमुदाहृतम्।।

स्वसंवेद समादिष्टः फलं नित्यविहारकम्।
दिव्य ब्रह्मपुरं धाम परात्परमुदाहृतम्।।

सदगुरुश्चरणं क्षेत्रं सर्व शुद्धि करं परम्।
यमुना संज्ञकं तीरं मननं प्रेम लक्षणं।।

श्रीमद्भागवतं प्रोक्तं श्रवणं सारमद्भुतम्।
ऋषिः प्रोक्तो महाविष्णुः ज्ञानं जागृत्स्वरुपकम्।।

आनन्दाख्यं कुलं प्राप्तं नित्ये धाम्नि प्रकीर्तितम्।
सम्प्रदायश्चिदानन्दो निजानन्दैः प्रकाशितः।।

एवं पद्धतिराख्याता पुरुषोत्तम सञ्ज्ञिका।
वर्तितव्यं ततो भद्रे साधनेरात्मलब्धये।।

माहेश्वर तन्त्र २८/४५–५४

Nijanand App

किया, जिसका नाम श्री कृष्ण था। उसके बाद ब्रज–रास की लीला के बाद अरब में जो जाति थी, उसमें पंडित अब्दुल्ला के घर मुस्तफाबेग के तन को धारण कर मुहम्मद के नाम से लीला की। तीसरी बार उमरकोट गांव में कायस्थ जाति में मत्तू मेहता के घर जो वैश्य कहलाते थे, उस तन को धारण कर श्री देवचन्द्र नामक तन में लीला की और अन्त में जामनगर में केशव ठाकुर जो क्षत्रिय जाति के वंशज थे, उनके घर श्री मेहराज ठाकुर नाम के तन को धारण कर श्री विजयाअभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां इमाम मेहंदी बन कर जाहिर हुए और परमधाम की जागृत बुद्धि और निजबुद्धि का ज्ञान लाकर निजानन्द सम्प्रदाय के प्रवर्तक जाहिर हुए। अब सारा संसार जाति–पाति, नींच–ऊंच, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब, ज्ञानी–अज्ञानी, धर्म, वर्ण जो केवल एक मिटने वाले मुर्दा शरीर की शोभा है, को निजानन्द सम्प्रदाय की इस अखंड वाणी के द्वारा भूल कर उस अखंड योगमाया के ब्रह्माण्ड में एक रूप एक रस एक प्रेम में रह कर सदा श्री प्राणनाथ के गुण गाते रहेंगे।

यदि निजानन्द सम्प्रदाय इस ब्रह्माण्ड में जाहिर नहीं होता तो संसार के सभी जीव और देवता सभी अनादि काल की तरह जन्म मरण के चक्र काटते रहते।

आज, यदि हिन्दुओं के मन्दिरों में चाहे गणेश का मन्दिर हो, हनुमान का मन्दिर हो, राम भगवान का मन्दिर हो, देवी का मन्दिर हो या राधे कृष्ण का मन्दिर हो। वहां उनके मानने वाले इन्सान अपना अपना पैसा खर्च कर अपनी मर्जी के अनुसार भगवान बना कर मन्दिरों में पूजा कर रहे हैं।

अब यदि श्री निजानन्द सम्प्रदाय की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के बिना किसी हिन्दू मानव ने या उनके गुरूओं ने धर्म ग्रन्थों से आग पानी पत्थर की पूजा से हटाया नहीं, उल्टा लगाया तो अब सोचना यह है कि भगवान (परमात्मा) इन्सान को बनाता है या इन्सान परमात्मा को बनाता है। हिन्दुओं ने अपने अपने परमात्मा को खुद बनाया है, जो बेजान है। एक सफेद या काले पत्थर को खुद बना कर पत्थर की कीमत देकर उसकी अपने भावों से शकल बना कर इसकी स्थापना कर लेते हैं और उसको ही राम, कृष्ण, गणेश, महादेव, देवी इत्यादि

Nijanand App

है। इस समय संसार में शैव, वैष्णव (रामानुज, नीमानुज, रामानन्द, माधवार्चाय आदि के अनुयायी) स्वामी नारायण, स्वाध्याय वाले, राधा स्वामी, राधा वल्लभी, दशनाम सन्यासी आदि प्रमुख है। मुसलमानों में शिया, सुन्नी, अहमदिया, ईसाइयों में कैथोलिक और प्रोस्टेन्ट तथा जैनियों में दिगम्बर और श्वेताम्बर हैं, किन्तु इन सैकड़ों सम्प्रदायों में से किसी को भी पारब्रह्म की पहचान नहीं है। सपने की बुद्धि के सहारे अटकल का ज्ञान लेकर चलने वाले ये सभी सम्प्रदाय उस अखंड परमधाम और वहां की लीला के बारे में एक शब्द भी नहीं जानते। जो भी इस समय कोई श्री निजानन्द सम्प्रदाय के अन्दर अवतरित होने वाले श्री कुलजम स्वरूप साहब के महान ज्ञान को स्वीकार न करे और पूर्ण ब्रह्म की पहचान नहीं कर पाये, लेकिन एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब इस ब्रह्मांड के सभी जीव उस प्राणनाथ जी को पूर्णब्रह्म के रूप में मानेंगे।

सब जातें मिली एक ठौर, कोई न कहे धनी मेरा और।

पिया के विरह सों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबों को दिए।।

प्र० हि० प्रगट वाणी चौ. ११२

योगमाया के ब्रह्माण्ड में सभी जातियां इकट्ठी होकर एक साथ मिलेंगी। सब को योगमाया के तन और जागृत बुद्धि मिलने से एक पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की पहचान हो जायेगी। पारब्रह्म की पहचान होने पर वे पश्चाताप से निर्मल होकर अखंड बहिश्तों का सुख प्राप्त करेंगे।

वहां कोई भी एक पूर्णब्रह्म प्राणनाथ के बिना किसी देवी देव या कृष्ण को नहीं पूजेगा। श्रीकृष्ण जी (गोलोकी) खुद श्री प्राणनाथ जी के चरणों में प्रणाम करेंगे।

आज तक भारत में सैकड़ों ग्रन्थों में श्री कृष्ण को ही पूर्णब्रह्म मानकर लोग भ्रम में पड़े हुए थे, क्योंकि किसी ने भी क्षर (पाताल से निराकार) से आगे का भेद खोला ही नहीं। श्री निजानन्द सम्प्रदाय की जागृत बुद्धि के ज्ञान से निराकार से परे योगमाया का ब्रह्माण्ड, जहां अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण के चारों अंग मन, चित, बुद्धि और अहंकार अर्थात् अव्याकृत ब्रह्म और सबलिक ब्रह्म जो करोड़ों मिटने वाले कालमाया के ब्रह्माण्डों को बनाते और मिटाते हैं तथा उसके ऊपर

Nijanand App

केवल और सत् स्वरूप ब्रह्म है। यहां तक संसार का कोई भी ग्रन्थ व्याख्या नहीं कर सका। उस से आगे, उस अखण्ड, अद्वैत परमधाम के पच्चीस पक्ष हैं जो श्री निजानन्द सम्प्रदाय ने आ कर बताया। उस के अन्दर अक्षर धाम भी है, पर अक्षर ब्रह्म परमधाम में लीला नहीं करते। वे योगमाया के अन्दर अव्याकृत और सबलिक ब्रह्म को हुक्म देकर करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पल में बनवाते और मिटवाते हैं, जिनको सब ग्रन्थों में कुटस्थ, अविनाशी कहा गया है (श्री कृष्ण तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में सबलिक ब्रह्म में अखण्ड हैं) सबलिक ब्रह्म से आगे वे जा ही नहीं सकते। यदि जाने की शक्ति होती और वे पूर्णब्रह्म होते तो हरिदास जी के मन्दिर से मूर्ति गायब नहीं हो जाती और श्री कृष्ण स्वयं आकर नहीं कहते कि देवचन्द्र जी के अन्दर जो शक्ति बैठी है वे तो मेरे परमात्मा है। हम उनकी पूजा करते है और मैं इनके एहसान भी नहीं सह सकता, क्योंकि इस शक्ति ने ही मुझे योगमाया में अखण्ड किया है।

सो तुमको इन सरूप की, भई नहीं पहिचान।

मैं इनकी सेवा न सह सकों, ना सह सकों अहसान।।

बीतक सा० ४/१६

और अक्षरातीत पूर्णब्रह्म प्राणनाथ ही अक्षर से भी परे अपने दिव्य ब्रह्मपुर धाम में स्वलीला अद्वैत में सदा एक रूप एक रस रहते हैं। तारतम में कहा है–

निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार।

अर्थात् निराकार से परे योगमाया, उस से परे अक्षरब्रह्म और अक्षर से भी परे अक्षरातीत का निजधाम है। ये सारे भेद निजानन्द सम्प्रदाय के जागृत बुद्धि परा विद्या के तारतम ज्ञान ने आकर खोले।

इस मिट जाने वाले ब्रह्माण्ड में गीता के कहने वाले श्री कृष्ण बैकुण्ठ के नाथ है। उस से परे सबलिक ब्रह्म में गोलोक के अन्दर बाल स्वरूप और किशोर स्वरूप श्री कृष्ण है। इनको श्री प्राणनाथ जी ने ही पहले अखण्ड किया था। जो अक्षर की आत्मा पर अक्षरातीत की शक्ति ने बैठ कर ब्रज में अपनी आत्माओं को मिथ्या जगत का नाटक ग्यारह वर्ष और बावन दिन तक दिखाने की लीला की थी, उस तन का नाम कृष्ण था। इस ब्रह्माण्ड में दुबारा अखण्ड ब्रज रास

Nijanand App

के प्रतिबिम्ब की लीला जब हुई, तो नए विष्णु पर गोलोक की शक्ति ने सात दिन की लीला की और फिर चार दिन की लीला में मथुरा में कंस को मारा और उसके बाद उग्रसेन को टीका दे कर वसुदेव देवकी को बन्धन से छुड़ा कर द्वारिका में जा कर सौ वर्ष राज्य करने के बाद महाभारत में गीता का उपदेश सुनाने वाले कृष्ण चौथे थे। हकीकत में पूर्णब्रह्म ने किस कृष्ण के तन में बैठ कर लीला की और किसमें गोलोक की शक्ति थी? और किसमें बैकुण्ठ के सोलह कला अवतार की शक्ति थी? ये सारे भेद निजानन्द सम्प्रदाय के तारतम ज्ञान के द्वारा ही खुले। भागवत को लिखने वाले व्यास तो बेचारे विष्णु भगवान के अंशावतार है। इस कारण से राजा परीक्षित के प्रश्न करने पर शुकदेव नित्य वृन्दावन का उत्तर नहीं दे सके, तो ऐसे व्यास की लिखी भागवत को पढ़कर यह कहना कि भागवत पढ़ने से परमधाम मिलता है, केवल कम बुद्धि, हठ धर्मी, झूठे संगठन का सहारा और पैसे के अभिमान में मस्त रहने वालों का चमकता हुआ दृश्य है। श्री निजानन्द सम्प्रदाय ने श्री कृष्ण के पूरे भेद खोल कर श्री कृष्ण की त्रिधा लीला की भक्ति में खुलासा कर दिया है और संसार के सब ग्रन्थों में जो पारब्रह्म उत्तम पुरूष अक्षर से परे थे और लोग उसका नाम, धाम, स्वरूप और लीला को जानते ही नहीं थे और जिसे त्रिदेवा आदि नारायण इत्यादि खोज खोज कर थक गए थे, उसको मेरे प्राणनाथ ने ब्रह्मसृष्टियों के कारण निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान द्वारा सब अज्ञानता को दूर कर श्री कुलजम स्वरूप रूपी अखण्ड नूरमयी ज्ञान के सूर्य का उजाला कर दिया। अब श्री निजानन्द सम्प्रदाय के इस ज्ञान के फैल जाने से सारे ब्रह्माण्ड, त्रिदेवा, देवी–देवताओं को निराकार से आगे योगमाया के ब्रह्माण्ड में श्री प्राणनाथ जी अखण्ड करेंगे। श्री निजानन्द सम्प्रदाय के बिना आज दिन तक राम, कृष्ण आदि देवता भी बैकुण्ठ से आगे का रास्ता नहीं बता सके और न ही किसी ने चारों वर्णों को एक करके जाति पाति के भेद मिटाए। पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने चार बार आकर चारों वर्णों में तन धारण करके लीलाएं की और दुनियां को श्री निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान से बता दिया कि वर्ण, जाति भेद, नीच–ऊंच यह सभी मिथ्या शरीर से होते हैं। आत्मा इन सबसे परे हैं।

पहली बार ब्रज में अहीर जाति जो शुद्र जाति थी, उसमें आकर तन धारण

Nijanand App

से आगे का रास्ता नहीं बता सके और न ही किसी ने चारों वर्णो को एक करके जाति पाति के भेद मिटाए। पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने चार बार आकर चारों वर्णो में तन धारण करके लीलाएं की और दुनियां को श्री निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान से बता दिया कि वर्ण, जाति भेद, नींच–ऊंच यह सभी मिथ्या शरीर से होते हैं। आत्मा इन सबसे परे हैं।

पहली बार ब्रज में अहीर जाति जो शुद्र जाति थी, उसमें आकर तन धारण किया, जिसका नाम श्री कृष्ण था। उसके बाद ब्रज–रास की लीला के बाद अरब में जो जाति थी, उसमें पंडित अब्दुल्ला के घर मुस्तफाबेग के तन को धारण कर मुहम्मद के नाम से लीला की। तीसरी बार उमरकोट गांव में कायस्थ जाति में मत्तू मेहता के घर जो वैश्य कहलाते थे, उस तन को धारण कर श्री देवचन्द्र नामक तन में लीला की और अन्त में जामनगर में केशव ठाकुर जो क्षत्रिय जाति के वंशज थे, उनके घर श्री मेहराज ठाकुर नाम के तन को धारण कर श्री विजयाअभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां इमाम मेहंदी बन कर जाहिर हुए और परमधाम की जागृत बुद्धि और निजबुद्धि का ज्ञान लाकर निजानन्द सम्प्रदाय के प्रवर्तक जाहिर हुए। अब सारा संसार जाति–पाति, नींच–ऊंच, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब, ज्ञानी–अज्ञानी, धर्म, वर्ण जो केवल एक मिटने वाले मुर्दा शरीर की शोभा है, को निजानन्द सम्प्रदाय की इस अखंड वाणी के द्वारा भूल कर उस अखंड योगमाया के ब्रह्माण्ड में एक रूप एक रस एक प्रेम में रह कर सदा श्री प्राणनाथ के गुण गाते रहेंगे।

यदि निजानन्द सम्प्रदाय इस ब्रह्माण्ड में जाहिर नहीं होता तो संसार के सभी जीव और देवता सभी अनादि काल की तरह जन्म मरण के चक्र काटते रहते।

आज, यदि हिन्दुओं के मन्दिरों में चाहे गणेश का मन्दिर हो, हनुमान का मन्दिर हो, राम भगवान का मन्दिर हो, देवी का मन्दिर हो या राधे कृष्ण का मन्दिर हो। वहां उनके मानने वाले इन्सान अपना अपना पैसा खर्च कर अपनी मर्जी के अनुसार भगवान बना कर मन्दिरों में पूजा कर रहे हैं।

Nijanand App

मान कर श्रृंगार और भोग आरती करते है और उनसे अपनी मुरादों को पूरा कराने की इच्छा से रोते और गिड़गिड़ाते हैं। ठीक हैं, अपने भाव से चाहे कोई किसी को भगवान माने, कौन मना करता है, पर गुजराती में कहावत है–

चेतन पूछे जड़ सों, तूं कछु मन्ने दे।

थारो बैठारो हूं बैठो छूं, थारी एक फूटी छे के बे।।

अर्थात् इन्सान अपने पैसे से भगवान की मूर्ति बना कर उससे ही मांगता है कि भगवान। मुझे दे, तो मूर्ति कहती है– पगले इन्सान! मुझे तूने ही बना कर यहां (मन्दिर में) बैठाया है। तू यदि भोग लगाता है तो मैं खाता हूं नहीं तो भूखा बैठा हूं। तेरे रहम पर ही हूं, तो तू सोच! जो तेरे रहम पर है, वह तुझे क्या देगा? तेरी एक आंख फूटी है या दोनों, तु काना हो गया है या अंधा?

इसी प्रकार मुसलमान लोग अपनी मर्जी से एक दिवार पर तीन मेहराबें बना कर अल्लाह का घर बना बैठे हैं, यदि दीवारों की मेहराबें ही खुदा का घर है तो मुहम्मद साहब किस अर्श में जाकर किस अल्लाहताला से बातें करके आए थे, जिसको उन्होंने चौथे आसमान पर खुदा का अर्श बताया है। इसी तरह सारा संसार हकीकत में उनके ग्रन्थों में जो सच्चिदानन्द पारब्रह्म अक्षर से परे लिखा है, के भेद समझने के लिए जिस परा विद्या जागृत बुद्धि के ज्ञान की जरूरत थी, जिसके बिना इन्सान एक सच्चिदानन्द को आग, पानी, पत्थर और वृक्षों में मानने लगा और इस कारण से ही अनादिकाल से जीव अंधकार में भटकता रहा है।

कोई न निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।

सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।।

कि. प्र. ८१ चौ० २

शुरू से लेकर आज दिन तक कोई भी इस माया के जाल से निकल नहीं सका। धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने हमें ऐसी शक्ति (जागृत बुद्धि का ज्ञान) दिया है, जिसके द्वारा हम चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को ही माया से छुड़ा कर योगमाया में अखंड कर देंगे।

Nijanand App

यह पारब्रह्म का ज्ञान एक मात्र निजानन्द सम्प्रदाय में ही अवतरित हुआ। इस ज्ञान के आने से पहले सारे ब्रह्माण्ड में अंधेरा था। किसी को भी पारब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला का ज्ञान नहीं था। इस समय हिन्दू धर्म में लगभग १००० से अधिक सम्प्रदाय हैं, आज तक सारा संसार आवागमन के चक्कर में ही फंसा रहा। श्री प्राणनाथ जी ने आकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय को उस अखंड पूर्णब्रह्म की निजबुद्धि और जागृत बुद्धि के द्वारा जो कुलजम स्वरूप की वाणी दी, जिसमें कुल धर्मो, कुल ग्रन्थों और सभी मानवों का एकीकरण किस तरह से हो सकता है? यह लिखा है, जिसके द्वारा सम्वत् १७३५ में सैकड़ों हजारों हिन्दुओं ने आग, पानी, पत्थर से परे तथा महाप्रलय में लय हो जाने वाले देवी देवता और त्रैगुण से भी परे योगमाया में जो श्री कृष्ण और राधा हैं, उससे भी परे अक्षर और अक्षरातीत का सच्चा ज्ञान लेकर योगमाया तक देवी देवता और कृष्ण को छोड़कर उस एक पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ के पूजन से अपने को धन्य धन्य किया।

और मुसलमानों ने शरीयत और तरीकत को छोड़ कर हकीकत और मारफत के भेद जो इलमें लदुन्नी कुलजम स्वरूप साहब हैं, उसको लेकर बाकी संसार को झूठा समझ कर छोड़ा।

अब सवाल यह उठता है कि कृष्ण नाम ही सब जीवों को भव से पार करेगा या नहीं? यह सत्य है क्योंकि कृष्ण नाम के तन में ही पहली बार उस पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने नाटक किया। उसमें जो भेष धारण किया, उस भेष का नाम कृष्ण होने से यह नाम भी प्राणनाथ जी का ही था, जिसके भेद को निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान से स्पष्ट कर दिया कि जिसका नाम श्री कृष्ण था वही अब स्वयं (श्री प्राणनाथ) आए हुए हैं। जिन्हें सारी दुनिया का न्यायाधीश बन कर सब को अखंड करना है, तो अब आप ही विचारिए कि जब वे साक्षात् आए हुए है तो उनकी शरण में जाकर उनके ज्ञान से उनको पहचान कर अर्श के सब सुख यहां क्यों न लें? जो फिर कभी भी मिलने वाले ही नहीं हैं, उनके नाम से अर्थात् कृष्ण–कृष्ण रटने से जीव अखंड तो हो जायेंगे। वहां उस समय (योगमाया में जब श्री प्राणनाथ जी न्यायाधीश बन कर बैठेंगे) साक्षात् प्राणनाथ जी तो हमें नहीं मिलेंगे और न ही उनके परमधाम के सुख मिलेंगे, तो इससे क्या लाभ हुआ?

Nijanand App

अब यदि श्री प्राणनाथ जी को पहचान कर उनके चरणों में चले जायें तो अखंड मुक्ति भी मिलेगी और उनके परमधाम के सब सुख भी यहां पर ले सकते हैं। जो उन्होंने खुद वाणी में कहा है–

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।।

क० हि० २३/१

बाकी अज्ञानता के रास्तों को छोड़ कर यदि हम श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को पहचान लें तो ब्रज, रास और श्री देवचन्द्र जी के समय की तारतम की लीला और परमधाम के सब सुख यहीं ले सकते हैं। जो कोई भी देवी, देवता, तिर्थंकर, अवतार या राधे कृष्ण भी हमें यहां नहीं दे सकते हैं। यह है श्री निजानन्द सम्प्रदाय की देन और उसकी महिमा, जिसके द्वारा उस पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी को इसी दुनियां में पा सकते हैं, जिसका वर्णन कोई नहीं कर सका, तो आइए! हम सब मिलकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति के अनुसार उस पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ जी को अंगना भाव से धारण कर परमधाम के सुखों के अधिकारी बनें।

यह तेरहवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

चौदहवीं तरंग

गादी और श्री प्राणनाथ

आज भारतवर्ष में केवल हिन्दू धर्म की ही अनेकों शाखाएं हैं, जिनकी अनेक गादियां और गुरू हैं। जैसे जैसे गुरूओं के आपस में विरोध बढ़ते जाते हैं, वैसे वैसे ही गुरू केवल अपने मान, सम्मान और लोभ के कारण से अपने चेलों को लेकर जुदा जुदा गादी बना कर बैठ जाते हैं। इस तरह से इस संसार में सत्य छिपता चला गया और झूठ को ही बढ़ावा मिलता गया। जिससे एक तिनके के समान झूठ ने पहाड़ जैसे सत्य को ढांप लिया। इसमें गुरूओं ने ही एक की पूजा छोड़ कर अनेक की पूजा का मार्ग बना दिया और इस तरह से सम्पूर्ण मानव समाज भ्रांतियों में पड़ गया और असत्य को ही सच्चिदानन्द मानकर गुरूओं के द्वारा बनाये हुए धर्म के नियमों का पालन करने लगा। ऐसी इस वैराट की जाली गुंथी हुई है कि सच्चिदानन्द विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार की राह लोग देख रहे थे कि जो सभी धर्म ग्रन्थों को एक करके उस एक पारब्रह्म का रास्ता दिखायेगें और धर्म ग्रन्थों के छुपे हुए रहस्यों को खोलेगें, वही पूर्ण ब्रह्म होंगें। भविष्य के ग्रन्थों के हिसाब से पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी समयानुसार संम्वत् १६७८ में नवतनपुरी में श्याम जी के मन्दिर में श्यामा जी, जो श्री देवचन्द्र जी के तन में थी, को आवेश स्वरूप में प्रगट होकर कुल क्षर–अक्षर और अक्षरातीत का भेद बताये कि हमारा और तुम्हारा संसार में आने का यही कारण है कि पहले जब हम ब्रज में आए थे तो हमें किसी ने पहचाना नहीं। हमने जिस तन से लीला की थी, उस तन के नाम श्री कृष्ण को पकड़ कर दुनियां उलझ गई और हकीकत में मेरे स्वरूप को कोई भी नहीं पहचान सका। पहचानता भी कैसे? शास्त्रों में पूर्ण ब्रह्म का आना कलियुग में लिखवाया था और इस भागवत में जो गुप्त भेद नित्य वृन्दावन के हैं (जो लीला आज भी अखंड है) वह इस दुनियां के लोग बिना तारतम ज्ञान के कभी नहीं खोल पायेंगे और न ही समझ पाऐंगे। परा विद्या तारतम ज्ञान से सकल जगत के ग्रन्थों के छुपे भेद खुलेंगे। कैसे आत्माऐं जागेंगी? कैसे सब को अखंड करूंगा?

Nijanand App

इन सारे भेदों को समझा कर वह पूर्ण ब्रह्म उनके अन्दर विराजमान हो गए। उस तन से लीला करने के बाद श्री मेहराज ठाकुर जिन्होंने केशव ठाकुर और धनबाई के घर जन्म लिया था, उनके अन्दर परमधाम की श्री इन्द्रावती की आत्मा होने के कारण युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी (श्री प्राणनाथ जी) आकर विराजमान हुए। यह सब देवचन्द्र जी के तन छोड़ने से पहले जाहिर कर दिया था। उस समय परा विद्या जागृत बुद्धि एवं निज बुद्धि का तारतम ज्ञान, श्री कुलजम स्वरूप की वाणी अवतरित नहीं हुई थी, इसलिए लोगों ने राधा वल्लभी मार्ग की रीति के अनुसार देवचन्द्र जी के नसली पुत्र बिहारी जी को गादी पर उनके उस आसन पर जिस पर बैठ कर श्री देवचन्द्र जी परमधाम की चर्चा करते थे, बैठा दिया और श्री मेहराज ठाकुर के तन में साक्षात् श्री प्राणनाथ युगल स्वरूप विराजमान थे, उनको सूचना भी नहीं दी। गादी पर बिठाने का निश्चय करने के बाद उनको सूचना दी तो वह भी उस कार्य में शामिल हुए।

अंधकार के संसार में इतनी चर्चा सुनने के बाद भी केवल तारतम का ज्ञान किसी को जगा नहीं सका। सब परमधाम की आत्माएं भी भूल गई और सबने यही समझा कि जो गादी पर बैठेगा, वही अक्षरातीत धाम का धनी बन जायेगा। इस तरह से सब सुन्दर साथ संसार की तरह गादी पूजा, जो केवल यमपुरी का साधन है, को अपनाने लगे, परन्तु श्री प्राणनाथ जी जो श्री मेहेराज ठाकुर के तन में थे, फिर से परमधाम की वही चर्चा और वही वाणी सुनाने लगे, जिससे सुन्दर साथ यमपुरी की राह से बच गया, क्योंकि गादी पूजा यमपुरी का साधन है।

जनम अंध अमे जे हता, ते तां तमे देखीतां करया।
वांसो वछूटो हाथ थी, जमपुरी जातां वली कर ग्रहया।।

प्रकास गु० प्र० १० चौ० ३

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं– हे धनी। हम अज्ञानी थे, तो आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान दे कर हमारी अज्ञानता (अनजानपने) को हटाया। हमने आपका पीछा (कदम पर कदम रखना, आपकी दिखाई राह पर चलना) छोड़ दिया था। संसारी जीवों की तरह गादी पूजा और कर्मकाण्ड जो यमपुरी जाने का ही साधन है, उसमें भटक गए थे। तब आपने अति कृपा

Nijanand App

कर हाथ पकड़ कर खींच लिया और अपने चरणों में लगा लिया।

यह वाणी जब हब्से में साक्षात् श्री इन्द्रावती जी को दर्शन दे कर उनके हृदय में श्री प्राणनाथ जी विराजमान हुए तो रास, प्रकास गुजराती और खटरूती श्री प्राणनाथ जी युगल स्वरूप के द्वारा मेहेराज ठाकुर के तन से कहलवाई। इस वाणी को ले कर स्वामी जी बिहारी जी के पास आए। बिहारी जी ने उस वाणी को देखा और सोचा कि यदि यह वाणी सुन्दरसाथ में जाहिर हो जायेगी तो मेरी गादी समाप्त हो जायेगी, इसलिए वाणी को सुन्दर साथ नहीं सुन सके और झूठ की पूजा में ही उलझे रह गए।

बानीं वहां न पसरी, वह सरत उस दिन।
इन्तजार थे मोमिन, पर सुन सके न एक सुकन।।

बीतकसाहिब १८/१४

देख नूर चरचा रोसनी, भई बिहारी जी को दिल सक।
ए तहकीक मसनंद मेरी लेयगा, ए बात बड़ी बुजरक।।

बीतक साहिब ३०/१

बिहारी जी ने जब पहली बार स्वामी जी के मुखारविन्द से चर्चा सुनी, तो समझ गए कि यह मेरी गादी छीन लेंगे, क्योंकि वाणी चर्चा के प्रभाव को देख कर उनके मन में शक पैदा हो गया और वाणी को जाहिर नहीं होने दिया। फिर सूरत में सुन्दरसाथ वाणी को सुन कर जागृत होता गया। यहां तक कि श्याम भाई, भीम भाई वेदान्ताचार्य और वल्लभाचार्य के गादीपति गोविन्द व्यास जी ने भी श्री प्राणनाथ जी की वाणी को सुन कर अपनी गादियों को छोड़ कर तारतम ले लिया और श्री जी को अक्षरातीत मान लिया। यह बात बिहारी जी से सहन नहीं हुई, तब उन्होंने कुछ अनाप–शनाप नियम बनाये, जिनका उत्तर स्वामी जी ने स्पष्ट दिया कि आत्माएं वर्णों से बाहर होती है और इस सम्प्रदाय के नियम बनाने का अधिकार न तो तुम्हें है और न मुझे और कलस गुजराती की किताब जो पूरी उतर चुकी थी, उसको भेजा कि हे बिहारी जी! तुम अपनी भ्रान्ति मिटा लो कि वह अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी किसके तन में बैठे हैं। पूर्णब्रह्म का ठिकाना रूई की गादियों में नहीं होता। उनका ठिकाना

Nijanand App

अपनी आत्माओं का दिल है। कलस में स्वयं श्री राज जी ने कहा–

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।

कलस हि० २३/६६

सुख देऊं सुख लेऊं, सुख मे जगाऊं साथ।
इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

कलस हि० २३/६८

श्री प्राणनाथ जी ने स्पष्ट कहा है कि मैं मेहेराज ठाकुर के अन्दर बैठी आत्मा इन्द्रावती के अन्दर हूं। वह तन मेरा है। अब जो सुन्दर साथ इनको श्री प्राणनाथ अक्षरातीत समझ कर अपने को समर्पित करेगा, उसको मैं सब आनन्द से भरपूर रखूंगा। इस मेहेराज ठाकुर के तन में बैठ कर मैं ही सुख देता हूं और मैं ही सुख लेता हूं तथा परमधाम की वाणी से सुन्दर साथ को जगाता हूं। श्री इन्द्रावतीजी के तन (मेहराज ठाकुर के तन) को केवल उपमा दे रहा हूं।

यह बात जब बिहारी जी ने सुनी तो यह लिख कर भेजा –

सुन के बिहारी जी ने, बड़ो पायो दुख तब।
ना मानों कलस को, देखी पाती जब।।

बी० सा० प्र० ३१ चौ० ६५

अर्थात् गादीपति बिहारी जी ने लिख दिया कि मैं कलस की वाणी को नहीं मानता।

उन लिख भेजी पातीय को, तुम्हारी राह भई और।
और हमारी भी और है, भई जुदागी इस ठौर।।

बी० सा० प्र० ३१ चौ० ६६

बिहारी जी ने लिख कर भेज दिया कि आज से तुम्हारा रास्ता और है तथा मेरा रास्ता और है। गादीपति बिहारी जी महाराज ने दो रास्ते बना दिए। इस तरह से सच्चिदानन्द स्वरूप श्री प्राणनाथजी का रास्ता और गादी पूजा यमपुरी का रास्ता जुदा जुदा हो गया।

Nijanand App

हम तो तुमको चीन्हया, तुम्हारे माहें कलाम।
तुम नहीं हमारे साथ में, हम काढ़ें तुम्हें इस धाम।।

बी० सा० प्र० ३१ चौ० ६७

बिहारी जी महाराज गादी पर बैठ कर यह समझने लगे कि मैं ही अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म हूं, इसलिए स्वामी जी को लिखते हैं कि मैंने तुमको अच्छी तरह से पहचान लिया है। तुमको कविता बनाने का ढंग अच्छी तरह से आता है। मैं तुमको सुन्दर साथ में से निकालता हूं, क्योंकि तुम्हारी आत्मा परमधाम में है ही नहीं, इसलिए तुमको परमधाम से निकाल दिया। बिहारी जी को एक शब्द तो वाणी का आता नहीं था लेकिन गादी के अभिमान में छोटे बड़े सुन्दर साथ के मान का भी सहूर मिटा दिया था। पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ जी का ठिकाना कहां होता है? इसके बारे में वाणी में स्पष्ट लिखा है—

दिल अर्स मोमिन कहया, जामें अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत।।

खुलासा ३/३१

ऊपर तले अर्स ना कहया, अर्स कहया मोमिन कलूब।
ए जाने रूहें अर्स की, जिनका हक मेहेबूब।।

सिनगार २३/७६

आप पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मेरा अर्स मोमिनों का दिल है और उनके दिल में ही मेरी किशोर सूरत विराजमान है। इसलिए मोमिन कभी भी अपने धनी से और पूर्ण ब्रह्म अपनी आत्माओं से जुदा नहीं हो सकते। उनका ठिकाना रूई की गद्दी नहीं है। वे खुद कहते हैं —दुनिया वालों! तुम जिस परमधाम को ढूंढ़ते हो, वह नीचे ऊपर बाहर कहीं भी नही है। मेरा परमधाम तो मेरे मोमिनों का दिल है उस दिल में मुझे ढूंढ़ कर मिल लेना।

Nijanand App

कहीं भी नही है। मेरा परमधाम तो मेरे मोमिनों का दिल है उस दिल में मुझे ढूंढ़ कर मिल लेना।

कुरान में भी लिखा है "कलूबे मोमनीन अर्से मनस्त" अर्थात् मोमिनों का दिल ही मेरा अर्श है। इसके बाद प्राणनाथ जी कहते हैं—

थे हम दोऊ बंदे स्यामजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए देने खबर पैंगमरी।।

किरंतन प्र० १२२ चौ०२

हम दोनों नसली (बिहारी जी) और नजरी (मेहेराज ठाकुर) श्री देवचन्द्र जी की सन्तान थे। दोनों आपस में झगड़कर जुदा हो गए। दुनिया को पारब्रह्म की हकीकत का संदेश देने के लिए दो रास्ते हो गए।

उतरी किताबें हमपे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कहया महंमद का होए।।

किरंतन प्र० १२२ चौ० ४

इस तरह मूल से ही दो रास्ते हो गए। श्री राज जी महाराज ने परमधाम की सम्पूर्ण कुलजम स्वरूप की वाणी मेरे द्वारा ही कहलवाया जिसको गादीपति बिहारी जी ने मानने से इन्कार कर दिया। सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के अन्दर विराजमान श्री राज जी महाराज मेरे अन्दर आकर विराजमान हुए और मेरे द्वारा वह ही यह ज्ञान कहलवा रहे है।

वे लोग जो गादी पर बैठ जाते हैं या उनके अनुयायी होते हैं, उनका रास्ता क्या होता है कि—

मूल न लेवें माएना, लेत उपली देखा देख।
असल स्वरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख।।

किरंतन ६४/१६

अर्थात् असल वाणी की हकीकत को नहीं समझते हैं। ऊपर की देखा देखी बातों में उलझे रहते है। श्री राजजी जिनके तन में बैठे हैं, उनसे

Nijanand App

फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन।
बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमरावों के आधीन।।

कि० ६४/२०

कुरान मे लिखा है कि जो लोग इमाम मेंहदी के दीन की बादशाही करेंगे (गादियों पर बैठेगें) उनकी महिमा तो बहुत बढ़ेगी, परन्तु गादीपतियों को अपने शासकीय अधिकारियों (ट्रस्टीगणों) के अधीन रहना होगा, अर्थात् गादीपति वाणी का सत्य प्रचार नही करेंगे। उनकी इस कमजोरी के कारण उन्हें ट्रस्टियों का गुलाम बन कर चलना पड़ेगा।

कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह।
एक तो करसी बंदगी, और जो कहे गुमराह।।

कि० ६४/२६

ऐसे गादीपति जो श्री प्राणनाथ जी की वाणी को बंद कर देंगे, प्रचार नहीं होने देंगे और श्री प्राणनाथ जी की सच्ची बंदगी करने वालों को भी यह गुमराह करेंगे।

मैं करूं खसामद उनकी, मैं डरता हों उनसे।
जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में।।

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मैं ऐसे लोगों से डरता हूँ। मैं इनकी खुशामद करता हूं कि जो मेरे साथ चलने वाले ईमान के पक्के सुन्दर साथ हैं, उनको गुमराह न करें।

ऐसा न कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख।
जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख।।

कि० प्र० ६४ चौ० २३

मुझे कोई ऐसा हिम्मत वाला, इमान वाला (मर्द) सुन्दर साथ नहीं मिला, जो मेरे दिल का दुःख मिटा सके। जब धनी ही किसी ऐसे सुन्दर साथ को मिला देंगे, तभी साहेब का सुख मिलेगा।

एही बड़ा अचरज, कहावत है बंदे।
जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे

कि० प्र० ६४ चौ० २४

Nijanand App

मुझे बड़ी हैरानी होती है कि वह अपने आपको धनी के अंग कहलवाते हैं, पर गादी पर बैठ कर ऐसे दिल के अंधे हो गए हैं कि मानों वह अनजान हो।

सुन्दर साथ जी! अब सत्य की राह पर यदि विचार करके देखें तो अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने गादियों को हटा कर अपने ही निज स्वरूप "श्री कुलजम स्वरूप" को गादी पर बैठाया। सुन्दर साथ ने सूरत के अंदर श्री प्राणनाथ जी को पेहेचान कर गादी तो अवश्य दी, परन्तु आज उस गादी पर भी उनकी पाग को पधराया हुआ है और सम्वत् १७५१ मे जब पांचवें दिन का कार्य पूरा हो जाने पर अपने तन को छोड़ा, तो उन्होंने श्री बंगला जी में चौथ वाले दिन "श्री कुलजम स्वरूप साहब" को अपनी गादी पर पधरवाया। तभी से श्री कुलजम स्वरूप को ही श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप मान कर सब निजानन्द सम्प्रदाय के मन्दिरों में पूजा हो रही है।

परन्तु, उधर जगह जगह पर गादी की प्रथा चलाकर, गादीपतियों ने एक झूठे मान सम्मान की भूख सुन्दर साथ में पैदा कर दी और उस अखण्ड वाणी का धीरे–धीरे लोप कर दिया और ऐसे डरावने भयभीत करने वाले नियम बनाकर सुन्दर साथ को सूतक इत्यादि से डराया कि भोग पूजा नहीं करोगे तो तुम पापी हो जाओगे, आदि ऐसी धमकियां देकर सुन्दर साथ को न तो स्वरूप साहब घर पधराने दिए और न पढ़ने दिए। जिससे सुन्दर साथ आम जीवों की तरह अपने धनी को छोड़कर अन्य देवी–देवों और आग, पानी, पत्थर की पूजा करने लगे। वाणी में स्पष्ट लिखा है–

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सबका झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।।

खुलासा प्र० १३ चौ० ८६

अब श्री प्राणनाथ जी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां ईमाम मेहदी इस संसार में तीन कार्य करने के लिए आए हैं। वह हिन्दू, मुसलमान सभी के झगड़े मिटाएंगे और एक पारब्रह्म की पूजा कराएंगे। दूसरा काम हिन्दुओं को वेद और मुसलमानों को कतेब के जाहिरी

Nijanand App

अर्थों मे भटकना समाप्तकर हकीकत के रहस्य बताकर सत्य की राह पर चलायेंगे, तीसरा काम नसली पुत्र बिहारी जी और नजरी पुत्र श्री मेहेराज ठाकुर (श्री प्राणनाथ जी) के बीच गद्दी का झगड़ा मिटाना। यह तीनों काम उन्होंने पूरे कर दिए। जाहिरी गद्दी को बिल्कुल बंद कर दिया, जो बिहारी जी के बाद चली ही नहीं और अपना ठिकाना मोमिनों का दिल बताया और सबसे पहले अपने आदेश से अपने ही सिंहासन पर श्री कुलजम स्वरूप साहब का गादी अभिषेक कराया।

तो सुन्दर साथ जी! सत्य के साथ जब तक झूठ खड़ा नहीं होता तब तक सत्य की पहचान नहीं होती है। जैसे राम आए तो रावण था, तभी राम की सत्यता की पहचान हुई और कृष्ण जी के साथ कंस आया और कौरवों की सेना के विपरीत एक अर्जुन सत्य के साथ था, परन्तु आज लोग राम को भगवान, कृष्ण को भगवान तथा अर्जुन को देव तुल्य मानते हैं। इसी तरह स्वामी जी के साथ भी बिहारी जी थे, जिन्हें इस मिथ्या नाटक के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के बिना अज्ञानता के कारण स्वामी जी और सुन्दर साथ को जेल भिजवाने में भी संकोच तक नहीं हुआ। जिसके लिए स्वामी जी वाणी में स्पष्ट कहते हैं–

राह जुदी दोऊ पेड़ से, तो कहा सके कोई कर।
उन आड़ो पट अंतर, इनों बाहेर पड़ी नजर।।

किरंतन प्र० ६३ चौ० २०

जब शुरू से (श्री देवचन्द्र जी के समय से) ही नसली और नज़री (बिहारी जी और स्वामी जी) के रास्ते अलग हो गए तो अब कोई क्या कर सकता है? गादीपति बिहारी जी की आत्मा के सामने माया के अभिमान का परदा पड़ा था। जिससे वे सांसारिक दृष्टि में डूबे थे और मेहेराज ठाकुर के तन में साक्षात् पूर्णब्रह्म थे जिनकी आत्मिक दृष्टि थी। इसलिए एक रास्ता गादी पूजा का हो गया, जो यमपुरी का साधन है और दूसरा रास्ता साक्षात् श्री कुलजम सरूप की वाणी की राह पर चलना है।

अब कहा कहूं मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए।
ए जान बुझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए।।

किरंतन प्र० ६३ चौ० १६

Nijanand App

स्वामी जी कहते हैं– अब मैं इन सुन्दर साथ की क्या कहूं? इनकी हालत ही कुछ ऐसी हो गई है कि यह जानते समझते हुए भी गल्ती करते हैं। इसमें इनका वश नहीं चलता है।

सुन्दर साथ जी! अधिक लिखने की कोई शक्ति बल और बुद्धि नहीं है। आज की इस हालत को देख कर कि इस गादी पूजन की प्रथा ने हमको श्री कुलजम स्वरूप की वाणी से जो श्री प्राणनाथ जी ने उस अखंड परमधाम और वहां की खिलवत, वाहेदत, हकीकत और निसबत के भेद खोले, दूर कर दिया और ऐसी वाणी को हमसे छीन कर आग, पानी, पत्थर की पूजा करवाई। व्यास जी ने सत्रह पुराणों में इतना घोर कर्मकाण्ड और मुनष्य पर अज्ञानता का अंधकार लादा, जिस पर उनके गुरू नारद जी ने भी बुरे अपमानित शब्दों में फटकारते हुए कहा कि तुमने जो सत्रह पुराणों में इतना घोर अंधकार का ज्ञान लिख दिया कि जिससे तुम खुद दुःखी हो तो तुम्हारे इस ज्ञान से संसार को क्या लाभ होगा? तब व्यास जी ने गुरू कृपा से भागवत लिखी और श्री राजजी के हुक्म से नित्य वृन्दावन में हुई रास का थोड़ा वर्णन उनसे करवा दिया। जिससे आज के गुरूओं ने झूठी गादियों की प्रथा चलाकर उसे शुरू कर दिया, इन्होंने जिस प्रथा को प्राणनाथजी ने बन्द किया था, उसे शुरू कर वाणी को जाहिर नहीं होने दिया और जगह जगह प्रणामी समाज को भ्रम में डाल कर वाणी से वंचित कर उनको भागवत में लगा दिया और खुद भी वृक्षों की पूजा करनी शुरू कर दी और सूचना पट भी लिखवा दिया कि यह वृक्ष मुक्ति का दाता है। दोपहर को शयन करता है। उसकी आरती उतारी जाती है और भोग लगाया जाता है और उधर भागवत की पूजा की झूठी आरती बना कर श्यामा महारानी सतगुरू श्री धनी देवचन्द्र जी के नाम की आड़ लेकर आरती में लिखा गया है कि श्री देवचन्द्र जी कह गए हैं कि जो भागवत को पढ़ेगा, वह परमधाम जायेगा।

ऐसे समाज के झूठे संगठन और महाराज हैं। यदि भागवत का हर श्लोक उनके लिए पूज्य है, तो क्या कारण है कि श्रीमदभागवत स्कन्ध १० अध्याय – ८४ श्लोक १३ में व्यास जी पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि–

Nijanand App

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।
यत्तीर्थबुद्धि सलिले न कर्हिचज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।।

भा० १०/८४/१३

वासुदेव के यज्ञ में श्री कृष्ण जी ऋषियों से कहते है—

हे महात्माओं और सभासदों! जो मनुष्य वात, पित्त और कफ इन तीन धातुओं से बने हुए मृतक शरीर (शव तुल्य) को ही आत्मा और शरीर से लगे हुए स्त्री—पुत्र आदि को अपना समझता है और मिट्टी, पत्थर, लकड़ी (वृक्ष) आदि सांसारिक विकारों (पंच तत्वों से निर्मित कोई भी वस्तु) को ही इष्ट देव मानता है तथा जल की पूजा करता है, ज्ञानी पुरूषों का आदर नहीं करता वह मनुष्य होने पर भी पशुओं में नीच गधा ही है।

इस श्लोक की तरफ ध्यान दिलाने का अर्थ यह नहीं है कि मैं किसी को अपमानित कर रहा हूँ। भागवत में जो भौतिकवाद अर्थात् तन से ऊंचा उभर कर आत्मा की तरफ रास्ता दिखाने वाला ज्ञान है उसे छोड़ कर वे लोग नीचे क्यों गिर रहे हैं?

यदि धनी श्री देवचन्द्र जी को भागवत से ही सब ज्ञान हुआ था तो जब पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी (श्री राज जी) सामने आए और केवल दो प्रश्न पूछे—

१. मैं कौन हूं? क्या मेरे स्वरूप को पहचानते हो और

Nijanand App

तुं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन।

नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।

कलस हि० – १/६

तो श्री देवचन्द्र जी महाराज उनको देखते ही रह गए और उनके एक भी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं दे सके। फिर दोनों प्रश्नों का उत्तर पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने बताया और उनके तन में बैठे। उसके बारे में खुद सोचे और विचार करें कि जब श्री देवचन्द्र जी के तन में पूर्णब्रह्म आकर बैठ गए तो व्यास जी जो विष्णु भगवान के कला अवतार हैं, उनका ज्ञान सुनने के लिए श्याम जी के मन्दिर गये? कभी नहीं! और न ही कभी श्री देवचन्द्र जी ने भागवत से प्रचार किया। पहले साथी गांग जी भाई को –

जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पहचान।

अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए।।

सनेह सों सेवा करी जो घनीं, पेहेचान के अपना धाम धनी।

प्र० हि० प्रगट वाणी चौ० ८०, ८१

अर्थात् पार की वाणी जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही उनके अन्दर बैठे प्राणनाथ की पहचान की और सारी उम्र सेवा की। भागवत को सुन कर दुनियां तो क्या भव से पार होती, बल्कि कर्म काण्डों में ही उलझ कर रह गई। शुकदेव जी भी राजा परीक्षित के प्रश्न करने पर कि नित्य वृन्दावन कहां है? का उत्तर नहीं दे सके और बाद में तड़प तड़प कर उस वृन्दावन के सुख को रोते रहे तो क्या उनकी भागवत हमें परमधाम पहुंचा सकती है? खुद सोचें, नहीं! कभी नहीं! पहुंचा सकती। क्या कभी सतगुरू श्री देवचन्द्र जी ने, श्री प्राणनाथ जी ने, महाराजा छत्रसाल जी ने, सर्वश्री महाराज लाल दास जी ने, महाराज केशवदास जी ने, मुकुन्द स्वामी जी ने या परमहंस मेहरदास जी ने, महाराज रंगी लाल जी ने, भगवान दास जी ने, भईया सीताराम, बाबा दयाराम साहब ने; परमहंस महाराज रामरतन दास जी ने भागवत का प्रचार किया? नहीं–तो इस से स्पष्ट होता है कि भागवत एक कोहेड़ा है, और इससे लोग केवल अपने मान, प्रतिष्ठा और संसार के प्रलोभनों की प्राप्ति के लिए उस पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की अखंड वाणी जो सब जीवों को भव से पार अखंड करने के लिए, ईश्वरी सृष्टि को परमधाम की सुध देने के लिए और ब्रह्मसृष्टि को निजघर ले जाने के लिए आई

Nijanand App

है। ऐसी पूज्य और महान वाणी को ढाँप कर कुछ मायावी लोगों के संगठन अपने अग्नि जैसे प्रज्वलित होम और मान की भूख में श्री श्यामा महारानी सतगुरू श्री देवचन्द्र जी द्वारा प्रगट की हुई निजानन्द सम्प्रदाय और पूर्ण रूप से जाहिर करने वाली उस पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ जी की पद्धति जो शास्त्रों द्वारा सिद्ध ज्ञान देती है, को अपनी गादियों के प्रभाव से और अपनी अयोग्यता के कारण ब्रह्मज्ञान को न समझने के कारण, जब श्री निजानन्द सम्प्रदाय की अखंड वाणी को नहीं समझा सके तो उस पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ को, जो सब का एक है केवल एक हिन्दुओं का परमात्मा बना कर कृष्ण नाम के दायरे में बांध कर एक नया धर्म "श्री कृष्ण प्रणामी" चलाया।

यदि वही सत्य है, तो कृपया उसकी पद्धति क्या है? यह उनसे पूछते हैं, तो वे कृष्ण के पूर्णब्रह्म होने का प्रमाण कुरान बाइबिल से नहीं दे सकते हैं। उल्टा अपने गादी पति होने के प्रमाण और झूठे सामाजिक संगठन का प्रभाव दिखा कर लोगों को डराते हैं, और जहां–जहां श्री कुलजम स्वरूप की वाणी की सच्चाई, गरीबी, सेवा भाव से प्रचार और प्रसार को यह लोग देखते हैं तो उसी तरह से जैसे बिहारी जी ने अपने शिष्यों को वाणी से वंचित रखा और प्रचार किया कि वाणी सुनने मत जाओ। जो वाणी सुनने जायेगा, उसे हम धर्म से निकाल देंगे। श्री प्राणनाथ जी की मेहर सदा अपनी आत्माओं को ऐसे लोगों के फंदे से छुड़ा कर अखंड परमधाम ले जाने के लिए होती रही, हो रही है और सदा होती रहेगी।

इसी के प्रमाण स्वरूप जब श्री निजानन्द सम्प्रदाय का नाम बदल कर श्री कृष्ण प्रणामी कर दिया गया और पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की जगह नित्य वृन्दावन वाले श्री कृष्ण की पूजा और निजबुद्धि के ज्ञान स्वरूप श्री कुलजम स्वरूप की वाणी को हटा कर एक ऋषि की भागवत को आगे लाकर ब्रह्मसृष्टि को गुमराह करने वाला बिना पद्धति के कृष्ण प्रणामी धर्म खड़ा हो गया, तो पूर्ण ब्रह्म प्राणनाथ जी ने अपनी ही शक्ति से असत्य के सामने फिर अपना बल, बुद्धि, हुक्म, मेहर, जोश, इल्म और पूरी शक्ति अपने कुछ मोमिनों के हृदय में भर कर श्री निजानन्द सम्प्रदाय का जागनी अभियान चलाया।

धन्य हैं वे सुन्दर साथ! जिन्होंने दिन रात झूठे आरोप, अपमान जनक बातों, अनेकों कठिनाइयों को सहन कर, यहां तक कि अनेक लोगों ने अभियान न लगने

Nijanand App

पाए, ऐसी रूकावटें डालीं, परन्तु सत्य को मिटाने में झूठ हमेशा असफल रहा जिसके कारण भारतवर्ष और विदेश में भी जागनी अभियान के सदस्यों ने श्री प्राणनाथ जी के बल पर उनके हुक्म से खड़े होकर प्राणनाथ जी को सारी दुनियां में सच्चा भर्तार, पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द जाहिर करके और यह संसार तथा यहां के लोग और लोभी गुरू जो छल–कपट और झूठ के प्यासे हैं, सिद्ध कर दिया कि यह झूठे संसार का रूप है और पूर्णब्रह्म प्राणनाथ ही सच्चे भर्तार हैं जो सब मानवों के, सब पैगम्बरों के, देवी–देवताओं और गुरूओं के ईश्वरों के ईश पूर्णब्रह्म हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि संसार झूठा है और सच्चा मेरा भर्तार प्राणनाथ है, जिसकी याद में मेरी आत्मा गुनगुनाती रहती है।

भजन (१)

आज वाणी की धुनि सुनी।

सखी री आज वाणी की धुनि सुनी।

सुध न रही कछु धाम धनी की, ना सुध थी अपनी।।

आज वाणी की धुनि सुनी।

मैं जो आयी खेल देखन को, सुध बुध सब बिसरी।।

आप पहचान करायी आकर, अंगना जान अपनी।

आज वाणी की धुनि सुनी।

त्रैगुण फांस के फंद पड़ी थी, आए के मुक्त करी।

देवी देव और कृष्ण से छुट्टी, श्री प्राणनाथ है धनी।।

सखी री आज वाणी की धुनि सुनी।।

भजन (२)

नाम से परे है पिया, नाम तो धराया यहां।

जाने सब नाम को, नाम का न काम वहां।।

शब्दों में आए शब्दातीत जो केहेलाए रे।

Nijanand App

नाम से परे है पिया, नाम तो धराया यहाँ।।

दुनी नाम सुन नरक कट जाये रे।

नाम असल हम पे, अखण्ड सुख पाये रे।।

भेद समझ पिया तेरा जो जाये रे।

वो ही पिया तेरे गुण को यहां गाये रे।।

शब्दों में आये शब्दातीत जो केहेलाये रे।

नाम श्रीकृष्ण श्री देवचन्द्र धराये रे।।

नाम दोऊ मेट प्राणनाथ कहलाये रे।

कारण रूहों के कई भेष बनाये रे।।

निसबत बिना कोई जान न पाये रे।

शब्दों में आये शब्दातीत जो कहलाये रे।।

शब्दों से ही सुध पिया की आये रे।

इश्क की लज्जत शब्दों से पाए रे।।

धार के तन पिया माया में आए रे।

सनमंध की सुध शब्दों से पाए रे।।

शब्दों में आए शब्दातीत जो कहलाये रे।।

मोह तत्व यहां, रास श्री कृष्ण तत्व।

नूर तत्व परमधाम सोहाए रे।।

तारतम बिना कोई भेद न पाए रे।

तारतम सबकी कुंजी कहलाए रे।।

शब्दों में आए शब्दातीत जो कहलाये रे।।

यह चौदहवीं तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

पन्द्रहवीं तरंग

श्री कृष्ण पूर्णब्रह्म हैं ही नहीं

प्यारे सुन्दरसाथ जी, एवं साथियों! आइए! उस श्रीकृष्ण की खोज करें, जिस नाम से श्री प्राणनाथ जी एवं उनकी वाणी को ढांपा जाता है। स्वयं एक हिन्दू तन वाला होने से हमारे लिये भी यह विचार करना जरूरी हो जाता है कि हिन्दुओं में से बहुत से लोग विध विध रूपों में श्रीकृष्ण की उपासना करते हैं। जैसे – भागवत वाले प्रभू भक्ति से, स्वाध्याय (गीता) वाले योगेश्वर के रूप में तथा वल्लभाचार्य वाले उन्हें अपना परमात्मा सखी भाव के रूप में मानते हैं। भागवत, माहेश्वर तन्त्र, पुराण संहिता इत्यादि में 'श्री कृष्ण' को पूर्ण ब्रह्म कह कर वर्णन किया गया है। इन ग्रन्थों के लिखने वालों ने श्रीकृष्ण की ११ वर्ष ५२ दिन वाली ब्रज लीला को देखते हुए पूर्णब्रह्म की उपाधि दे दी। श्रीमद्भागवत एवं महाभारत के रचनाकार यदि श्री कृष्ण जी के द्वारा यशोदा, राधा एवं गोपियों से आने के झूठे वायदे करने तथा १६१०८ कन्याओं से विवाह करने एवं महाभारत के युद्ध में सम्पूर्ण क्षत्रिय वंशी राजाओं के विनाश की लीला की हकीकत जान जाते तो वे कदापि श्री कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म के रूप में वर्णन नहीं करते। गीता का अवतरण भी विशेष परिस्थितियों में हुआ। कौरवों की विशाल सेना के समक्ष अर्जुन ने कृष्ण जी का ही सहारा लिया, क्योंकि उन्हें विष्णु भगवान के स्वरूप श्रीकृष्ण जी की पहचान हो चुकी थी। जब श्री कृष्ण जी सारथी बन कर युद्ध के मैदान में आये तो अर्जुन ने कहा कि हे प्रभो! मुझे उन दोनों सेनाओं के मध्य में ले चलिए ताकी मैं यह देख लूं कि मुझे किस–किस से युद्ध करना है।

जब श्री कृष्ण जी दोनों सेनाओं के मध्य रथ ले गये तो कृपाचार्य, भीष्म पितामह तथा द्रोणाचार्य आदि गुरूजनों को देखकर अर्जुन का मन युद्ध से विरक्त हो गया और अपना गांडीव धनुष नीचे रख कर श्रीकृष्ण जी से रथ वापस लौटाने के लिये कहा। अर्जुन ने अपने पूज्य गुरूजनों का वध घोर पाप समझा और श्री कृष्ण जी के युद्ध के लिए उकसाने पर भी स्पष्ट मना कर दिया तथा कहा कि हे प्रभो! मैं युद्ध नहीं कर सकता। आप रथ को वापस ले चलिए।

सारे विश्व में यह बात फैली हुई थी कि जिधर श्री कृष्ण होंगे, उधर ही

Nijanand App

विजय होगी। किन्तु श्री कृष्ण ही जिस अर्जुन के सारथी हों और वह ही युद्ध न करे, तो श्री कृष्ण जी की महिमा पर बहुत बड़ा कलंक लगता। अतः अर्जुन को युद्ध के लिये उकसाते हुए उन्होंने ज्ञान योग, भक्तियोग, राजयोग, सांख्य योग, मातृदेवो भव, पितृ देवो भव इत्यादि का उपदेश देते हुए निष्काम कर्मयोग का उपदेश दिया और कहा कि–

हे अर्जुन! तुम्हारा अधिकार तो केवल कर्म में ही है। फल देने वाला मैं हूं। युद्ध में मरने पर तुम स्वर्ग को प्राप्त करोगे और जीवित रहने पर पृथ्वी के सुखों का उपभोग करोगे। अर्जुन के द्वारा अपने गुरूजनों पर प्रहार करने में असमर्थता व्यक्त करने पर श्रीकृष्ण जी ने अपना विराट स्वरूप दिखलाया जिसमें अर्जुन ने यह देखा कि भीष्म, द्रोणाचार्य इत्यादि तो पहले ही मर चुके हैं। उन्होंने उस विराट् स्वरूप के अन्दर करोड़ों जीवों को जन्म लेते हुए और मरते हुए भी देखा।

श्री कृष्ण जी ने बताया कि ये सभी प्राणी मेरे ही अंश है– मैं तो स्वयं जीव (नारायण) हूं। यथार्थ में उत्तम पुरूष अक्षरातीत ही पारब्रह्म है। इन गुरूजनों को मारने में पाप इस लिये नहीं लगेगा, क्योंकि इन्होंने द्रौपदी के चीरहरण के समय कोई भी विरोध नहीं किया, बल्कि अब दुर्योधन के ही समर्थन में लड़ने के लिए इस युद्ध में एकत्र हुए हैं।

हे साथ जी! आज तक अर्जुन के सिवाय अन्य कोई भी ऐसा कृष्ण भक्त नहीं हुआ है, जिसने अन्धकार में भटकाने वाले गुरूजनों के विरूद्ध कुछ भी विरोध किया हो।

महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण जी की राजनीति कुशलता के कारण ही गुरू द्रोणाचार्य मारे गये तथा भीष्म पितामह जैसे धर्मनिष्ठ ब्रह्मचारी को भी बाणों की सेज पर बहुत दिनों तक लेटे रहना पड़ा। क्या इस प्रकार की लीला पूर्ण ब्रह्म भी कर सकते हैं? जबकि उन्हें धर्मग्रन्थों में अति कृपालु, अति दयालु, अल रहमान, अल रहीम लिखा है।

कर्मण्येव अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।

Nijanand App

गीता में श्रीकृष्ण जी उपदेश देते हैं कि मैं जब जब आता हूं तब–तब साधुओं की रक्षा और दुष्टों का विनाश करता हूं। पारब्रह्म यदि केवल साधुजनों का ही है दुष्टों का नहीं, तो उनका उद्धार कौन करेगा? धर्मग्रन्थों में तो पारब्रह्म के बारे में कहा गया है कि वह केवल एक है और सबका है। जो केवल दुष्टों का संहार ही करे और अखंड मुक्ति नहीं दे सके, वह कदापि पूर्णब्रह्म नहीं कहला सकता।

अर्जुन के द्वारा जन्म–मरण से छुटकारा दिलाने की चाहना पर श्रीकृष्ण जी गीता अ० १८ में कहते हैं कि केवल अक्षरातीत पारब्रह्म ही मुक्ति दे सकता है। महाभारत युद्ध की समाप्ति पर दुबारा गीता का ज्ञान सुनाने की इच्छा पर श्री कृष्ण जी ने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया और म०भा० अश्वमेध पर्व अ० १६ श्लोक ६–१३ में कहा कि परमात्मा की कृपा से वह ज्ञान मुझसे कहलवाया गया था। मुझे वह अब याद नहीं है। मैं दुबारा कहने में असमर्थ हूं। क्या पूर्ण ब्रह्म भी इस प्रकार अल्पज्ञ हो सकता है?

यशोदा, गोपियों एवं राधा से वापस आने का झूठा वायदा करने वाले श्रीकृष्ण मथुरा से द्वारिका चले गये और १६१०८ रानियों के साथ लीला करते रहे, किन्तु कभी ब्रज में आकर नन्द, यशोदा एवं गोपियों की सुध नहीं लिये। क्या पूर्ण ब्रह्म का भी कथन कभी मिथ्या हो सकता है? यदि ऐसा हो सकता है तो वह किस ग्रन्थ में लिखा है?

महाभारत के राजनीतिज्ञ योगेश्वर श्री कृष्ण के भक्त भी ऐसे होते हैं जो अपने गुरू की अर्थी निकलने के समय आजकल भण्डारे करके भोजन करते हुए खुशियों में मस्त रहते हैं। पूर्ण ब्रह्म के प्रेमी तो इस चौदह लोकों की दुनिया से ही पीठ मोड़े रहते हैं।

उतपंन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार।।

किरंतन ८/६

अब सुन्दरसाथ जी! पारब्रह्म अक्षरातीत ने आकर ब्रज में अपनी आत्माओं और अक्षर ब्रह्म को लीला दिखायी थी, उसमें जो तन धारण किया था, ११ साल ५२ दिन वाली उस लीला के बाद उस तन सहित सारे ब्रह्माण्ड का ही लय कर दिया था। यह ब्रह्माण्ड तो ज्यों का त्यों बना है, जिसको बने हुए लगभग ५००० वर्ष हो चुके हैं। इसलिये श्री कृष्ण का नाम भी अब तक ज्यों का त्यों चला आ

Nijanand App

रहा है। परन्तु हकीकत में श्री कृष्ण नाम आया कहां से? और जिसने श्री कृष्ण के तन में आकर लीला की थी, उसी प्राणनाथ जी ने आकर ये सारे भेद खोले और दुनिया की इस भ्रान्ति को मिटाया और कहा कि परमधाम में श्री कृष्ण है ही नहीं। इस भ्रान्ति को मिटाने के लिये ही धाम धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं–

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सार तणों तारतम।

प्र० गु० ३३/२३

यहां यह स्पष्ट जाहिर है कि तारतम के सार का जो फल है, वह यह निकला कि परमधाम दिव्य ब्रह्मपुर धाम है और श्रीकृष्ण योगमाया में है। परमधाम में कोई श्री कृष्ण नहीं है।

एह सरूप ने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।

घर थी तीत ब्रह्माण्ड थी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।।

रास १०/३६

तारतम ज्ञान ने स्पष्ट निर्णय कर दिया कि श्री कृष्ण का यह स्वरूप वृन्दावन में है, जहां यमुना जी भी हैं। यह परमधाम से भी अलग तथा इस ब्रह्माण्ड से भी परे योगमाया में है।

अब सुन्दरसाथ जी! विचार करना है कि आखिर इतना ऊंचा तारतम का ज्ञान इस दुनिया में आया कैसे? और इसे कहा किसने? तो संवत् १६३८ में उमरकोट में मत्तू मेहता के घर श्री देवचन्द्र जी नामक एक पुत्र का जन्म हुआ जिनके अन्दर परमधाम की श्यामा महारानी ने प्रवेश किया। माया के घोर अन्धकार में श्यामा जी भी भूली रहीं, और फिर उस तन में परमधाम की आत्मा होने के कारण यह विचार उपजा कि–

जब भया बरस अग्यारवों, तब मन उपज्यो विचार।

मैं कौन कहां थे आइया, कहां है मेरो भरतार।।

बी० सा २/२६

तो उसके बाद हिन्दू संसार के बड़े–बड़े ज्ञानी लोगों से पूछने पर यह पता चला कि परमात्मा निराकार और घट–घट में व्यापक है। अतः उन्होंने यह निर्णय ले लिया कि तब तो ऐसे व्यापक परमात्मा को पाना बहुत सरल है। इसी

Nijanand App

खोज में वे श्याम पिंगल की मूर्ति की चार वर्षो तक परिक्रमा और दण्डवत् प्रणाम करते रहे, किन्तु उस जड़ मूर्ति ने कभी भी उनका प्रणाम स्वीकार नहीं किया।

१५–१६ वर्ष की आयु हो जाने के पश्चात् मत्तू मेहता के मन में विचार आया कि अब पुत्र बड़ा हो गया है। अतः उन्हें व्यापार सिखाने की इच्छा से कच्छ (भोज नगर) में ले गये। वहां ही राधा वल्लभी मार्ग के उनके गुरू हरिदास जी रहते थे। दूसरे दिन उन्होंने श्री देवचन्द्र जी से कहा कि चलो! मैं तुम्हें व्यापार का ढंग सिखा लाऊं। देवचन्द्र जी ने कहा कि मैं पहली बार आया हूं, अगली बार से व्यापार सीखूंगा। उन्होंने प्रसन्न होकर स्वीकार कर लिया और स्वयं व्यापार के लिये चले गये।

श्री देवचन्द्र जी का मन माया में नहीं था। वे परमात्मा की खोज मे लगे रहे। उन्होंने वहां गली–गली में चर्चा होते हुए देखा। सत्संग से ही विवेक होता है। उन्होंने हरिदास जी से २–३ दिन में ही काफी ज्ञान प्राप्त कर लिया। किन्तु उसके बाद पिताजी के आग्रह पर घर लौट गये, किन्तु उमरकोट उनको श्मशान जैसा लगने लगा, क्योंकि पानी की वहां कमी होने से साधु संतों का आगमन नहीं हो पाता था और उन्हें सत्संग नहीं मिल पाता था। इसलिये उन्होंने उमरकोट छोड़कर भोजनगर (कच्छ) जाने का निर्णय कर लिया।

वहां के राजा के लड़के की बारात कच्छ में जा रही थी। यह पता चलने पर उनके साथ ही कच्छ चलने का निर्णय कर लिया और घर में आकर रास्ते के लिए सीधा सामान, वस्त्र, गठरी तथा रक्षा के लिये कटार भी रख ली। अब जब वह जाने का दिन आया तो उठ कर क्या देखा कि माता–पिता बारात के जाने के समय ही खाट पर दरवाजे के बाहर बैठे हैं। उनके वहां से हटने पर जब वे बाहर आये, तब तक बारात चली गयी थी। तब उन्होंने अपना सामान कमर में बाँधकर बारात के जाने की राह पर भागना शुरू किया। जहां तक घोड़ों के टापों से बालू की धूल उड़ती हुई दिखायी दी, वहां तक वो भागते रहे। रात्रि हो जाने से उजाला समाप्त हो गया और आगे–पीछे कुछ भी दिखायी नहीं पड़ता था। रेतीला मुल्क होने के कारण वहां कोई रास्ता बतलाने वाला भी नहीं था। ऐसी स्थिति में १६ साल के बालक का भयभीत होना स्वाभाविक था कि यदि कोई चोर आ गया तो कौन मेरी सहायता करेगा? ऐसा जब वे सोच ही रहे थे कि वह पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी, जो कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा हो ही

Nijanand App

नहीं सकते, एक पठान का रूप धारण कर मुंह पर दाढ़ी और तलवार लेकर सामने से आते हुए दिखायी दिये। ऐसे भेष में भला कौन उन्हें पहचान सकता है कि ये ही धाम के धनी है। श्री देवचन्द्र जी ने भी यही समझा कि यह चोर है, जो मुझे मारेगा।

इतने में वह सामने आ गये और देवचन्द्र जी से बोले कि ए लड़के! मुझे अपनी कटार दे दो। बीतक साहब में स्पष्ट लिखा है कि

दई हाथ में श्री राज। २/६१

जब उन्होंने उनकी गठरी भी ले ली और अपना पटुका बिछाकर जब उस पर लेटने के लिये कहा तो श्री देवचन्द्र जी समझ गये कि अब यह मुझे मार डालेगा। किन्तु इसके विपरीत ही हुआ। वे तो साक्षात् श्रीराज जी ही थे। उन्होंने अपने भाले का सहारा लेकर अपने शरीर के बोझ से श्री देवचन्द्र जी के उस पेट के दर्द को मिटा दिया जो दौड़ने के कारण हो रहा था। श्री देवचन्द्र जी उन्हें पहचान नहीं सके। पेट का सूल मिटाने के बाद उन्होंने उठने का आदेश दिया तथा उनकी गठरी उठाकर पीछे–पीछे आने को कहा। उन्होंने यह समझा कि यह चोर मुझे मारेगा तो नहीं बल्कि गुलाम बनाकर मुझसे सेवा करवायेगा और मैं सेवा करते हुए ही अपने परमात्मा को खोज लूंगा।

अब श्री राज जी ने श्री देवचन्द्र जी को अपनी कृपा दृष्टि से बारात के पीछे पीछे वहां पहुंचा दिया जहां, उन्हें जाना था। वहां पहुंचा कर तलवार और गठरी देकर कहा कि सामने देखो! क्या तुम यहां ही पहुंचना चाहते थे? अच्छी तरह देखकर बताओ।

श्री देवचन्द्र जी जब अच्छी प्रकार से बारातियों को पहचानने लगे तो श्री राज जी अदृश्य हो गये। तब श्री देवचन्द्र जी के मुख से यही निकला कि–

मेरा किनने पकड़ा था हाथ। बी० सा० २/७६

अब उन्हें पहचान हुई कि मैं जिन्हें चोर और डाकू समझ बैठा था, वह परमात्मा ही मेरे साथ थे। अब वह मुझसे कभी भी दूर नहीं रह सकते। मैं अब अवश्य ही उनकी खोज कर लूंगा। जब वे आगे बढ़े तो बारात के सिपाहियों ने उन्हें अनजान समझा और पकड़ कर वजीर के पास ले गये। वजीर उन्हें देखकर आश्चर्य में पड़ गया कि इन तेज दौड़ने वाले घोड़ों के पीछे–पीछे बिना

Nijanand App

सवारी के ये कैसे यहां तक पहुंच गये? श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि मैं आप लोगों के घोड़ों के पैरों के निशान के सहारे चला आया। उसने सुरक्षित पहुंचने के लिये परमात्मा का शुक्र मनाया। उसने जब भोजन के लिये आग्रह किया तो उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया कि मैं स्वयं बनाकर खाता हूं। वजीर के बहुत आग्रह करने पर उनसे भोजन की सामग्री लेकर उन्होंने भोजन बनाया और भोजन बनाकर उस स्वरूप (पठान) का भोग रोते हुए लगाया कि हे मेरे पठान! आकर भोजन कर लो। पुनः थोड़ी देर लेट कर आराम करने के बाद भोजनगर आये और खोज प्रारम्भ कर दिया।

कच्छ में भी सबसे पहले मूर्तियों के ही पास जाना पड़ा। अन्त में वहां सत्संग न मिलने से उन्होंने सोचा कि जब तक सन्यास मत स्वीकार नहीं किया जाता तब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। अतः वे सन्यासियों के मठ में गये। वहां सन्यासियों के मुनियों ने कहा कि जब तक तुम हमें गुरू धारण नहीं करोगे, तब तक हम तुम्हें ज्ञान नहीं देंगे। हमें गुरू के रूप में मानने पर हम तुम्हें परमात्मा से मिला देंगे। उन्होंने उन से दीक्षा लेकर प्राणायाम इत्यादि सभी साधनायें किया किन्तु जब कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वहां के राजगुरू जो गोरखनाथ जी के पंथ के थे, उनके पास गये किन्तु वे लोग १२ वर्ष सेवा करा कर ही दीक्षा देते थे। वहां से वे मस्जिद भी गये, तथा उजू, नमाज आदि सब कुछ किये, किन्तु वहां भी कुछ प्राप्त न होने पर २१ वर्ष की आयु में हरिदास जी के पास पहुंचे। जहां उन्होंने हरिदास जी की सांचवटी और सच्चा सखी भाव देखा। अपने मन्दिर में बाल मुकुन्द और बांके बिहारी की सखी भाव की सेवा में तल्लीन हरिदास जी को देखकर श्री देवचन्द्र जी को यह निश्चित हो गया कि यहां पर कुछ प्राप्त हो सकता है। परन्तु उधर उनके माता–पिता उनकी अनुपस्थिति से बहुत व्याकुल हो चुके थे। उनको सन्देश भेजने पर वे भी भोजनगर ही आ गये।

घर–परिवार वालों ने उनको बहुत समझाया, लेकिन किसी की भी बात उन्हें दृढ़ता से हटा नहीं सकी, क्योंकि वे माया को चाहते ही नहीं थे। हरिदास जी की सच्चाई देखकर उन्होंने सोचा कि यदि कुछ लेना है तो सच्ची सेवा करके ही पाया जा सकता है। यह सोचकर श्री देवचन्द्र जी हरिदास जी के घर वालों के सो जाने पर उनके घर के बर्तन आदि धोने की सभी सभी सेवा करते थे। बाद में पता चल जाने पर हरिदास जी ने सोचा कि अपने आत्मिक कल्याण के लिये सेवा करने वाले देवचन्द्र जी को दीक्षा दे देनी चाहिए। इस बात का निर्णय कर उन्होंने दीक्षा के लिये शुभ मुहर्त भी निकाल लिया। उ

Nijanand App

र उनके माता पिता ने यह सोचा कि जब तक उनकी शादी नहीं करेंगे, तब तक वे माया में नहीं फंसेंगे। इसलिये उन्होंने उनकी सगाई भी निश्चित कर दी। संयोगवश उनकी सगाई का भी वही दिन निश्चित हुआ, जो उनकी दीक्षा का दिन निश्चित हुआ था।

श्री देवचन्द्र जी जैसे नित्य प्रति हरिदास जी के मन्दिर जाते थे, उसी क्रम के अनुसार वे उस दिन भी पहुंचे तो हरिदास जी ने पूछा कि क्या तुमने पहले भी किसी से गुरू दीक्षा ली है। तो श्री देवचन्द्र जी ने बताया कि सन्यास मत वालों से गायत्री मन्त्र की दीक्षा लिया हूं और उसी का मैं मनन करता रहता हूं। हरिदास जी ने कहा कि उस मन्त्र को कागज पर लिख कर गूंथे हुए आटे के पेड़े (लोन) में रखकर रोटी बना कर किसी सन्यासी को दान कर देना तो वह सन्यासी के पास चला जायेगा। मैं आपकी सेवा पर प्रसन्न होकर नित्य वृन्दावन के बांके बिहारी का मन्त्र देकर गोपी भाव बनाने वाली दीक्षा दूंगा।

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि यदि नित्य वृन्दावन वाले बांके बिहारी की शक्ति अधिक होगी, तो वह मन्त्र मेरे हृदय से निकल जायेगा और मैं कभी भी उसे याद नहीं करूंगा और यदि गायत्री की शक्ति अधिक होगी तो वह मेरे अन्दर से कभी भी नहीं निकलेगा। हरिदास जी उनकी तीक्ष्ण बुद्धि पर चकित हो गये और कहा कि जहां श्री देवचन्द्र जी की सोच है, वहां तक मेरी बुद्धि नहीं पहुंच सकती।

हरिदास जी ने उनसे कहा कि जाओ! भद्र भेख (मुण्डन वाला) हो आओ क्योंकि तभी आपको मन्त्र दूंगा। तुरन्त श्री देवचन्द्र जी मुण्डन कराकर आ गये और जहां बाल मुकुन्द तथा बांके बिहारी की मुर्ति पधरायी हुई थी, वहां देवचन्द्र जी को बैठाकर समझाया कि ये दोनों श्रीकृष्ण के स्वरूप बाल मुकुन्द और बांके बिहारी योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड हैं और वहां लीला कर रहे हैं। उन्हीं को अपनी आत्मा का स्वामी मानकर और स्वयं को गोपी समझ कर नित्य इनका ध्यान करने से वे अवश्य आपके अनुभव में आयेंगे। यह समझाकर दीक्षा दी कि

'भज मन श्री वृन्दावन, कुंज बिहारी नित्य विलास। बी० सा० ३/३६

सखी भाव होए भजियो, उपदेस करके एह।। बी० सा० ३/३७

उसी दिन श्री देवचन्द्र जी की सांसारिक शादी का भी दिन निश्चित हुआ था। पिताजी ने श्री देवचन्द्र जी को मुण्डन कराया हुआ देखकर जो रोष प्रगट किया, वह लिखने से बाहर है। श्री देवचन्द्र जी यह सब सुनकर चुप रहे। पिताजी

Nijanand App

उसी दिन श्री देवचन्द्र जी की सांसारिक शादी का भी दिन निश्चित हुआ था। पिताजी ने श्री देवचन्द्र जी को मुण्डन कराया हुआ देखकर जो रोष प्रगट किया, वह लिखने से बाहर है। श्री देवचन्द्र जी यह सब सुनकर चुप रहे। पिताजी के शान्त हो जाने पर पूछा कि आप क्या चाहते थे? जिससे शादी करनी थी, उससे मैं कर आया हूं। अन्त में उनकी सांसारिक लग्न लीलबाई से हो गयी।

श्री देवचन्द्र जी का अपनी आत्मा के लिए नित्य प्रति की सेवा का क्रम मन्दिर में चालू रहा, जिसे रात्रि में भी हरिदास जी ने देखा और जब उनसे सेवा का भार सहन नहीं हुआ तो उन्होंने निश्चय कर लिया कि मैं इन दोनों भगवानों की मूर्तियों में से एक देवचन्द्र जी को दूंगा। यह सोच कर उन्होंने श्री देवचन्द्र जी से कहा कि मैं तुम्हारी सेवा का भार सहन नहीं कर पाता हूं। तुम अपने घर ११ वर्ष ५२ दिन की लीला करने वाले बाल मुकुन्द की सेवा पधरा लो। श्री देवचन्द्र जी का एक ही व्रत रहता था कि गुरू वाक्यं ब्रह्म वाक्यं। अतः वे कहने लगे कि गुरूदेव! मैं तो यही चाहता था कि जीवन आपके चरणों में ही बीत जाय किन्तु जो आपकी आज्ञा होगी, मैं वही करूंगा।

वह दिन आने से एक दिन पहले की रात्रि में श्री देवचन्द्र जी और श्री हरिदास जी ने दोनों बाल मुकुन्द और बांके बिहारी की मूर्तियों को शयन कराया। हरिदास जी ने श्री देवचन्द्र जी से कहा कि तुम कल घर से पालकी सजा कर ले आना तथा बाल मुकुन्द जी की मूर्ति को पधराकर ले जाना। उसी रात बाल मुकुन्द जी की मूर्ति सिंहासन पर से अलोप (अदृश्य) हो गयी। जब हरिदास जी ने सुबह सेवा के लिये निज मन्दिर का किवाड़ खोला तो बाल मुकुन्द जी की मूर्ति सिंहासन पर न देखकर हैरान हो गये। मन्दिर का कोना–कोना छान मारा लेकिन मूर्ति नहीं मिली। तब हार कर बांके बिहारी जो नित्य वृन्दावन में रास करने वाले किशोर स्वरूप हैं, उनकी मूर्ति की सेवा करके भोग लगाकर बैठ गये और घर वालों को कह दिया कि जब तक बाल मुकुन्द साक्षात् दर्शन नहीं देंगें, तब तक मै अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा। इतने में श्री देवचन्द्र जी भी पालकी लेकर आ गये और बाल मुकुन्द जी की मूर्ति के अदृश्य हो जाने का वृतान्त सुनकर बोले कि हे गुरूदेव! आपने जब कह ही दिया तो वही आपका देना है। मैं ही इस योग्य नहीं हूं। इसलिये भगवान मेरे घर जाना नहीं चाहते हैं।

हरिदास जी ने कहा कि देवचन्द्र जी! आपके जितने ऊंचे भाव हैं, मैं समझ

Nijanand App

नहीं सकता, किन्तु जब तक वे दर्शन नहीं देंगे, तब तक मैं भोजन नही करूंगा। इस कारण उनके घर भी किसी ने भोजन नहीं किया। रात्रि की शयन सेवा के पश्चात् श्री देवचन्द्र जी घर चले गये और हरिदास जी उसी प्रतिज्ञा को निभाने के लिए बाल मुकुन्द जी की चितवनि में लीन हो गये।

आधी रात के पश्चात साक्षात् बालमुकुन्द जी गोलोक से आकर हरिदास जी को दर्शन दिये और कहा कि मेरी मूर्ति इसलिए अलोप हो गयी थी कि तुम मुझे जिस श्री देवचन्द्र जी के घर पधराते थे, उनके स्वरूप अर्थात अन्दर बैठी आत्मा की तुम्हें पहचान नहीं है। मैं तो उनका एहसान भी नहीं उतार सकता, क्योंकि इस ब्रह्माण्ड से पहले जो ब्रह्माण्ड था, उसमें मैं ही वसुदेव व देवकी के घर जन्म लेकर नन्द जी के घर आया था। मेरे ही तन में अक्षरातीत पूर्णब्रह्म ने आकर ग्यारह वर्ष और बावन दिन तक लीला की थी और मेरे ही इस तन का नाम गर्गाचार्य ने श्रीकृष्ण रखा था। ग्यारह वर्ष की लीला के बाद पूर्ण ब्रह्म ने मुझसे कहा था कि अब हम तम्हारे ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में जा रहे हैं। तुम अपने बैकुण्ठ जाओ, हम तुमको इस सेवा के बदले भव सागर से पार करके योगमाया में अखण्ड कर देंगे। ये उन्हीं पारब्रह्म की श्यामा महारानी हैं, जिन्होंने वृषभानु की लड़की राधा जी के तन में लीला किया था। वह राधा जी मेरे साथ लीला कर रही है। यह राधा नहीं है, बल्कि पूर्णब्रह्म की अर्द्धांगिनी हैं। हम नित्य उठकर इनके चरणों में प्रणाम करते हैं, इसलिए कभी भी भूलकर मुझे उनके घर भेजने का साहस नहीं करना, नहीं तो मैं कभी भी तुम्हें दर्शन नहीं दूंगा। यदि श्री देवचन्द्र जी उदास हो जायें, तो उन्हें बांके बिहारी के बागे वस्त्र, मोर मुकुट तथा मुरली की सेवा दे देना। उसको घर में पधराकर वे उनकी चितवनि करेंगे और ये सूचना जब अभी श्री देवचन्द्र जी को बताने के लिये, तुम उनके घर जाओगे, तो उधर से आते हुए श्री देवचन्द्र जी से रास्ते में ही भेंट हो जायेगी, तो तुम उनके चरणों में गिरकर उनके चरण पकड़ कर नतमस्तक हो जाना। यह श्री देवचन्द्र जी से सहन नहीं होगा कि मेरे गुरूदेव मेरे ही चरणों में प्रणाम करें। तो जब वे तुम्हें दोनों हाथों से ऊपर उठायेंगे, तो तुमने जो भूल में आज तक उनसे सेवा करवायी है, वह भूल मिट जायेगी। फिर उनको सब कुछ बतलाकर बागे वस्त्र की सेवा दे देना। यह कह कर बालमुकुन्द जी अदृश्य हो गये।

Nijanand App

सुन्दर साथ जी! यदि ११ वर्ष और ५२ दिन वाले श्री कृष्ण ही पूर्ण ब्रह्म हैं, तो वे श्री देवचन्द्र जी के डर से अलोप क्यों हो गये? यदि वे पूर्ण ब्रह्म होते तो अपनी अर्धांगिनी को अंगीकार करते। डर कर भागे क्यों? सोचना, आपका काम है। (ब्रज लीला की चितवनि में श्री देवचन्द्र जी को श्रीराज जी ने ही दर्शन दिया था, बाल मुकुन्द ने नहीं)

पिआ किए अति प्रसन, तीन बेर दिए दरसन।

प्र० हि० प्रगटवाणी ३७/७१

ऊपर लिखे अनुसार हरिदास जी ने श्री देवचन्द्र जी को सूचना दी। उनसे रास्ते में ही भेंट हुई और उनको बांके बिहारी तथा मोर मुकुट आदि देकर समझाया कि इन्हीं की सेवा करके नित्य वृन्दावन की चितवनि करना। उससे ही आपको बांके बिहारी का अनुभव होगा।

श्री देवचन्द्र जी बागे वस्त्र की सेवा घर ले जाकर अपने को राधिका मानते हुए और बांके बिहारी को प्रीतम मानते हुए उनकी सेवा करने लगे।

किसी भी देवी, देवता, तीर्थंकर, अवतार पैगम्बर ने श्रीकृष्ण जी के जमाने मे आने के लिये तपस्या नहीं किया। बल्कि उन्होंने कलियुग में पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का समय पाने के लिए तपस्या करके वर मांगा, ताकि हम उनके चरणों की कृपा से भवसागर से पार हो सकें।

गीता के श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं एक जीव हूं, और मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। तो जो जन्म–मरण के चक्र में है वह पूर्ण ब्रह्म कैसे है? और उसकी बनायी हुई दुनिया क्षर का रूप है न कि अक्षरातीत का।

पूर्ण ब्रह्म कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं हो सकते। यदि वे पूर्ण ब्रह्म होते तो मथुरा से लौट कर वापस गोकुल आ जाते।

दीप्यमानं स्ववपुषा दिव्यैरस्त्रैरुपस्थितम्।
चक्र प्रभूतिभिर्घोरैर्दिव्यैः पुरुष विग्रहैः।।
उपास्यमानं वीरेण फाल्गुनेन सुवर्चसा।
तथा स्वरूपं कौन्तेयो ददर्श मधुसूदनम्।।

म० भा० स्वर्गारोहण पर्व ४/३, ४

Nijanand App

महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व अ० ४/३, ४, ५ में कहा गया है कि–

युधिष्ठर ने स्वर्ग में देखा कि श्रीकृष्ण के शरीर से प्रकाश फैल रहा है। चक्र आदि दिव्य एवं भयंकर अस्त्र शस्त्र दिव्य पुरूष रूप धारण करके उनकी सेवा में उपस्थित हैं।

अत्यन्त तेजस्वी वीरवर अर्जुन भगवान की आराधना में लगे हुए हैं। कुन्तीकुमार युधिष्ठिर ने भगवान मधुसूदन का उसी रूप में दर्शन किया।

यदुकूल के विनाश के पश्चात यदि श्रीकृष्ण को स्वर्ग में ही स्थित मानें तो महाप्रलय में तो स्वर्ग का नाश हो जायेगा, फिर संसार को कौन भव से पार करेगा। क्या पूर्ण ब्रह्म के भी धाम का कभी नाश होता है?

इस तरह से इन सारे ग्रन्थों के अन्धकार को मिटा कर कलियुग में पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने आकर सभी भेद खोले। अधिक जानने के लिये श्री कुलजम स्वरूप साहब का मंथन करें तो ये सारे संशय मिट सकते हैं कि किशोर स्वरूप बांके बिहारी और बाल–स्वरूप वाले बाल मुकुन्द सबलिक ब्रह्म में अभी भी लीला कर रहे हैं।

सुन्दर साथ जी! श्री मुख वाणी के खुलासा ग्रन्थ प्रकरण पांच में आठों बहिश्तों का ब्यौरा पढ़िये, तो स्पष्ट होता है कि श्रीकृष्ण के दोनों स्वरूप चौथी और पांचवी बहिश्त में अखण्ड हैं।

हमारी आत्माओं को जब श्री प्राणनाथ जी अपने साथ लेकर परमधाम वापस जायेंगे, तो हमारे जीवों को अक्षर ब्रह्म के सत्स्वरूप की पहली भिस्त में अखंड करेंगे, जहां पर देवापि और मरू का जीव, प्राणनाथ जी और श्यामा जी का रूप धारण कर सिंहासन पर बैठेंगे। बाकी सातों बहिश्तों वाले जिनमें चौथी और पांचवी बहिश्त के बांके बिहारी और बाल मुकुन्द भी अपनी राधिका तथा गोपियों के साथ हमारे जीवों को परमात्मा मानकर प्रणाम किया करेंगे। तो आप बताइये कि ऐसी वाणी का मंथन करने के बाद योगमाया में अखण्ड श्रीकृष्ण के इन स्वरूपों को कैसे पूर्णब्रह्म माना जाय?

जो लोग तारतम लेकर भी अपने सच्चे अक्षरातीत प्राणनाथ की पहचान वाणी मंथन न करने के कारण नहीं कर सके, वे ही ऐसे मान और पैसे के लोभी गुरूओं के पीछे लगकर व्यास की गद्दी पधराकर भागवत की पूजा और भोग

Nijanand App

आरती करते हैं। कृपया वे बतायें कि क्या व्यास पूर्णब्रह्म है? भागवत की पूजा का अर्थ व्यास की पूजा है, क्योंकि श्री प्राणनाथ जी ने किरंतन में लिखा है–

आ तां व्यास नो कहयूं कहूं छूं, तमे मानजो साधो संत।

न मानो ते जई सुकजी ने पूछो, आ बेठा छे माहें भागवत।।

किरंतन १२६/१००

और श्री कुलजम सरूप में अपनी पहचान देते हुए धाम धनी स्पष्ट करते हैं।

महामत कहें सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।

धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।।

किरंतन ७६/२५

हे सुन्दर साथ जी! यदि आपकी साधन पद्धति में उस प्राणनाथ को पाने का साधन पतिव्रता साधन है, तो सोचिये, विचारिये कि हमें श्री कुलजम सरूप जो श्री प्राणनाथ जी का साक्षात स्वरूप है, उसे छोड़कर भागवत–पाठ, आरती करना तथा भोग लगाना पतिव्रता साधन है या वेश्या नारी का साधन है।

फिर भागवत तो केवल एक कर्मकाण्ड का ग्रन्थ है। केवल दसवें स्कन्ध में अखण्ड रास का पंचाध्यायी वर्णन हमारे लिये ही हमारे धनी ने लिखवाया था कि सुन्दर साथ संसार के सभी देवी देवताओं को छोड़कर भव से पार होने का प्रमाण नित्य वृन्दावन से ले सकें।

शुकदेव जी तो राजा परीक्षित को नित्य वृन्दावन का वर्णन भी नहीं बता सके तो भागवत के पाठ से परमधाम कैसे जा सकते हैं? अपनी भूल और भटकाने वाले रास्तों को छोड़ दें और पारब्रह्म अक्षरातीत के बताये क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत के रंगमहल के मूलमिलावे में विराजमान अपने धनी के चरणों का ध्यान धरें, जो पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत प्राणनाथ है। इनको अपनाने में अपना अपमान न समझें। यह किसी व्यक्ति का बताया मार्ग नहीं है, इसलिए अपने मान गुमान को छोड़कर श्री प्राणनाथ जी के चरणों को अपनाना ही हमारी आत्मा के कल्याण का एकमात्र मार्ग है क्योंकि वह अक्षरातीत है जहां कोई नाम, तत्व, गुण, खट प्रमाण जा ही नहीं सकते। ठीक है कि उन्होंने ब्रज–लीला के समय जो नश्वर तन धारण किया, उसका नाम अवश्य गर्गाचार्य ने 'कृष्ण' रखा

Nijanand App

था। ब्रज की लीला करने के पश्चात जब योगमाया के रास में गये तो अक्षर की मांग करने पर लीला को अखण्ड कर स्वयं परमधाम वापस गये। मात्र वे तन जो अखण्ड तत्व के थे, जिसका नाम श्री कृष्ण तत्व है, उन तनों को अखण्ड कर दिया न कि स्वयं वहाँ बैठे हैं।

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपणने अविनास।

नाम तत्व कहयूं श्रीकृष्ण जी, जे रमे अखण्ड लीला रास।।

किरंतन ६४/७

श्री महामति जी कहते हैं– हे वैष्णवों! अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने इस ब्रह्माण्ड के मोह तत्व से अलग की हमें अखण्ड निधि दी है, जिसका नाम श्रीकृष्ण तत्व है और जहां आज भी श्री कृष्ण रास लीला कर रहे हैं

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।

ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन।।

प्रकास हिंदुस्तानी बेहदवाणी चौ० १२३

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दर साथ जी! इस तरह से अक्षर ब्रह्म की मांगनी करने पर ब्रज और रास दोनों लीला सबलिक में मैंने अखण्ड कर दी, जहां बाल स्वरूप श्री कृष्ण बाल मुकुन्द जी के रूप में ब्रज की लीला में और किशोर स्वरूप वाले बांके बिहारी श्री कृष्ण के रूप में हैं। जिन तनों में बैठकर मैंने लीला की थी, उन तनों को वहां की लीला के साथ अखण्ड करके मैं अपनी आत्माओं को लेकर परमधाम चला गया। यह तीसरा ब्रह्माण्ड आत्माओं की इच्छा से बनाया है, जिसमें मैं पूर्ण ब्रह्म के रूप में आया हूं।

धामधनी ने इस ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से उजाला कर सब अन्धकार को मिटा दिया है, इसलिए इस ब्रह्माण्ड को जागनी का ब्रह्माण्ड कहते हैं। तो सुन्दर साथ जी! जागो और जगाओ!

यह तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

सोलहवीं तरंग

तारतम परिचय

प्राणाधार सुन्दर साथ जी! एवं साथियों! इस मिथ्या जगत में मनुष्य तन धारण करने के पश्चात् यह पता चला कि यह सारा पाताल से बैकुण्ठ आदि नारायण तक स्वप्न का ब्रह्माण्ड है, जो पांच तत्व तीन गुणों से बना है। महाप्रलय में पांच तत्व, तीन गुण सम्पूर्ण प्राणी मात्र, देवी–देवता एवं आदि नारायण तक लय हो जाते हैं, क्योंकि स्वप्न एक भ्रमित अवस्था का नाम है। इसलिये स्वप्न के अन्दर सब संशय से ही भरा ज्ञान होता है और सारा झूठा संसार ही सत्य नजर आता है। इसलिए इस दुनिया के सभी ग्रन्थ वेद, पुराण, शास्त्र, बाईबिल सभी निराकार तक का ही वर्णन करते हैं। इसकी उत्पत्ति मोह तत्व से होने के कारण हर देवी देव और प्राणी मात्र के अन्दर अहंकार भरा होता है, इसलिए सब झूठ को ही अपनी बुद्धि के ज्ञान से सत्य मानकर परमात्मा को कण–कण में मान बैठे हैं। पातञ्जल मत और वेदान्त शास्त्र ने तो परमात्मा को कण–कण में और हर प्राणी मात्र में कहा है, किन्तु वेदों का सार यही है कि ब्रह्म सत्य और जगत् मिथ्या है। अर्थात् यदि पारब्रह्म सत्य है तो जगत असत्य है, वह चेतन है तो यह जड़ है। वह आनन्दमय है तो यह सर्वत्र दुःखमयी है। फिर, सोचना यह है कि ऐसी किस चीज की कमी है, जिसके बिना कोई भी देवी देवता या प्राणी करोड़ों बार दुनिया के बनने मिटने पर भी भवसागर से पार नही उतर सका।

ग्रन्थों की खोज करने पर यह पता चला कि संसार के हर धर्म के अन्दर भविष्य का ज्ञान देने वाले ग्रन्थों में २८ वें कलियुग की बड़ी भारी महिमा कही गयी है कि इस २८ वें कलियुग में पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी अपनी आत्माओं के साथ आयेंगे और अपने साथ जागृत बुद्धि का वह तारतम ज्ञान लायेंगे, जिससे कुल ग्रन्थों का भ्रम मिट जायेगा कि पारब्रह्म इस ब्रह्माण्ड के कण–कण में है। श्री प्राणनाथ जी सब ग्रन्थों के छिपे हुये भेदों को तारतम ज्ञान से खोलकर एक पारब्रह्म की पहचान कराकर सबको योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। सतयुग में नृसिंह तथा पृथु आदि विष्णु के अवतार हुए। त्रेता में बारह कला संपूर्ण भगवान राम आये, जिनको तुलसीदास जी ने पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द

Nijanand App

ही कह दिया। इसी प्रकार द्वापर में श्री कृष्ण आये। द्वापर में विष्णु के १६ कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण को पूर्णब्रह्म कहने वाले बुद्धि के दुश्मन ही हो सकते हैं या वे लोग पूर्ण ब्रह्म कह सकते हैं जो मान मर्यादाओं में डूबकर गरीब जनता को लूटकर पैसा कमाना ही धर्म बना बैठे है। नित्य वृन्दावन की भी पहचान जब शुकदेव परीक्षित को नहीं करा सके तो ऐसे स्वप्न की बुद्धि वाले ग्रन्थ का सहारा लेना कोरी झूठ की पूजा है।

अब यदि पुराण संहिता को देखा जाय तो इस कलियुग में परमधाम से दो महान आत्माओं सुन्दरी और इन्दिरा का आना लिखा है। इन दोनों तनों में पारब्रह्म का प्रगट होकर, इन दोनों के तन से तारतम–ज्ञान, (जागृत–बुद्धि के ज्ञान) से सब अन्धकार को मिटाकर एक सत्, चित्त, आनन्द पारब्रह्म की पहचान कराना लिखा है। वही बात कुरान में भी स्पष्ट रूप से लिखी है कि ईसा रूह अल्ला दुनिया में आकर दो तनों में लीला करेंगे और अपने इल्मे–लदुन्नी से इंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान के सभी भेद तथा कुरान के तीस हजार हरफ जो कुरान में चढ़े नहीं और हरूफे–मुक्तेआत के भेद खोलेंगे। यह कार्य केवल खुद खुदा ही कर सकता है।

आइये, सुन्दरसाथ जी! अब सबसे पहले उस समय का मिलान करें जो कुरान और भविष्योत्तर पुराण में लिखा है कि ईसा रूह अल्ला दसवी सदी में तथा इमाम मेहंदी ११ वीं सदी में जाहिर होंगे (सम्वत १६३८ मे), जिसका विस्तार पिछली छठवीं तरंग में कर चुके हैं।

अब आइये, उस तारतम ज्ञान जागृत बुद्धि पराशक्ति को समझें कि जिसके बिना आज तक सकल जगत के सभी ग्रन्थ अधूरे थे। उनकी सबसे बड़ी कमी इस बात की रही कि सबने अक्षर और अक्षरातीत को अविनाशी करके लिख तो दिया, परन्तु उनके धाम, स्वरूप और लीला का वर्णन करने में असमर्थ रहे और यही कहते रहे कि तारतम के द्वारा ही पारब्रह्म की पहचान होती है।

कार्य कारण (स्वकृत विकृत) योनियों में, जड़चेतन नाना रूप प्राणियों में अर्थात जिस प्रकार एक ही अग्नि लकड़ी के आधार भेद से अनेक रूप में कहीं उत्तम तो कहीं अधम तो कहीं विचित्र रूप में दिखाई देती है उसी प्रकार स्व–निर्मित अनेक आकारों में अन्तर्यामी रूप से हे परमात्मा! तुम्हीं भास रहे हो, परन्तु इस तत्व को तारतम मंत्र से जाना जा सकता है। मिथ्या भूत नश्वर इन

Nijanand App

नाना रूपों के सिमट जाने पर भी (अवितथ) अविनाशी एकरस रहने वाले आपके धाम को कोई निर्मल बुद्धि वाले ही जानते हैं और स्तुति कर प्राप्त होते हैं।

भागवत १०: ८७ : १६

कुरान में भी कहा गया है– कि इमाम मेहंदी के रूप में खुद खुदा इलमे–लदुन्नी लेकर आयेंगे।

आपकी ज़बान में किस कदर लकनत और लड़खड़ाहट होगी। आपका इल्म इल्मे लदुन्नी होगा। तरजमा इबन माजा शरीफ कामल पृ० ५२८

आइये सुन्दर साथ जी! पिछली तरंग में कहे अनुसार श्री देवचन्द्र जी जो बागे वस्त्र, मोर मुकुट और मुरली ले गये थे, उनकी बड़ी निष्ठा से सेवा की। वे स्वयं भोग लगाते और अपने को राधिका मानकर बांके बिहारी की चितवनि करते थे, जिसके फलस्वरूप उन्हें बांके बिहारी का अनुभव भी हुआ। एक बार ब्रज में जमुना तट पर घुघंनी का प्रसाद लेने का अनुभव किया। उस दिन के पश्चात उन्हें यह दृढ़ निश्चय हो गया कि मैं राधिका रानी हूं और बांके बिहारी मेरे स्वामी हैं।

तब हरिदास जी से विचार विमर्श के पश्चात वे नवा नगर.नवतनपुरी पहुंच गये। क्योंकि नित्य वृन्दावन की चर्चा दसवें स्कन्ध में ही होती है। उस समय नवतनपुरी में राधा वल्लभ मत के सबसे बड़े विद्वान कान्ह जी भट्ट की चर्चा होती थी। वे अपने माता पिता के साथ नवतनपुरी चले आये, जहाँ उनके और भी कुटुम्ब कबीले रहा करते थे।

अब वहां से श्री देवचन्द्र जी नवतन पुरी में कान्ह जी भट्ट के पास निष्ठा बद्ध होकर भागवत की चर्चा सुनते, फिर घर आकर स्वच्छता से भोग लगाकर बांके बिहारी की चितवनि करते। यह उनके जीवन का नित्य क्रम ही था। यदि कभी श्री देवचन्द्र जी ५–१० मिनट लेट हो जाते और कान्ह जी भट्ट कथा शुरू कर देते, तो वे उनके घर जाकर दुबारा भागवत पधरवाकर चर्चा सुनते। जिससे

तारतम्येन जानाति सच्चिदानंद लक्षणं।

स्वकृतविचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया तरतमतश्चकास्यनलवत् स्वकृतानुकृतिः।

अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम समं विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव

एकरसम भा० १०/८७/१६

Nijanand App

कान्हजी भट्ट ने भी नियम बना लिया था कि श्री देवचन्द्र जी के आने पर ही वे चर्चा शुरू करते थे। ऐसा देखकर उस मन्दिर के प्रबन्धक तथा ट्रस्टीगणों को जलन होने लगी, क्योंकि उनका काम ही यही होता है। वे सोचने लगे कि हम ही मन्दिर के सब कुछ हैं, किन्तु हमारा कोई भी ध्यान नहीं रखता। देवचन्द्र जी के कारण ही हमारी प्रतिष्ठा में कमी आयी है। अतः उन्हें मन्दिर से निकलवा देना चाहिए। यह सोचकर उनके छिद्र ढूंढने लगे।

उधर श्री देवचन्द्र जी की प्रतिज्ञा थी कि जो कुछ भी भागवत में सुनना, वह रहनी में लाना। उन्होंने भागवत के तीसरे स्कन्ध में सुन रखा था कि दो ही वस्तुएं है–एक शरीर जो झूठ है तथा दूसरी आत्मा, जो सत्य है। हर मनुष्य को पहले सत्य आत्मा को खुराक देना चाहिए। इस सिद्धान्त के अनुसार आचरण करना उनका प्रण था। जब तक वे भागवत का श्रवण नहीं करते थे, तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करते थे।

एक साधारण मनुष्य को इतना ऊँचा ज्ञान देने वाली भागवत की कथा के साथ–साथ मनगढन्त बनाये हुए नियम भी चल रहे थे। एकादशी के दिन राधा वल्लभी मार्ग वाले सभी उपवास करते थे। उस समय २–३ घन्टे तक की भागवत की चर्चा सभी मन्दिरों में होती थी। परन्तु राधा वल्लभी उस दिन उपवास रखते थे, क्योंकि करोड़ एकादशी का उपवास रखने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। उधर श्री देवचन्द्र जी को उस दिन अन्य दिनों की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा आत्मा की खुराक मिलती थी। अतः वे उस दिन शरीर को बहुत अच्छा भोजन खिलाते थे। द्वादश वाले दिन व्यास जी ने शरीर छोड़ा था। अतः उस दिन भागवत की चर्चा नहीं होती थी और वे उस दिन व्यास जी का भण्डारा करते थे। चर्चा न मिलने के कारण श्री देवचन्द्र जी उस दिन भण्डारे का प्रसाद नहीं लेते थे। उनकी यह कमी (छिद्र) लेकर वल्लभाचार्य मत के वे ट्रस्टीगण कान्हजी से लड़ने लगे कि एक ही धर्म के अन्दर दो रास्ते कैसे चल रहे हैं? आप तो हमसे कहते हैं कि एकादशी का व्रत रखो और द्वादशी को भण्डारा करो, किन्तु देवचन्द्र जी से कहते हो कि एकादशी को खूब खाओ और द्वादशी के दिन प्रसाद भी मत लो। इस प्रकार की बातें भागवत में कहां लिखी हैं? कान्ह जी भट्ट ने कहा कि श्री देवचन्द्र जी भागवत के विरूद्ध कभी भी चल नहीं सकते। इतने में श्री देवचन्द्र जी मन्दिर में पधारे और पूछने पर स्वीकार किये कि मैं ऐसा ही करता हूं। तब वल्लभाचार्य मत के अग्रगण्यों ने व्यंग्य करते हुए कहा कि हां भाई देवचन्द्र! तुम्हारे

Nijanand App

जैसा श्रोता तो आज तक हुआ ही नहीं है। एक तुम्हीं भागवत के सुनने वाले हो, किन्तु भागवत एक ऐसा वृक्ष है, जिसकी टहनी के एक पत्ते को समझना कठिन है। परन्तु तुम तो भागवत की टहनी–टहनी और पत्ते–पत्ते की लीक को जानते हो।

श्री देवचन्द्र जी चुपचाप व्यंग्य के सब वचनों को सुनते रहे और सुनकर बोले कि यह तो आपकी महानता है। आप ही बताइये कि यह भागवत ग्रन्थ सच्चा है या दन्त कथा है। यदि यह सच्चा है तो इसके तीसरे स्कन्ध के अनुसार आत्मा सत्य है और शरीर झूठा है। आत्मा को सत्य मानकर उसे पहले खुराक देने तथा शरीर को झूठा मानकर उसे बाद में खुराक देने का मैंने नियम बनाया है। अतः एकादशी के दिन जब आत्मा को ३ गुनी अधिक चर्चा रूपी खुराक मिलती है तो झूठे देह को भूखों रखना स्वर्ग की प्राप्ति के लिये बेकार है। द्वादशी वाले दिन व्यास जी का भण्डारा तो होता है किन्तु मेरी आत्मा को भागवत की चर्चा नहीं मिलती है, इसलिए मैं उस दिन उपवास रखता हूं। श्री देवचन्द्र जी की ऐसी सच्ची आत्मा की खोज देखकर सभी ट्रस्टीगण शर्मिन्दे हुए और उन्होंने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी।

इस प्रकार चौदह वर्ष तक निष्ठाबन्ध भागवत सुनते रहे और अपने को राधिका मानकर नित्य गोलोक की चितवनि करते रहे। कई बार उन्हें चितवनि में बांके बिहारी के किशोर स्वरूप का अनुभव भी होता था, परन्तु साक्षात् दर्शन कभी भी १४ वर्षों में नहीं हुआ।

अब आखिर में अक्षरातीत पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी ने देखा कि मेरी आतम दुल्हिन श्यामा महारानी अब गोलोक से आगे का ज्ञान कहीं से भी प्राप्त नहीं कर सकतीं, क्योंकि श्रीमद्भागवत ही ऐसा ग्रन्थ है, जो निराकार से आगे नित्य गोलोक की अखंड रास का पंच अध्यायी में वर्णित ज्ञान देता है। इसलिये ग्रन्थों में लिखवाये अनुसार जब श्री देवचन्द्र जी के तन की उम्र ४० वर्ष की हो गयी तो संवत् १६७८ में आसो सुदी एकादशी के दिन सोमवार को प्रातः ८१/२ बजे श्याम जी के मन्दिर में इस नश्वर जगत में वह पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द अपने किशोर स्वरूप के आवेश स्वरूप में आकर साक्षात् दर्शन दिये।

यह वही स्वरूप है, जिस स्वरूप ने वृन्दावन में आकर बांके बिहारी का तन धारण किया था। उस तन से रास की लीला अक्षर ब्रह्म को दिखायी। रास

Nijanand App

खेलने के बाद वे अपनी आत्माओं के साथ परमधाम गये। स्वरूप वह है, जो अन्दर लीला करता है, जो रूप होता है वह बाहरी शरीर होता है।

तो सुन्दर साथ जी! रूप तो आज भी वृन्दावन में खेल रहा है, किन्तु बीतक साहब में आया है कि– **सरूप खेला जो वृन्दावन।** इसका अर्थ यह है कि अपनी लीला करके वह परमधाम चले गये और अक्षर ब्रह्म के कहने पर वह लीला अखण्ड कर दी।

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।

ए ब्रह्माण्ड जो तीसरा, ले आए आपन।।

प्र० हि० बेहद वाणी चौ० १२३

मूल बीतक साहब के अलावा अन्य बीतकों का उदाहरण देकर जो लोग यह कहते हैं कि श्री देवचन्द्र जी को वृन्दावन बिहारी ने दर्शन दिया तो प्रश्न यह है कि क्या वृन्दावन बिहारी (बांके बिहारी) को परमधाम में होने वाले इश्क रब्द का पता था? गोलोकी श्रीकृष्ण तो अनादि हो ही नहीं सकते, क्योंकि श्री राज जी ने नया वृन्दावन बनाया था, तथा बांके बिहारी का भी नया तन धारण किया था। श्री राज जी ने परम धाम के ही श्रृंगार में दर्शन दिया था, बांके बिहारी के गोलोक वाले श्रृंगार में नहीं।

तारतम लेकर जिसने श्री देवचन्द्र जी को दर्शन दिया। वह परमधाम के श्रीराज जी थे न कि वृन्दावन बिहारी, जिसका स्पष्ट प्रमाण यह है–

तारतम लई श्रीराज पधारया, थयूं ते सर्व ने जांण।

सखियो कहें अमे आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधांण।।

किरंतन १२४/५

श्री इन्द्रावती जी स्पष्ट कहती हैं कि हे सुंन्दरसाथ जी! तारतम ज्ञान लेकर अक्षरातीत अपने आवेश स्वरूप से श्याम जी के मन्दिर में पधारे। जिसका पता सबको लग गया है कि तारतम जो जागृत बुद्धि का ज्ञान है, उसे लेकर आये हैं। अब ज्ञान हो गया है कि परमधाम से हमारी आत्मा के मूल सम्बन्धी श्री राज जी महाराज हमें जगाने के लिये आ गये हैं। जिस तारतम के ज्ञान से हम सब सखियां श्री राज जी के चरणों में आकर के मिलेंगी।

जिन्होंने आज कल केवल संस्कृत के शास्त्री बन कर, उस पारब्रह्म के

Nijanand App

ज्ञान के ठेकेदार बनकर, अपनी मान प्रतिष्ठा और पैसे के लोभ में आकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय जो पूर्ण ब्रह्म ने स्वंय आकर माहेश्वर तन्त्र इत्यादि ग्रन्थों के अनुसार अपने सम्प्रदाय का नाम निजानन्द सम्प्रदाय बताया, उस सत्य को ढांप कर नया मनगढ़न्त नाम 'श्री कृष्ण प्रणामी धर्म' रख दिया। जबकि इस श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म की कोई पद्धति ही नहीं है, न इसको कोई चलाने वाला है। ये अपने इष्ट को पूर्ण ब्रह्म कहते हैं, जबकि कृष्ण पूर्ण ब्रह्म हैं ही नहीं।

अब सुन्दर साथ जी! उस तारतम ज्ञान तथा उसको लाने वाले की हकीकत समझें।

श्याम जी के मन्दिर में संवत् १६७८ में आसो सुदी एकादशी के दिन प्रातः ८१/२ बजे साक्षात् अक्षरातीत अपने आवेश स्वरूप से खड़े हो गये और कहा–

चौदह बरस लों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सब सार।

चालीस बरस की उमर में, हकें दिया दीदार।।

बी० सा० ७/७

अब तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हक का अर्थ पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री राजजी ही होता है। साक्षात् दर्शन देकर उन्होंने जो बातें कहीं, उन्हीं को तारतम कहते हैं जो मूल बीतक साहब के अनुसार निम्नलिखित है

दिन दस पन्द्रह हुए, कथा सुनत हैं कान।

तहां आय दीदार दिया, तुमको मेरी पहिचान।।

बी० सा० ६/२६

१०–१५ दिन तक कथा सुनते हुए जब बीत गये तो श्याम जी के मन्दिर में साक्षात् आवेश स्वरूप से दर्शन दिये और श्री देवचन्द्र जी से पूछे कि क्या तुम मुझको पहचानते हो?

वय किसोर अति सुन्दर, सरूप खेला जो वृन्दावन।

देख श्री देवचन्द्र जी ने कहया, जैसी गवाही दई मन।।

बी० सा० ६/२७

परम धाम के जिस स्वरूप ने वृन्दावन में रास खेला था, वह अपनी किशोर अवस्था के अति सुन्दर रूप में सामने प्रगट हुआ, जिन्हें देखकर श्री देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मेरा मन ऐसी गवाही दे रहा है कि

Nijanand App

तुम हमारे खावन्द, एता जानत हैं हम।

आप को पहिचानत हो, कौन कहां से आये तुम।।

बी० सा० ६/२८

मैं केवल इतना ही जानता हूं कि आप ही मेरे खावन्द हैं। तब श्री राज जी ने पूछा कि क्या तुम खुद को पहचानते हो कि तुम कौन हो और कहाँ से आये हो?

इतना हम जानत हैं, जो धनी हमारे तुम।

कहया तुम एता ही जानत, अब बतावें हम।।,

बी० सा० ६/२६

श्री देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मैं इतना ही जानता हूं कि आप हमारे धनी हैं। तब श्री राज जी ने कहा कि जब तुम इतना ही जानते हो, तो अब मैं सारी हकीकत बताता हूं।

नाम तुम्हारा बाई सुन्दर, खेले तुम ब्रज रास में।

मनोरथ पूरे ना भये, ए तीसरा हुआ तिनसे।।

बी० सा० ६/३०

तुम्हारी आत्मा का नाम सुन्दरबाई है। तुम हमारे साथ ब्रज और रास में खेले थे। लेकिन तुम्हारी इच्छा पूरी न होने के कारण यह तीसरा ब्रह्माण्ड बनाना पड़ा।

अब सब साथ बुलाय के, आओ अपने धाम।

धनी वे साथ कहां हैं, कहया मैं भेजों तमाम।।

बी० सा० ६/३१

अब तुम अपने सभी सुन्दरसाथ को जागृत कर अपने मूल परमधाम में वापस आओ। श्री देवचन्द्र जी ने पूछा कि हे धनी! वे सब साथ कहां है? श्री राज जी ने उत्तर दिया कि मैं उन सबको जहां जहां जिस जिस तन में भी है, वहां से निकालकर तुम्हारे पास भेजूंगा।

ए भागवत कागद तुम्हारा, सो तुम्हें खुले कलाम।

और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम।।

बी० सा० ६/३२

Nijanand App

यह भागवत ग्रन्थ तुम्हारे लिये है। इसके सभी भेद केवल तुम्हीं खोलोगे।

इस दुनिया की सारी जीव सृष्टि मिलकर भी इसके भेदों को नहीं खोल सकती है

अब तुम्हें पूछना होय, सो पूछ लेओ तुम।

फेर के ऐसी तरह से, द्रष्ट न आवें हम।

बी० सा० ६/३३

अब तुम्हें जो कुछ भी पूछना हो, वह पूछ लो। फिर दुबारा इन भौतिक आंखों से कभी भी मेरा दर्शन नहीं हो सकेगा।

तब पूछा श्री देवचन्द्र जी ने, धनी कहां जाओगे तुम।

तुम्हारे अन्दर आकार में, आय के बैठे हम।।

बी० सा० ६/३४

तब श्री देवचन्द्र जी ने पूछा कि हे धनी! अब आप कहां जायेंगे? श्री राज जी ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे तन में आकर विराजमान होऊंगा।

तब मोको कहा पूछना, ए कहे तारतम बीच वचन।

फेर के अदृष्ट भए, प्रफुल्लित हुआ मन।।

बी० सा० ६/३५

श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि जब आप मेरे अन्दर आकर विराजमान हो जायेंगे, तो मुझे अब पूछने की क्या जरूरत है?

ये बातें ही तारतम के मूल बीज हैं। फिर अदृश्य होकर धनी उनके अन्दर विराजमान हो गये, जिससे उनका मन बहुत आनन्दित हो गया।

इसके अतिरिक्त कलश हिन्दुस्तानी प्रकरण एक व दो में से ८८ चौपाइयां ऐसी हैं, जो श्रीराज जी और श्यामा जी की बातचीत से सम्बंधित है। यह बातें बाद में श्री इन्द्रावती जी के तन से अवतरित हुईं। उनमें कुछ इस प्रकार हैं–

मासूकें मोहे मिल के, करी सो दिल दे गुझ।

कहे तूं दे पड़ उत्तर जो मैं पूछत हों तुझ।।

तूं कौन आई अत क्योंकर, कहाँ है तेरा वतन।

नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।

Nijanand App

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार।।

क० हि० १/५, ६, ७

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे मैं देखिया, जिनों नीको कर खोजेल।।
सास्त्र साधु जो सखियां, मैं देखी सबों की मत।
पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित।।
छोटे बड़े जिन खोजिया, न फाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।।
झूठा ए छल कठन, कहूं न किसी की गम।
कहाँ वतन कहाँ खसम, कौन जिमी कौन हम।।
मैं देख्या दिल विचार के, चित सों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोइ जगाए।।
मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।
तिन सारों ने यों कहया, जो किनहूं ना देख्या दृष्ट।।

कलश हिन्दुस्तानी २/२, ३, ४, ५, ७, ६

ऊपर दी गयी श्री मुखवाणी क० हि० की कुछ चौपाइयों तथा मूल बीतक साहब की १० चौपाइयों से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री राज जी महाराज और श्यामा महारानी के बीच काफी देर तक क्षर–अक्षरातीत, परमधाम के इश्क रब्द, ब्रज–रास से परमधाम जाने तथा पुनः इस जागनी के ब्रह्माण्ड में आने के विषयों पर वार्ता हुई। इसका सार ही तारतम है। इसको लाने वाले और कहने वाले साक्षात् पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत श्रीराज जी हैं, जिनका स्वरूप किशोर अति सुन्दर है। जो आकर तारतम का ज्ञान दिये और श्री देवचन्द्र जी के अन्दर साक्षात् विराजमान हो गये।

अब विचार कीजिए कि क्या यह कोई मन्त्र है? मन्त्र तो कोई गुरू देता है, जिसके द्वारा जिस इष्ट के नाम का मन्त्र होता है, उसमें उसको प्राप्त करने की विधि होती है। मन्त्र तो उन भगवानों का होता है, जो अपने भक्त से दूर

Nijanand App

बैकुण्ठ में रहते हैं और उनके भक्त मृत्युलोक में रहते हैं। परन्तु यह तारतम ज्ञान तो उस पूर्ण ब्रह्म का मिलन है, जो कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा होते ही नहीं।

तो यह पढ़ कर यदि आप कहें कि श्री देवचन्द्र जी को ४० वर्ष तक कसनी क्यों करनी पड़ी? तो इसका समाधान यह है कि वह कसौटी उनके लिये नहीं थी, बल्कि हम सुन्दर साथ को रास्ता दिखाने के लिये थी कि मूर्ति पूजा करने, सन्यासी बनने, ऋद्धि–सिद्धि करने, मस्जिदों में ऊजू करने तथा नमाज पढ़ने और भागवत को सुनने से कदापि पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती।

कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैंयन।।

प्र० हि० प्रगटवाणी चौ० ७०

यदि भागवत को सुनने से ही श्री देवचन्द्र जी को पारब्रह्म के दर्शन हो गये, तो कान्ह जी भट्ट को क्यों नहीं हुए? वे तो श्री देवचन्द्र जी को कथा सुनाते थे। इस भागवत को लिखने वाले व्यास जी को दर्शन क्यों नहीं हुए? व्यास जी तो नित्य वृन्दावन का भी स्पष्ट वर्णन नहीं लिख सके। श्री राजजी से मिलन के बाद जब जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान आ गया तो श्री मेहराज ठाकुर ने कान्ह जी भट्ट से केवल यही प्रश्न किया था कि महाप्रलय के पश्चात् पारब्रह्म कहां रहते हैं? तो वे इसका उतर नहीं दे सके। इस प्रकार यह कहना कि भागवत सुनने से परमधाम मिलता है, कोरी मूर्खता नहीं तो और क्या है?

ये जो ऊपर दी गयी चौपाईयों की वार्ता जो श्री राज जी और श्यामा जी के बीच श्याम जी के मन्दिर में हुई, इन्हें श्री राज जी ने श्री देवचन्द्र जी के अन्दर बैठ कर अपने आवेश से कहलवाया। अतः यह दुनिया के जीवों के लिये मन्त्र ही है, क्योंकि जीव का पूर्ण ब्रह्म से कोई अखंड सम्बन्ध नहीं है। उनके वे प्रभू हैं।

इसलिये ये प्रभू को पाने के लिये तारतम से ही भजन करके पार होते है। ईश्वरी सृष्टि के लिये यह पूर्ण ज्ञान है, जो अक्षरब्रह्म भी नहीं जानते थे। ब्रह्म सृष्टि जो इस ज्ञान के बिना अपने धनी की पहचान नहीं कर पा रही थी, उनके लिए अपने धनी का मिलन है।

ब्रह्म सृष्टि को सुख घर का, ईश्वरी को देनी सुध।
मुक्त करना ब्रह्माण्ड को, धनी जी ल्याए हैं जाग्रत बुध।।

Nijanand App

आओ सुन्दर साथ जी! वह तारतम जो श्री राजजी के आवेश से उनके तन से प्रगट हुआ, वह ६ चौपाइयां क्या हैं? और उनका अर्थ क्या है? उस पर विचार करें।

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत।

सो तो अब जाहेर भये, सब विध वतन सहीत।। १

जब श्री राज जी महाराज ने आकर साक्षात् दीदार दिया, श्याम जी के मन्दिर में, तो श्री देवचन्द्र जी ने यही समझा कि ये नित्य वृन्दावन के बांके बिहारी, ही हैं परन्तु इनके और उनके श्रृंगार में बहुत अन्तर था, फिर भी यही समझ बैठे कि यह वही मेरे खावंद हैं, तो श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं बांके बिहारी नहीं हूं। तू चौदह वर्ष तक भागवत् सुनने के पश्चात इतना भी नहीं पहचान पायी कि

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहाँ है तेरा वतन।

नार तू कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।

अपने मूलघर का और अपनी आत्मा के मूल स्वरूप की चर्चा का विषय तो भागवत में कहीं सुना ही नहीं। इसलिए स्पष्ट कहा कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। दो प्रश्नों में से एक का भी उत्तर श्री देवचन्द्र जी नहीं दे सके। श्री राजजी ने कहा कि **अब बतावें हम।**

निज नाम श्रीकृष्ण, जो पहली बार ब्रज में आने से मेरे तन का रखा गया, वह श्री कृष्ण है। हकीकत में मैं अनादि अक्षरातीत हूं जो नाम, तत्व, गुण और षट प्रमाण से परे है। तो श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि उस अक्षरातीत का स्वरूप और धाम कहां है? यह तो मैनें भागवत में कहीं सुना ही नहीं है। सो तो अब जाहेर भए। अक्षर से भी परे मैं अक्षरातीत हूं जो अपनी आत्माओं के लिये जाहिर हुआ हूं। पांच हजार वर्षों से दुनिया मेरे श्रीकृष्ण नाम को भूलवश अक्षरातीत मान बैठी थी। मेरे स्वरूप और धाम को कोई भी नहीं जानता था। तब श्री देवचन्द्र जी बोले कि फिर आपको परमधाम की आत्मायें और सब दुनियां वाले कैसे पहचानेंगे? तो श्री राजजी ने कहा कि 'सब विध वतन सहीत' मैं अपने वतन से जागृत बुद्धि का ज्ञान और लीला तथा सब सुख लेकर आया हूं जिससे मेरी आत्मायें धाम धनी के रूप में और सारी दुनिया पारब्रह्म के रूप में पहचान कर लेंगी।

Nijanand App

श्री श्यामा जी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार।

विनती एक जो वल्लभा, मों अंगना की अविधार।। २

अब श्री राज जी ने कहा कि तुम न तो राधिका रानी हो और न श्री देवचन्द्र जी ही हो। यह तो मात्र इस दुनिया का खेल देखने के लिये ब्रज में राधिका नाम का तन दिया गया था और अब श्री देवचन्द्र जी का तन मिला है। हकीकत में तुम परमधाम की श्यामा महारानी सुन्दरबाई हो। मैं तुम्हारा अखण्ड धनी हूं। और सदा ही तुम्हें अखण्ड सुख देने वाला हूं। तब श्री देवचन्द्र जी ने सोचा कि इस तरह से साक्षात् दर्शन देकर बांके बिहारी ने कभी भी संशय नहीं मिटाये। जिनको मैं चौदह वर्षों से बुलाता रहा, लेकिन वे नहीं आये। जब ये बिना बुलाये ही आये हैं तो निश्चय ही ये मेरे पति है। फिर भी मैं निश्चय तो कर लूं। यह सोचकर बोले कि हे मेरे प्राणनाथ! यदि आप मेरे धनी हैं तो आप मेरी विनती स्वीकार कीजिए कि मुझे अविधार कर गले से लगा लीजिए, चरणों से लिपटा लीजिए। यह कह कर चरणों में गिर पड़े। ततखिन श्री राज जी महाराज ने अपने दोनों हाथों को आर्शीवाद के रूप में ऊपर उठा कर जागृत बुद्धि को प्रगट कर उनके हृदय में प्रवेश करा दिया। आज तक दुनिया में जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं था। भागवत, उपनिषद, पुराण संहिता आदि सभी ग्रन्थ स्वप्न की बुद्धि के ही ग्रन्थ हैं।

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।

सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।

परिकरमा २/११

ततखिन पराशक्ति जागृत बुद्धि ने जैसे ही उनके तन में प्रवेश किया तो उनके हृदय के पट खुल गये और आतम निर्मल होकर निराकार से परे योगमाया, अखण्ड वृन्दावन, अक्षर तथा अक्षरातीत के धाम को देखने लगी। तो श्री देवचन्द्र जी बोले कि ओहो! मेरे धनी!

बानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।

निराकार के पार थे, तिन पार के भी पार।। ३

आपकी ये वाणी (जागृत बुद्धि की बातें) और ये सब सुख हकीकत में संसार से परे की बात है। तब श्री राज जी महाराज बोले कि मेरा तुम्हारा मूल

Nijanand App

सम्बन्ध और परमधाम की बातें निराकार के ब्रह्माण्ड से परे योगमाया के ब्रह्माण्ड, उससे परे अक्षरधाम तथा उसके भी परे रंगमहल परमधाम के निसबत की बातें हैं, जहां सदा ही अखण्ड आनन्द की लीला होती रहती है। तब श्री देवचन्द्र जी के रोम रोम में उस अखण्ड आनन्द और सुख की चाहना जागृत हो उठी।

अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार।

ए सत बानी मथ के, लेऊं जो इनको सार।। ४

वे सोचने लगे कि मैं संसार के मिथ्या भागवत आदि ग्रन्थों को पढ़कर क्या करूंगी, जिससे मेरे मूल सम्बन्ध और निजघर की पहचान नहीं हो सकी। अब मैं परमधाम की एक एक बातों का विचार करूंगी और इस सत वाणी (श्री राज जी से हुई बातों को) मथ कर इनका सार लूंगी।

इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।

ए सुख देऊं ब्रह्म सृष्ट को, तो मैं अंगना नार।। ५

इसके मंथन से जो सार निकलेगा उसमें ही निजघर के सुख मिलेंगे। इसलिये मैनें निश्चय के साथ यह निर्णय कर लिया है कि मैं हमेशा इस परमधाम वाली वाणी का ही मंथन करूंगी। (यद्यपि उस समय श्री कुलजम स्वरूप की वाणी अवतरित नहीं हुई थी, किन्तु जो उन दोनों में वार्ता हुई, उसे ही यहां वाणी कहा गया है) श्री देवचन्द्र जी कहते हैं कि हे धनी! अब तो उसी परमधाम में ले चलिये, तब श्री राज जी बोले कि–

हम आए हैं इतने काम, ब्रह्म सृष्ट लेने घर धाम।

प्र० हि० प्रगटवाणी चौ० ८३

तुम्हारे साथ १२००० ब्रह्म सृष्टियां भी आयी हुई हैं। जब तक तारतम ज्ञान से उन्हें मेरी और निजघर की पहचान नहीं करा दी जाती, तब तक कोई भी परमधाम नहीं जा सकती।

आज ये सुख और ज्ञान जो आपने मुझे दिया है, इससे सब आत्मायें मिथ्या माया को छोड़ेंगी। जब मैं ये सुख सभी ब्रह्मात्माओं को दूंगी, तभी मैं आपकी अंगना कहलाने के योग्य हूं।

जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाए विकार।

आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अछरातीत भरतार।। ६

Nijanand App

श्री राज जी ने स्पष्ट कहा कि जब मेरे निजघर की और मेरी पहचान सबको मिल जायेगी, तो सभी आत्माओं के अन्दर से माया रूपी विकार निकल जायेगा और परमधाम के अखण्ड सुखों का यहीं अनुभव होगा, और मूल परआतम में जागृत हो जा[illegible] न तथा तुम्हारा धनी मैं तुम्हारे सम्मुख होऊंगा।

इस वार्ता के बाद श्रीराज जी महाराज ने उनके हृदय में प्रवेश किया। तारतम की ये छह चौपाईयां हैं जो मूल बीतक साहब की दस चौपाईयों तथा कलश हिन्दुस्तानी के प्रारम्भिक दो प्रकरणों की चौपाईयों का सार है।

केवल एक चौपाई का तारतम कहना उचित नहीं है, बल्कि छह चौपाईयों का तारतम ही पूर्ण तारतम है, जिससे ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि और जीव सृष्टि को अलग–अलग सुख मिलेगा।

बोहोत धन ल्याए धनी धाम थें, विध विध के प्रकार।

सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार।।

क० हि० २३/५४

श्री महामति जी कहते हैं कि धाम के धनी परमधाम से हमारे लिये अनेक प्रकार के धन (आत्मा को सुख देने वाले) लाये, जिनको मैंने तौला तो इन सबका सार तारतम ही निकला।

तारतम को बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप।

मूल सरूप के चित की बातें, तारतम में कई रूप।।

क० हि० २३/५५

एक मूल स्वरूप श्री राजजी के अलावा अन्य कोई भी तारतम के बल को नहीं जानता है। मूल स्वरूप के दिल की बातें ही तारतम के अन्दर अनेक रूपों में वर्णित है।

ए लीला जाने सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम।

ए दृष्ट पूरन तब खूले, जाए अव्वल आखिर इलम।।

सिनगार १/१५

परमधाम की लीला को यथार्थ में वे ब्रह्म सृष्टियां ही जानती हैं जिनके पास तारतम ज्ञान पहुंचा होता है। अव्वल का इलम अर्थात् जो श्री देवचन्द्र जी के तन से अवतरित तारतम का ज्ञान, जो परमधाम की पहचान कराता है तथा

Nijanand App

आखिर का इलम, जो श्री इन्द्रावती जी के तन से अवतरित हुआ, यानी परमधाम की वाहेदत, खिलवत, निसबत इत्यादि का इलम। जब यह दोनों प्रकार का इलम आत्मा को मिल जाता है, तभी आत्मिक नजर खुलती है।

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार।
अंतर कछुए ना रहया, वह पोहोंच्या नूर के पार।।

छो० क्या० १/८१

जिसको श्री राज जी के लाये हुए तारतम ज्ञान से धनी की पहचान हो जाती है उसके दिल में किसी भी तरह का संशय नहीं रहता है तथा उसकी आत्मिक दृष्टि अक्षर धाम से भी परे परमधाम में पहुंच जाती है और वहां के सभी पक्षों का उसे दीदार होने लगता है।

यह तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

सत्रहवीं तरंग

श्री पद्मावती पुरी (पन्ना) मन्दिर या मुक्तिधाम

सुन्दर साथ जी! एवं साथियो! आज भारतवर्ष में हजारों धर्म–पन्थ चल रहे हैं। हर एक धर्म का कोई न कोई केन्द्र स्थान या धाम होता है। उस केन्द्र या धाम से सम्बन्धित उसकी शाखायें जहाँ–जहाँ होती हैं उन शाखाओं को मन्दिर कहते हैं। जैसे– बदरीनाथ धाम में विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित है। वह धाम इसलिए कहलाता है, क्योंकि वहां पर नारायण ने तपस्या की। आज लक्ष्मी और विष्णु भगवान के हजारों मन्दिर हैं और भिन्न–२ स्थानों में हैं, लेकिन उनको मन्दिर ही कहा जाता है, धाम नहीं। केदारनाथ को धाम कहा जाता है, किन्तु महादेव के अन्य सभी स्थानों को मन्दिर कहा जाता है। सिक्खों का मूल स्थान दरबार साहिब कहलाता है और बाकी जहां–जहां पर वही ग्रन्थ साहब और झण्डा है, लेकिन उनको गुरूद्वारा ही कहा जाता है। उसी प्रकार मुसलमानों की मक्का को अल्लाह का घर (बैत अल्लाह) कहा जाता है। जहां मुसलमान इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं, उसे जामा मस्जिद कहते हैं और बाकी मुहल्ले–२ में मुसलमानों की इबादत (पूजा) के जो स्थान हैं उनको मस्जिद कहा जाता है। केवल एक श्री निजानन्द सम्प्रदाय का मूल स्थान पद्मावती पुरी (पन्ना) है, जिसका प्रमाण श्री प्राणनाथ जी के आने से पहले ही धर्मग्रन्थों में लिखा था। इस स्थान को श्री राज जी ने परम धाम से ही चुन लिया था।

चले अगरिए से, परने पहुंचे आय।

डेरा किया अमराई में, ठौर झण्डे की चित लाए।।

बीतक साहब ६०/११

आप स्वामी श्री प्राणनाथ जी जब अगरिए से पन्ना पहुंचे तो अमराई घाट में डेरा करते ही उनकी नजर सामने उस टेकरी पर पड़ी, जो उन्होंने परमधाम से निश्चित कर रखा था। उसे देखकर वे बोले, "यह वही हमारा स्थान है, जहां हमें झंडा लहराना है।"

Nijanand App

सुन्दर साथ जी! नवतन पुरी में भले ही श्री राजजी प्रगटे, तारतम उतरा, श्री जी हब्से में गये, इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी गये, किन्तु अपने हाथ से झंडा नहीं लहराया। जहां अपने हाथ से झंडा लहराया जाता है, वही उसका धाम होता है। जिस प्रकार देश का प्रधानमन्त्री भले ही सारे देश में घूमता है, किन्तु अपने हाथ से झंडा दिल्ली में ही लहराता है।

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस आए।
तिनमें सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।

इस चौपाई से यह स्पष्ट हो जाता है कि अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने जिसको अपना ठौर कह दिया तो क्या वह मन्दिर होगा या धाम होगा? जहां आज भी साक्षात् श्री प्राणनाथ जी विराजमान हैं, उसको श्री प्राणनाथ जी का मन्दिर कहना कोरी भूल है। वह तो साक्षात् श्री प्राणनाथ जी का धाम है। तभी तो मस्तान ने कहा था–

पन्ना तो परमधाम देख, करके प्रणाम देख।
आशिकों आराम देख, कहत है मस्तान।।
जासों लागी इश्क तान, रूह देखी है दीदार।
श्री प्राणनाथ जी साक्षात पन्ना में विराजे हैं।

और तभी तो श्री प्राणनाथ जी ने जब अपना धाम गुम्मट साहब बनवाया, तो ऊपर लिखवाया कि "दरगाहे मुकद्दस"।

पूर्ण ब्रह्म का वह दरबार, जो सबका है, जिसके एक तरफ, 'निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत' और दूसरी ओर 'ला इलाह इलल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह' लिखवाया, जो आज भी मौजूद है।

तब लिया हकें दिल में, ए जो चौदह तबक।
तिनमें जम्बू द्वीप में, भरत खण्ड बुजरक।।
तिनमें बिसेख देखके, ए जो खण्ड बुन्देल।
काएम सिफत तिनकी, जो तीसरा तकरार लैल।।
तामें सिरे सिरदार की, ए जो परना ठौर।
तिनमें सिफत छत्रसाल की, नहीं पटन्तर और।।

Nijanand App

मिलावा सैंयन का, तामें हुकम सिरदार।

हकी सूरत धनीय की, करे ब्रह्म सृष्ट सों प्यार।।

बी० सा० प्र० ६२/४, ५, ६, ७

सुन्दर साथ जी! अब इसके पश्चात् भी जिनके मन में पन्ना जी को धाम मानने में संशय हो तो यह आश्चर्य की बात है। ऊपर की चौपाईयों से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि परमधाम में ही श्रीराज जी ने जब तीसरे ब्रह्माण्ड को बनाने का निर्णय ले लिया, तो इस दुनिया में सबसे श्रेष्ठ जम्बू द्वीप को चुना, जिसमें भरत खण्ड के बुन्देलखण्ड में पन्ना जी को सबसे उत्तम चुना। लैल के इस तीसरे तकरार में यहीं पर, इसी स्थान पर ही ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि का इकट्ठा होकर मेला होना है, जहां से सारे ब्रह्माण्ड की मुक्ति का अंकुर उदय होगा।

जो प्रदक्षिना निज धाम की, सातों सरूप श्री राज।

सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज।।

बी० सा० १७/६६

ब्रज रास जागनी लीला और नवतनपुरी भी हैं परना माहें।।

अब आप ही बताइए कि इतने महान, पवित्र और पूज्य धाम को मन्दिर कैसे कहा जाय? इस स्थान पर पारब्रह्म के साक्षात् विराजमान होने की चौपाई यह है–

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान।

तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान।।

सनंध ३८/१

श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दर साथ जी! अब मैनें सब परदे उड़ा दिये और सत्य को जाहिर कर दिया। मैं श्री पन्ना जी में बैठकर तुमको सब पहचान कराता रहूंगा और हर प्रकार की बातें करता रहूंगा।

अब हम यह कैसे कह सकते हैं कि श्री प्राणनाथ जी चले गये। श्रावण की तीज–चौथ वाले दिन सफेद श्रृंगार करना और आरती में घण्टा–घड़ियाल न बजाना, यह सब वाणी मंथन न करने के ही कारण ही है। श्री प्राणनाथ जी पन्ना जी में आज भी साक्षात् विराजमान हैं और वे आज भी साक्षात् दर्शन देकर बातें करते हैं।

Nijanand App

सुन्दर साथ जी! श्री पन्ना जी को तो धाम कहना भी एक हल्का सा ही शब्द है। उसको तो इस फर्श पर परमधाम ही कहना चाहिए।

महामंगल पूरी सूरत के धामवासी धर्माचार्य श्री मंगल दास जी महाराज ने कहा था कि परमधाम में तो केवल परमधाम के ही सुख हैं, किन्तु श्री पद्मावतीपुरी धाम में तो ब्रज, रास, श्री देवचन्द्र जी महाराज और जागनी के सभी सुख तथा परमधाम के भी सभी सुख मिलते हैं और यह परमधाम से भी बड़ा स्थान है, इसलिए हमेशा श्री पन्ना जी के लिए 'मुक्ति धाम' या 'दरगाहे मुकद्दस' ही कहना उचित है।

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।।

क० हि० २३/१

ऐसे मुक्तिधाम को श्री प्राणनाथ जी का मन्दिर कह कर इस स्थान की शोभा को कम करना है। बाकी दुनिया में जहां जहां भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप साहब को पधरवा कर रखा गया है, वे श्री प्राणनाथ जी के मन्दिर हैं। जैसे कि श्री प्राणनाथ जी ने कहा भी है–

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस।

किरंतन ५५/१२

थाने का अर्थ मन्दिर ही होता है न कि धाम। ३६००० सखियों का जहां मेला होना है, वही हमारा धाम है और अन्य सभी स्थान मन्दिर हैं। अन्य कोई भी स्थान धाम हो ही नहीं सकता। अतः हमने आज दिन तक जो भूल की, उसे सुधारें।

श्री पन्ना जी को धाम, 'दरगाहे मुकद्दस' और दूसरे स्थानों पर जो गलत नामों के बोर्ड लगे हैं, उन्हें हटाकर 'श्री प्राणनाथ जी मन्दिर' का बोर्ड लगाना चाहिए तथा श्री प्राणनाथ जी का सच्चा साथी बनकर उन्हें जाहिर करना चाहिए।

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिलपाक।।

ब० कया० १२/६

Nijanand App

हिन्दुओं की सभी पुरियों में से उत्तम नवतनपुरी अवश्य है क्योंकि वहां जागृत बुद्धि का ज्ञान उतरा है। उससे भी बुलंद ऊंचा स्थान श्री पन्ना जी का है। उससे ऊंचा कोई भी स्थान नहीं है।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात बतन।।
तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिन्दुस्तान।
जहां मेहेंदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।

सनंध १३/४, ५

सुन्दर साथ जी! एक बात अब तक मेरी समझ में नहीं आयी है, जो मैं आपसे समझना चाहता हूं। आज हिन्दुओं के हजारों मन्दिर हैं, जहां उनके भगवानों की मूर्तियां पधरायी गयी होती हैं। यदि हनुमान जी की मूर्ति होती है तो हनुमान जी का मन्दिर, राम की मूर्ति होने पर राम मन्दिर तथा शिव की मूर्ति होने पर शिव मन्दिर का बोर्ड होता है। दुनिया वाले तो अपने भगवान को सत्य रूप से जाहिर करते हैं, किन्तु एक हम भी हैं कि अपनी आत्मा के धनी श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप सिंहासन पर पधराकर बाहर किसी और के नाम का बोर्ड लगा देते हैं। क्या इसी को पतिव्रता साधन कहते हैं? गोलोकी श्रीकृष्ण का बोर्ड लगा कर जैसे पतिव्रता से कोई वेश्या बन जाती है, तो उसके मान अपमान का कोई भी ख्याल नहीं रहता है। वैसे ही हम भी मन्दिर में श्री प्राणनाथ जी को पधराकर बाहर श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर का बोर्ड लगाते हैं। श्री कृष्ण प्रणामी का अर्थ तो श्री कृष्ण को प्रणाम करने वाला होता है, जिसका मतलब तो यही होता है कि अन्दर सिंहासन पर श्री कृष्ण प्रणामी बैठे हैं। अतः हमें यह मनगढ़न्त अर्थ वाला श्री कृष्ण प्रणामी का बोर्ड हटाकर 'श्री प्राणनाथ जी मन्दिर' का बोर्ड लगाने में अपनी शान समझनी चाहिए, न कि अपने अहंकार में अन्धे होकर विरोध ा करना चाहिए। सुन्दर साथ जी! यह जागनी का ब्रह्माण्ड है, भूलने का नहीं। अतः जागो और जगाओ।

श्री पन्ना जी के मुक्ति धाम होने का सबसे बड़ा प्रमाण महाराजा छत्रसाल जी का ही है, जो श्री प्राणनाथ जी को सुखपाल में बिठाकर अपने चौपड़े की हवेली में ले गये और मंझली रानी ने साड़ी का पावड़ा और महाराजा छत्रसाल जी ने अपनी पाग का पावड़ा बिछाया। इस बात पर चाचा बलदीवान और खानदान

Nijanand App

के लोगों ने आपत्ति प्रगट की, तो महाराजा छत्रसाल जी ने सबके मन की दुविधाओं को मिटाने के लिये बताया कि मेरे घर जिनके चरणों में साड़ी और पगड़ी का पांवड़ा बिछाया गया है, वह न तो मेरे गुरू हैं और न मैं इनका चेला हूं, नाहीं ये कोई भगवान हैं और ना ही मैं इनका कोई भक्त हूं। मैंने तो कभी इनका सुमिरन भी नहीं किया। ये मेरी आत्मा के धनी साक्षात् पूर्ण ब्रह्म हैं और मैं इनकी अंगना हूं।

पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे आनन्द अखण्ड अपार।
शिव सनकादि आदि के इच्छित शेष न पाए पार।।

निराकार से आगे योगमाया के अखण्ड वृन्दावन, उससे आगे अक्षर ब्रह्म और उनसे भी परे पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द हैं। जो सदा अखण्ड आनन्द के देने वाले हैं। जब से सृष्टि बनी है, इन्हीं को पाने के लिये ही शिव, सनकादिक इत्यादि प्रयास करते हैं।

अगम जानि के निगम कहाये, खोजि खोजि पचि हारे।
जानि के मूल धनी अंगना अपनी, सो घर आये हमारे।।

इन्हीं पूर्ण ब्रह्म को वेदों ने अगम कहकर पुकारा है कि हमें उनकी गम नहीं है और इनको खोज–खोजकर ब्रह्मा आदि सभी देव थक गये। तो साथियो! आप तो ये कहोगे कि जब मैंने कभी इन्हें पुकारा नहीं तो ये घर कैसे आ गये?

पारब्रह्म कभी भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं हो सकते, (इसलिये मेरी आत्मा जो माया में भटकी पड़ी थी, उसे जगाने के लिए स्वतः पधारे हैं और

श्री ठकुराणी जी सखियन सुधवर, लीन्हें संग पधारे।
त्रैगुण फांस के फंद पड़े थे, सो फंदा निरवारे।।

वे प्राणनाथ जी श्री श्यामा जी को साथ में लेकर अपने परमधाम की आत्माओं को ढूंढ़ने के लिये सभी स्थानों पर आ रहे हैं। धनी ने अपनी आत्माओं को त्रैगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के कर्मकाण्डों और लोक लाज मर्यादा से छुड़ाया जिसको आज तक कोई भी छोड़ नहीं सका था। त्रैगुण किसी को भव से तो क्या पार करते, वे स्वयं अपने बनाये हुए फांस में पड़े हैं। इस फांस से छुड़ाने की शक्ति शास्त्रों के अनुसार पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द के अतिरिक्त और किसी के भी पास नहीं है। इनके ज्ञान से ही मैंने लोक लाज, मर्यादा को छोड़कर अंगना भाव से

Nijanand App

अपनी आत्मा के धनी अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म के चरणों में पांवड़े बिछाये हैं। इसलिये–

बलि-बलि जाऊं मैं अपने पिया पर, शोभा बरनी न जाए।
सिंहासन आसन पधराये, छत्रसाल गुण गाये।।

इसलिये अपने धाम के धनी प्राणों के नाथ अक्षरातीत के चरणों पर मेरी आतम बलिहारी (न्योछावर) जाती है। उस प्राणनाथ जी की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं छत्रसाल सिंहासन पर बैठाकर उनकी महिमा का वर्णन कर रहा हूं। ऐसा बोध देने पर सारी प्रजा के लोग शान्त हो गये और छत्रसाल जी को धन्य धन्य कहने लगे।

और फिर आरती पूजन के समय छत्रसाल जी अपने मुखारविन्द से कहते हैं–

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए।
कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो, हम चीन्हा तुम्हें बनाए।।
श्री ठकुराणी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर।
धनी बिना तुम्हें और देखे, सो नहीं मिसल मातबर।।

बी० सा० ६०/५७, ५८

एही अक्षरातीत है, एही हैं धनी धाम।
एही महम्मद मेंहदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम।।

बी० सा० ६८/७२

आज दिन तक श्री लाल दास जी, श्री केशव दास जी आदि बड़े–बड़े मोमिन एक ही स्वरूप की आरती उतारते थे, युगल स्वरूप की नहीं। छत्रसाल जी ने परमधाम के युगल स्वरूप के रूप में युगल स्वरूप को पधराकर आरती उतारी और कहा कि हे धनी! आप साक्षात् अक्षरातीत हो। मैंने आपको इस तन में पहचान लिया है।

हे धनी! आप श्यामा जी और सब सुन्दरसाथ को लेकर मेरे घर पधारे हैं। आपको धनी के बिना यदि कोई प्रभु या महाप्रभु कह कर पुकारता है तो वह ब्रह्म सृष्टि ही नहीं है।

आप ही साक्षात् अक्षरातीत धाम के धनी हैं। आप ही आखिरी मुहम्मद इमाम

Nijanand App

मेहंदी ईसा रूह अल्लाह अर्थात् श्री राज श्यामा जी हैं और सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं।

तो सुन्दर साथ जी! ऐसे साक्षात् अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की जहां साक्षात् बैठक हो, उस स्थान को मन्दिर कहना कितना अनुचित है? वह तो धाम से भी परे निजघर परमधाम ही है। इसलिये हमेशा पन्ना जी को 'मुक्ति धाम – दरगाहे मुकद्दस' ही कहना चाहिए।

यह तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

अठारहवीं तरंग

'सतगुरू की पहचान'

इस संसार में शास्त्रों के अनुसार पहला गुरू माता–पिता को ही कहा गया है। दूसरा गुरू उसे कहते हैं, जो धर्म ग्रन्थों का ज्ञान देकर भक्ति का मार्ग दिखाते हैं। भक्ति शरीर से जीव के कल्याण के लिये होती है। इन सबसे परे पारब्रह्म के आनन्द स्वरूप को ही शास्त्रों में सतगुरू कहा गया है।

गुरू गीता के कथन से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि (सतगुरू ब्रह्मानन्द हैं) श्यामा महारानी ही सतगुरू हैं या जिस तन में वे विराजमान हों, उनके बिना और कोई दूसरा सतगुरू नहीं हो सकता। इसलिये स्वामी जी ने कहा है कि इस कलियुग में कहीं एक के ही तन में श्यामा जी की बैठक होती है।

सतगुर न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुली में काँही।

किरंतन ५/६

सेवा–पूजा में तो यह स्पष्ट कर दिया है कि–

गुरू कंचन गुरू पारस गुरू चंदन परमान।

तुम सतगुरू दीपक भए, कियो जो आप समान।।

इस दुनिया में गुरू कंचन अर्थात् सोने के समान होते हैं जिनमें किसी भी प्रकार के अवगुण नहीं होते है। वस्तुतः सोना सुन्दर तो है, किन्तु वह किसी और को सोना नहीं बना सकता। उससे भी उत्तम गुरू पारस के समान होते हैं। यदि निकृष्ट से निकृष्ट जीव भी उनके चरणों से लिपटा रहे, तो जिस प्रकार पारस पत्थर खराब से खराब लोहे को भी अपने स्पर्श से सोना बना देता है, किन्तु

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्,

द्वन्दातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्षणम्।

एको नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिरूपं,

भावातीतं त्रिगुण रहितं सदगुरूं तं नमामि।।

स्कन्द पुराण गुरू गीता

Nijanand App

उसको भी पारस नहीं बना सकता। उसी प्रकार वे गुरू भी अवगुण निकाल कर ज्ञान से तो भरपूर कर देते हैं, परन्तु अपने समान गुरू वह किसी को भी नहीं बनाते हैं। कई गुरू चंदन के समान निर्मल, सुगन्धित ज्ञान से भरपूर होते हैं, परन्तु उनकी सोहोबत में यदि कोई जाता है तो चंदन की भांति अपने ज्ञान से सुगन्धित कर देते हैं, परन्तु बबूल जैसे वृक्ष के कांटों को नहीं बदल सकते, अर्थात् ज्ञानी तो बना देते हैं, परन्तु काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या इत्यादि को नहीं निकाल सकते। लेकिन जो सतगुरू होते हैं, उनके हृदय में पूर्ण ब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी विराजमान होते हैं और उनके अन्दर ही हरेक के अवगुणों को निकाल कर अपने परमधाम की शक्ति से आत्म तत्व का ज्ञान भर कर अपने समान बनाने की समर्थता होती है। क्योंकि आत्मा एव परमात्मा। आत्मा गुण अवगुणों से रहित होती है। सतगुरू के अन्दर ही श्री राज जी महाराज की शक्ति होती है।

इसलिए आज इस कलियुग में हर मनुष्य अपने गुरू को सतगुरू की उपमा देते हैं, क्योंकि वे यही समझते हैं कि सतगुरू का अर्थ सच्चा गुरू होता है। हर इंसान अपने भगवान को सच्चिदानन्द कहता है। सत्य के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सत्य बनता नहीं है, स्वयं होता है। झूठ हमेशा बनने का प्रयास करता है। जो लोग केवल थोड़ा सा संस्कृत भाषा का ज्ञान लेकर शास्त्री बन जाते हैं, परन्तु ब्रह्म ज्ञान तो होता नहीं है, इसलिये वे सुन्दर सुन्दर कपड़े रंग कर पहनते हैं और अपने सुन्दर शरीर को भी कुरूप बनाने के वास्ते दाढ़ी, मूंछ और बाल रखते हैं, क्योंकि इस भेष को देखकर दुनिया नमन करती है तथा चरणों में भेंट चढ़ाती है। इससे भी आगे पक्की मोहर वाला गुरू बनने के लिए अपने साथ स्वयं जगद्गुरू का बोर्ड भी लगा लेते हैं, किन्तु वे इतना भी नहीं जानते कि जगद्गुरू का अर्थ मिथ्या जगत का गुरू होता है। झूठे जगत का गुरू झूठा ही होता है।

ऐसे गुरू किसी को भवसागर से क्या पार करेंगे? आइए, उस सतगुरू स्वरूप श्री श्यामा महारानी श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान से ही अपने कल्याण के लिये संशय मिटाकर, सांसारिक गुरूओं को त्यागकर सतगुरू के चरणों का सहारा लें। झूठे भेष ने ही वैराग्य रूपी सच्चे मार्ग को बिगाड़ दिया है।

'भेखें बिगारियो वैराग'।। मनुस्मृति को धर्मशास्त्र माना जाता है जिसमें सन्यासी के लिये सिर के बाल, दाढ़ी, मूंछ आदि सब मुड़ाने का नियम है।

Nijanand App

सन्यासी को अपने सिर के केश, नाखून, दाढ़ी और मूंछ का छेदन (मुंडन) करवाना चाहिए। मनुस्मृति ६/५२

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो रे साधो, खोज बड़ी संसार।

खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।।

किरंतन २६/१

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सन्त जनों! इस दुनिया में अनेकों ने पारब्रह्म को पाने के लिये सतगुरू की बड़ी खोज की। आप भी उस सतगुरू की खोज कीजिए। खोजते–खोजते जब सतगुरू से मिलन हो जायेगा, तब पारब्रह्म भी अवश्य मिल जायेंगे।

सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग।

डिंभकाइए दुनिया ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।।

किरंतन २६/३

इस कलियुग में सतगुरू की पहचान कैसे करें? अयोग्य लोगों ने तरह तरह की भेष भूषा धारण कर वैराग्य का रूप ही बिगाड़ डाला है। इन गुरूओं के आडम्बरों ने सारी दुनिया को ही अज्ञान में डूबा रखा है। ये ऊपर से तो ज्ञानी, विरक्त और शान्ति के पुजारी दिखायी पड़ते हैं, किन्तु इनके अन्दर सांसारिक चाहनाओं की आग जला करती है।

बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।

सो डूबें आप सिष्यन सहीत, जाए पड़े कूप अंधेरी।।

किरंतन २६/६

जो स्वयं को सतगुरू कहलवाते हैं, तथा अपने शिष्यों से सांसारिक सुखों की आशा रखते हैं, ऐसे गुरू अपने शिष्यों सहित दुःखरूपी अंधेरे कुएं अर्थात् आवागमन के चक्र में ही पड़े रहते हैं।

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।

हद बेहद सबे समझावे, भाने मन को भरम।।

किरंतन ४/१२

क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्।

मनुस्मृति ६/५२

Nijanand App

हे सन्तजनों! सतगुरू केवल वहीं है, जो उस अगम, अगोचर पारब्रह्म की पहचान करावे तथा कालमाया एवं इससे परे बेहद (योगमाया) और उससे पार अक्षर अक्षरातीत की सारी हकीकत समझाकर मन के सारे संशयों को दूर कर दें।

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।

किरंतन १४/११

वही सतगुरू है, जो उस पारब्रह्म की पहचान करा दे तथा माया और पारब्रह्म को जुदा जुदा करके अपने मूल निजघर परमधाम की पहचान करावे। जिसकी कृपा से आखिरत में आने वाले पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप की पहचान हो जाय, जिससे उनकी सेवा करके आत्मा के सुख लेने का अवसर न गंवाना पड़े।

सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पारब्रह्म सो, तब बिंद अनेक उड़ावे।।

किरंतन २/६

जब सच्चे सतगुरू से मिलन हो जाता है तो माया और ब्रह्म की स्पष्ट पहचान हो जाती है। वे पारब्रह्म की सारी हकीकत स्पष्ट रूप से जाहिर कर देते हैं और तब ऐसे–ऐसे अनेकों ब्रह्माण्डों से भी कोई मोह का सम्बन्ध नहीं रहता है।

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुर सों करावे पेहेचान।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे।।

किरंतन ३/३

मुख से निकले हुए शब्दों से ही अन्दर की स्पष्ट हकीकत मालूम होती है। सतगुरू के शब्दों से ही उनकी पहचान होती है। यथार्थ में वही सतगुरू है जो उस पारब्रह्म की पहचान कराये, जिसको आज तक किसी ने भी जाना नहीं है। जब तक ऐसे पारब्रह्म की पहचान नहीं होती, तब तक दिल के अन्दर उसको जानने की तड़प (चाहना) ठण्डी नहीं होती।

सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब सयानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई।।

Nijanand App

किरंतन ३/४

सतगुरू ही सभी शास्त्रों का एकीकरण करके एक अर्थ से उस पारब्रह्म की पहचान कराते हैं, सभी ज्ञानी महापुरूषों का मत एक ही होता है किन्तु अज्ञानी लोग उनके कथनों और ग्रन्थों में भेद समझते हैं।

सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैंडों में पाइए नाहीं।

सतगुर न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुली में काँही।।

किरंतन ५/६

शास्त्रों–पुराणों के ज्ञान में, तरह तरह के भेषों और ग्रन्थों में खोजने पर भी पारब्रह्म की पहचान नहीं हो सकती। इसकी पहचान कराने वाले सतगुरू इन सभी प्रपञ्चों (भेषों) से अलग रहते हैं। वे इस कलियुग में एक समय में केवल एक ही तन में होंगे।

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।

माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।।

किरंतन २७/२२

सतगुरू के बिना दूध और पानी अर्थात ब्रह्म और माया को जुदा–जुदा करके इनकी पहचान कोई और दूसरा नहीं बता सकता। सतगुरू ही उनकी अलग अलग पहचान बताकर आत्मा के अखण्ड अनादि मूलघर की हकीकत बताते हैं।

कौन मैं कहां को कहां थे बिछुरयो, कौन भोम ए छल।

गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल।।

किरंतन २०/४

गुरू बन कर ब्रह्म ज्ञान देने वाले तथा शिष्य बन कर उसे ग्रहण करने वालों के तो अनेकों पंथ हैं किन्तु किसी के भी पास इन प्रश्नों का उत्तर देने की बुद्धि नहीं है कि मैं कौन हूं? इस दुनिया को छोड़ने के बाद कहाँ जाऊँगा? मैं कहां से आया हूं? तथा छल वाली इस दुनिया अर्थात माया की हकीकत क्या है?

या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर।

तो लों मकसूद क्यों होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर।।

Nijanand App

चाहे कोई घर में रहे या बन में जाकर तपस्या करे, किन्तु जब तक उसे सतगुरू नहीं मिलते हैं, तब तक उसे पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती है। जब तक अपने अखंड निजघर का ज्ञान नहीं होता, तब तक दिल में कभी भी शान्ति नहीं हो सकती है।

सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप।
पार पुरूख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप।।

किरंतन २०/६

श्री महामति जी कहते हैं कि सतगुरू वही है जो इस मोह रूपी ब्रह्माण्ड, माया, अपनी आत्मा तथा उसके मूल घर परमधाम और पार पुरूष अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की पहचान करा सके। ऐसे सतगुरू की ही खोज कर उनके चरणों में समर्पित होना चाहिए।

यामें सतगुर मिले तो संसे भाने, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सब्द को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।।

किरंतन २२/७

माया के फंदे वाली इस दुनिया में यदि सतगुरू मिल जाते हैं तो वे सभी संशयों को समाप्त कर देते हैं तथा हद–बेहद से भी परे परमधाम की राह दिखाते हैं। तब उनकी कृपा से सभी धर्मग्रन्थों की हकीकत मालूम हो जाती है तथा इस मायावी संसार की भी वास्तविकता की जानकारी हो जाती है।

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटी से उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।।

किरंतन ४/१३

श्री महामति जी कहते हैं कि जो उस अलख (जिसको आज दिन तक जाना नहीं है) पारब्रह्म की पहचान करावे तथा भ्रांति और संशय से भरी हुई इस माया से हटा कर प्रियतम पारब्रह्म के प्रेम में साक्षात् उनको सामने कर देवें, उन्हें ही अपना सतगुरू मानना चाहिए।

जो मांहे निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सो पेहेचान।
महामत कहें संगत कर वाकी, कर वाही सो गोष्ट ग्यान।।

Nijanand App

किरंतन २६/७

जो अंदर दिल से निर्मल हो, किन्तु बाहर उसकी निर्मलता का कोई चिन्ह नहीं हो अर्थात् उसके पास वैराग्य आदि के दिखावे के आडम्बर की भेषभूषा न हो। उसी को ही पारब्रह्म की पहचान होती है। श्री महामति जी कहते हैं कि यही सतगुरू की पहचान है और उन्हें पहचान कर उनकी संगति करके ब्रह्मज्ञान की गुझ बातें करनी चाहिए।

सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर।

उड़ाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर।।

किरंतन ३८/१८

जब सच्चे सतगुरू मिल जाय तो कभी भी उनके चरणों से जुदा नहीं होना चाहिए। क्योंकि उन्होंने हमारे अन्दर के सभी भ्रम एंव संशयों को हटा कर निजघर का ज्ञान दिया है।

सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई।

महामत कहे मैं या विध बिगड़या, तुम जिन बिगड़ो भाई।।

किरंतन १८/७

श्री महामति जी (श्री इन्द्रावती जी) कहते हैं कि सतगुरू मिलने से मैने उस अद्वैत परमधाम को पा लिया तथा पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द का भी दर्शन कर लिया। हे दुनिया के लोगों! आप लोगों की राह के विपरीत चलकर जिस प्रकार मैं बिगड़ चुका हूं, उस रास्ते पर चलकर आप भी मत बिगड़ जाना (माया को पीठ मत दे देना)।

महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन।

देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन।।

किरंतन २१/१०

श्री महामति जी कहते हैं कि मैंने ऐसे सतगुरू को पा लिया है जो इन सभी संशयों को दूर कर एक पूर्ण सत्य की राह दिखायेंगे तथा परमधाम के सुख भी देंगे। ऐसा आज तक किसी ने भी नहीं किया है।

वास्तविकता यह है कि पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द मूल स्वरूप श्री राज जी ही सबके सतगुरू हैं। वे ही तारतम ज्ञान लेकर अवतरित हुए।

Nijanand App

तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्व नें जांण।

किरंतन १२४/५

तथा श्री कुलजम स्वरूप का ज्ञान भी उन्होंने स्वयं अपने मुखारविन्द से कहा। जिस जिस तन में उनके आवेश स्वरूप की बैठक होती है, इस दुनिया में उन्हीं तनों को सतगुरू कहलाने की शोभा मिलती है। वस्तुतः हमारे मूल सतगुरू श्री राज श्यामा जी हैं – इसलिए श्री इन्द्रावती जी कहती हैं –

सतगुर मेरे स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याहीं सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं।।

किरंतन ५२/१

मूल स्वरूप श्री राज जी ही मेरे सतगुरू हैं। इन्हीं से मेरा परमधाम का अखंड अनादि मूल सम्बन्ध (निसबत) है। इसलिये मैं इनके चरणों में रहकर अपनी आतम का सुख लेती रहती हूं।

सुन्दर साथ जी! मेरे जैसा एक कुबुद्धि, मतहीन, मतिमन्द, पामर, जीव की क्या औकात हो सकती है कि वह ऐसे ग्रन्थ को लिखने के लिये कलम उठाने का साहस करता, परन्तु यह तो मेरे सतगुरू पूर्णब्रह्म, सच्चिदानन्द, बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी, जो अखंड, अनादि मेरे सच्चे भर्तार हैं, उन्हीं की कृपा, बल, बुद्धि और सब शक्ति से ही ये सब सम्भव हो सका है। सुन्दर साथ, जो वाणी मंथन नहीं कर पाते, वे गुमराह करने वालों के चंगुल में फंस कर मेरे सच्चे भर्तार श्री प्राणनाथ जी के चरणों से भटक न जाएं, इसलिये उनकी कृपा हुई है। इसको लिखने के लिये मेरे झूठे अंगों से यदि कोई भूल या लिखने में अनुचित लिखा गया हो, तो आप अपने चरणों की धूलि समझ कर अवश्य क्षमा कर देंगे।

आपकी चरण – रज

जगदीश चन्द्र

संरक्षक – **श्री निजानन्द आश्रम**

रतनपुरी, मुजफ्फरनगर

एवम्

बड़ौदा (गुजरात)

Nijanand App

अब चली सच की हवा , झूठ से पर्दा उठा।
ओ मेरे प्यारे पिया, तुम दिल में आए।।
कृष्ण परनामी धर्म, ये हमारा है नहीं।
धर्म सब तो देह से हैं, देह से नाता नहीं।।
जाना वाणी से खसम, नाता तुमसे है पिया।
सम्प्रदाय अपनी निजानन्द, तुम साथ लाये।।
अब चली ..... ।

कृष्ण परनामी थे यहीं, भूल थी अपनी बड़ी।
जाना वाणी से पिया, निजानन्दी हैं हम हीं।।
झूठा नाता न रहा, सत्य से नाता जुड़ा।
ओ मेरे प्यारे पिया, तुम दिल में आये।।
अब चली ..... ।

निसबत हमारी तो राज श्यामा जी से है।
इसमें तो शक न कोई, रूहों ने जाना यह है।।
अंग श्यामा जी के हम, वो धनी के आनन्द अंग।
पाके हम उनका आनन्द, निजानन्दी कहलाये।।
अब चली ..... ।

परनामी तो कृष्ण के, रूहें तो धनी की हैं।
जाना जिसने भेद यह, वे तो अपने पिउ की हैं।।
कहनी में कहता है जो, रहनी में करता न जो।
सोच ले अपना गुनाह, वो पिया छल न पायें।।
अब चली ..... ।

श्री निजानन्द स्वामी की जय।
श्री प्राणनाथ प्यारे की जय
श्री निजानन्द सम्प्रदाय की जय।
सतगुरू धाम धनी अक्षरातीत की जय

Nijanand App